राजस्थान पत्रिका प्रकाशन 2008 October - II

बालहंस

Every fortnight

मूल्य : छह रुपए

लल्लू और पल्लू

पल्लू एक नाविक था जो लोगों को नाव से नदी पार कराता था।

पल्लू का एक छोटा भाई था– लल्लू। आलसी लल्लू दिनभर घर पर सोया रहता।

'लल्लू यूं सोने में समय बर्बाद मत कर। बाहर जाकर कुछ काम–धाम कर।' पल्लू लल्लू से कहता, पर लल्लू पर कोई असर नहीं होता।

एक दिन पल्लू को बुखार हो गया। 'लल्लू आज तुम मेरी नाव चलाना,' पल्लू ने अपने भाई से कहा। लल्लू ने बुझे मन से हां कहा।

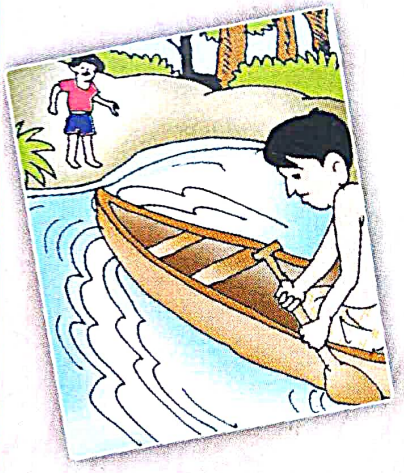

किनारे पर खड़े एक बच्चे ने लल्लू से कहा, 'अरे नाव इधर तो लाना जरा....।' लल्लू नाव खेने लगा।

नाव बीच नदी में पहुंचती, तब तक अपनी आदत से मजबूर लल्लू नाव में ही सो गया।

नाव नदी के पानी के साथ बहती हुई समुद्र में चली गई। लल्लू की नींद अचानक खुली तो भय के मारे वह कांपने लगा।

बड़ी मुश्किलों से नाव को उसने संभाला और किनारे तक आया। उसे समझ आ गया कि आलसीपन कभी उसके लिए बड़ा खतरा बन सकता है।

बालहंस
अक्टूबर- II, 2008

वर्ष- 23 अंक- 7
आश्विन शुक्ल-कार्तिक कृष्ण
विक्रम संवत् 2065

अक्टूबर (द्वितीय) 2008, जयपुर

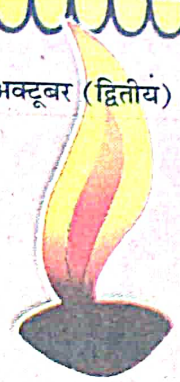

प्रतियोगिताएं

ज्ञान प्रतियोगिता- 58
प्रतियोगिता परिणाम- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

कहानियां

एक दिवाली ऐसी- 5
लंच से डिनर तक- 6
झोंपड़ी में दिवाली- 7
पानी पहुंचा पानन में- 8
नकलची कालू- 9
दो चमकते तारे- 10-11
मदन का भाई नन्दू- 12-13
कहानियां रॉबिनहुड की- 28
रामायण कथा- 40
महाभारत कथा- 41
अकबर-बीरबल- 42
दिवाली की धूम- 48-49
जातक कथा- 61

विविध

बिना बम की हो दिवाली- 14
भैया दूज- 15
लक्ष्मी तेरे कितने नाम- 16-17
दीप जले- 18-19
गुदगुदी- 20-21
सामान्य ज्ञान- 22-23
पटाखे चलाएं संभलकर- 26
मेरा बचपन (रहमान)- 27
वर्ग पहेली- 29
सैर सपाटा (फिनलैंड)- 30
तथ्य निराले- 32
क्रेजी किया रे- 33
कहने आई दिवाली- 34-35
आर्ट एंड क्राफ्ट- 36
कमाल है- 37
खेलो खेल पुराने- 38
नॉलेज बैंक- 39
ये जमाना वो जमाना- 43
डॉट टू डॉट- 44
मेज क्रेज- 45
अंतर बताओ- 46
किड्स क्लब- 54-55
वाइल्ड लाइफ- 56-57
बालमंच- 62-63

चित्रकथाएं

लल्लू और पल्लू- 2
जादुई शरबत- 50 से 53
वीर शिवाजी- 64-65
धन्यवाद- 67

संपादक
गुलाब कोठारी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

चित्रांकन
अतीन्द्र मुखर्जी, प्रतिमा सिंह

सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
ई-5, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान)
पिन-302 053
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail :
balhans123@gmail.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक 150/-रुपए
अर्द्धवार्षिक 75/-रुपए

संपादकीय

दोस्तो,

उम्मीद की नई लौ जगाने आई दिवाली
निराशा के दीप में आशा की किरण दिवाली
दुश्मनों से गले मिलने का पर्व है दिवाली
पटाखों की शरारत-पकवानों की मिठास दिवाली

दिवाली का त्योहार अपनी रोशनी लेकर धूमधड़ाके से आ गया है। पटाखों की धमक, पकवानों की मिठास और स्कूल की छुट्टियां.....। कुल मिलाकर तुम्हारे लिए आनंद का माहौल है। दिवाली तुम्हारी खुशियों को दुगुना करने के साथ एक प्यारा सा संदेश लेकर भी आती है। यह संदेश दीपक के प्रकाश के साथ जुड़ा है। अंधकार में प्रकाश यानी आशा और उमंग....। हमें दीप की यह सीख जीवन में उतारनी चाहिए। दीए की एक छोटी सी बाती जलती है तो कितना प्रकाश फैला देती है। और हां, दिवाली की मौजमस्ती में पटाखे जरा संभलकर छुड़ाना। बम से तो दूर ही रहना। तुम्हें दिवाली की ढेर शुभकामनाएं। हैप्पी दिवाली।

तुम्हारा बालहंस

रोशनी बिखरी

पटाखे-फूलझड़ी-अनार-धमाके
संभलकर फोड़ो गलियां हैं संकरी
दिवाली पर इनकी पौ-बारह
रस्सी बम कर दे सबको चकरी।
सोनू-मोनू-रिंकी-रानी
आज किसी ने किसी की न मानी
कोई लिए अनार, कोई और पटाखा
बस करते धमाल-मनमानी।
दीये भी हंसते हैं सजधज कर
ये दिवाली की रात दीवानी।

-कमल सिंह चौहान

Wishing you a happy and safe Diwali !

एक दिवाली ऐसी...

कहानी

विनय चाचाजी के घर से लौट रहा था। कल दिवाली है, इस बात से उसके मन में रह-रहकर खुशी की लहर दौड़ पड़ती थी। दीए, बल्ब, बत्तियां, कंदीलें और ढेर सारी मिठाइयां! सचमुच बड़ा मजा आएगा।

विनय ने सोचा, इस बार पटाखे खूब चलाऊंगा। गुल्लक में तो काफी पैसे जमा हो गए होंगे। रास्ते में उसने देखा, कई जगह दिवाली की तैयारियां हो रही थीं। रंगाई-पुताई से लेकर साज-सजावट तक के सभी काम लोग बड़ी लगन और उत्साह से कर रहे थे। यही सब देखते-सोचते विनय ने अपने घर वाली गली में प्रवेश किया।

अचानक दुर्गंध का भभका उसकी नाक में घुसा। उसने झट नाक पर रुमाल रख लिया। देखा कि गली के एक ओर कचरे का ढेर लगा है। मुहल्ले के आवारा कुत्ते लोट-लोटकर कूढ़े को चारों ओर फैला रहे हैं।

विनय को एकदम से मास्टरजी की बात याद आ गई। वे कहते थे, 'दीवाली के अवसर पर सिर्फ ज्योति का ही नहीं, बल्कि सफाई का भी महत्त्व है।'

विनय को अजीब लगा कि मोहल्ले के लोग कूड़े की सफाई क्यों नहीं करवा रहे। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर विनय ने देखा कि नाले का गंदा पानी सड़क के ऊपर से होकर बह रहा है। 'लोग इसी रास्ते से आते-जाते हैं। यहां की गंदगी घरों में पहुंचती है और रोगों का कारण बनती है। तो फिर दिवाली पर लोगों का ध्यान कम से कम इस गंदगी की ओर क्यों नहीं जाता है?' विनय ने मन ही मन कुछ निश्चय किया और घर चला आया। जल्दी-जल्दी खाना खाया और मित्रों के घर चल दिया। उसने मुहल्ले की गंदगी की बात सभी मित्रों को बताई। शाम को सभी ने एक सभा का आयोजन किया। तय किया गया कि इस बार सभी अपनी-अपनी बचत पटाखों और मिठाइयों पर खर्च न करके, सफाई के काम पर खर्च करेंगे।

दूसरे दिन सुबह ही वह और उसकी मित्र-मण्डली मुहल्ले की सफाई में जुट गए। उन्होंने अपने बचत के पैसों से हानिकारक कीड़ों को मारने की महंगी दवाईयां मंगाईं और उसका सब तरफ छिड़काव किया। साथ ही, उन्होंने अपने पैसों से पन्द्रह कूड़ेदान खरीदे और उन्हें जगह-जगह रख दिया। शाम होते-होते सफाई अभियान पूरा हो गया।

मुहल्ले को साफ-सुथरा देख हर कोई हैरान, लेकिन खुश था। सब जगह किशोर-मण्डली के कारनामों की तारीफ हो रही थी। रात घिरने लगी तो दीपों की कतारें सजने लगीं। पटाखों की आवाजें गूंजने लगीं। मगर विनय और उसकी मित्र-मण्डली अपने सारे पैसे सफाई कार्य पर खर्च करने के कारण पटाखे नहीं खरीद पाए। फिर भी वे खुश थे। उन्हें संतोष था कि उन्होंने अपने पैसों को अधिक उपयोगी काम में लगाया।

सभी दोस्त आपस में गप्प लगा रहे थे। तभी उन्होंने देखा, कई लोग उन्हीं की ओर आ रहे हैं। एक बार तो वे सहम गए। मगर जब उनके हाथों में मिठाई के डिब्बे देखे तो उनकी घबराहट दूर हो गई। उनमें से एक वृद्ध सज्जन ने, जो सबसे आगे थे, कहा, 'बच्चो! तुम लोगों ने इस बार दिवाली पर एक नई जगमगाहट पैदा की है। हमें मालूम है कि इस सफाई अभियान में तुम लोगों ने अपने सारे पैसे खर्च कर दिए हैं। चलो, हम सब मिलकर मिठाई खाते हैं। हमारी तरफ से ये मिठाई के डिब्बे तुम लोगों को सप्रेम भेंट।' अपने अच्छे काम की प्रशंसा सुनकर बच्चे खुशी से झूम उठे।

-शिखर चन्द

कहानी

लंच से डिनर तक

राणा राम रमैया का बेटा कृष्ण कन्हैया था। दिवाली वाले दिन दोपहर को उनके घर की घंटी बज उठी। रमैया साहब की टांगों में दर्द था। बड़ी मुश्किल से जाकर दरवाजा खोला। सामने तीन हट्टे-कट्टे मेहमान खड़े थे। मेहमान जरूरी काम से गांव से आए थे। हालचाल पूछने के बाद रमैया जी ने कहा, 'मेरी तबीयत ठीक नहीं है। घरवाली किसी काम से बाहर गई है। रात तक आएगी। आप स्वयं चाय बना लें।'

मेहमानों ने अपने आप चाय-नाश्ता कर लिया। 'अब?' राणा रमैया ने सोचा। पड़ोसन रामप्यारी पिता और बेटे को खाना खिला गई थी। उससे और खाने के लिए कहा नहीं जा सकता था। कृष्ण कन्हैया घर से गायब था। वे लंगड़ाते-लंगड़ाते बाहर निकले। गली में बच्चे खेल रहे थे। उन्होंने पूछा, 'मेरा कृष्ण कन्हैया कहां है?'

लंबा पिंटू पतली आवाज में बोला, 'अंकल वह तो साथ की गली में कुत्तों के साथ खेल रहा है।' ठिगना चिंकू मोटी भारी आवाज में बोला, 'अंकल वह तो दूसरे लड़कों से, पटाखे छीन-छीनकर चला रहा है। कुत्ते डरते हैं। सब हंसते हैं।' हा...हा....हा....।

उसे फौरन बुलाओ। घर पर मेहमान आएं हैं। लड़के बुलाने पहुंचे तो कन्हैया ने कहा, 'मेहमान तो साल भर आते हैं। दिवाली साल में एक बार आती है।' आगे सुनो। इस गली के लड़के, इस वक्त मुझे बहुत से पटाखे, अनार फुलझड़ियां दे रहे हैं। बाद में, क्या पता, दें न दें। प्रिय फादर इतने पैसे दें, न दें। मैं तो आठ फुलझड़िया चला कर अभी आया।

लड़के चले गए। कन्हैया बहुत देर से घर पहुंचा। धूल से भरा हुआ। जैसे ही उसने मेहमानों के पैर छुए, उनके पैर मिट्टी से भर गए। झुकने पर उसकी जेब से माचिस और पटाखे फर्श पर जा गिरे। कन्हैया ने पटाखा चला दिया। ठाड...। जोर की आवाज हुई। पैर झाड़ते हुए, मेहमान चमकते हुए पीछे हटे।

पिताजी ने डांटा, 'मेहमान भूखे हैं। इन्हें किसी अच्छे होटल से खाना खिला लाओ। ये लो दो सौ रुपए...।'

'वाह दो सौ रुपए' कन्हैया मन ही मन कह उठा। जल्दी से स्नान किया। कंघी की। दिवाली वाली रंगीन शर्ट पहन कर हीरो बन गया।

चलिए अंकल। कहकर उन्हें के.ई.एम. रोड ले गया। बताया, यह बीकानेर का सबसे बड़ा बाजार है, लेकिन...लेकिन यहां पर कोई बड़ा होटल नजर नहीं आता। चलिए आगे। स्टेशन रोड पर जाकर एक बंद दुकान के सामने खड़ा हो गया। बोला, 'फादर ने अच्छे होटल में खिलाने को कहा था। लेकिन....लेकिन यह तो बंद दिखता है। चलिए आगे।'

मझले मेहमान ने पेट को दबाया- बड़ी भूख लगी है। किसी ढाबे पर ही खिला दो।

ऐसे तो फादर डाटेंगे। अच्छा होटल लेकिन...म्यूजियम चौराहे पर मिलेगा। चलिए आगे।

वहां पता लगा, एक थाली के सौ रुपए लगेंगे। कन्हैया ने गुस्सा दिखाया, 'लूट मची है क्या।' अंकल चलिए अगले होटल। सड़क के अगले सिरे पर एक ठीक-ठाक होटल में घुसे। सामने की दीवार पर एक लंबा शीशा झूल रहा था। कन्हैया उसके सामने जा खड़ा हुआ। मालिक को बुला कर डांटने लगा-'इतना गंदा शीशा रखते हो। पहले इसे साफ कराओ। शर्म आनी चाहिए।'

मालिक को भी गुस्सा आ गया। बोला, 'तुम यहां खाना खाने आए हो या इन्सपैक्शन करने। जाओ आगे।'

लड़ाई होने से, मेहमानों का मूड खराब हो गया। बोले, 'हम थक गए रे। भूख मारी गई। हम गांव जाएंगे।'

कन्हैया ने जेब में पड़े नोटों को छुआ और बोला, 'अच्छा आपकी मर्जी।' कन्हैया चलने लगा तो उन्होंने पचास रुपए निकाल कर उसे दिए। बोले-'ये तुम्हारी दीवाली के हैं। हम सब की तरफ से दीवाली की शुभकामनाएं।' वे चल दिए। कन्हैया वहीं खड़ा रह गया। सड़क पर रात की बत्तियां जलने लगीं थीं। मोटरें, टैक्सियां दौड़ रही थीं।

कन्हैया भी रास्ता बनाता हुआ भागने लगा। बड़ी मुश्किल से उसने मेहमानों को बस स्टेंड पर जा ढूंढ़ा। बोला-'अंकल एक शानदार चमचमाता हुआ होटल मिल गया है। लंच न सही, तो डिनर ही सही।'

हमें जल्दी गांव पहुंचना है। दिवाली जो है। जानता हूं। आधे पौने घंटे का ही तो रास्ता है। आप नहीं मानेंगे तो मैं भी खाना नहीं खाऊंगा। पहले यहीं मेरे साथ भी दिवाली मना लें। पास की दुकान से कन्हैया ने अनार, फुलझड़ियां लीं। निकट के मैदान में जाकर सबने चलाई। फिर वे सब जगमगाते होटल में जा घुसे।

-हरदर्शन सहगल

झोंपड़ी में दीवाली

कहानी

कार्तिक मास की अमावस्या। सारे भारत में दिवाली का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था। पूर्वी उत्तर-प्रदेश में गंगा के किनारे बसे एक छोटे से गांव के लोगों का उत्साह देखते बनता था।

सवेरे से ही लोग गंगास्नान और दीपदान की तैयारी कर रहे थे। किन्तु इसी गांव में धर्मा नाम का एक गरीब मजदूर अपने टूटे छाजन के नीचे अपनी फूटी किस्मत को कोसता हुआ एक कोने में बैठा था। त्योहार के कारण आज खेतों में काम नहीं हो रहा था। सभी मजदूरों की छुट्टी कर दी गई थी। धर्मा के घर में अन्न का एक दाना भी नहीं था। बाल-बच्चे भूख से बिलख रहे थे। तभी उसकी पत्नी हाथ में एक छोटी सी मतीरी लिये झोंपड़ी में आई। उसकी झोंपड़ी के छाजन पर फैली हुई बेल का यह पहला फल था।

मां के हाथ में मतीरी देख कर बच्चों के चेहरों पर चमक आ गई। वे दौड़ कर मां के इर्द-गिर्द जमा हो गए। पर धर्मा ने लपक कर पत्नी के हाथों से मतीरी छीन ली और उसे थैले में डालकर बाजार की ओर चल दिया। वह सोचने लगा, 'भूखे तो हम अक्सर ही रहते हैं। भूखे रहने की तो हमें आदत हो गई है। आज यदि मतीरी को बेच कर कुछ पैसे मिल जाएं तो मैं भी गंगा में दीपदान करूं।'

धर्मा बाजार पहुंचा। एक आदमी ने उस मतीरी को खरीदना चाहा। तभी बीच में एक सेठ आ धमके। उन्होंने तुरंत एक रुपया मोल लगा कर उस मतीरी को खरीदना चाहा। उस गरीब मजदूर के लिए तो एक रुपया बहुत बड़ी चीज थी। उसे तो दस पैसे की भी आशा नहीं थी। धीरे-धीरे उस सेठ और खरीदार में मतीरी खरीदने के लिए होड़ सी लग गई। पहले खरीदार ने दो रुपए कहा तो सेठ ने झट से चार रुपए मूल्य लगा दिया। बात बढ़ती गई और उस मतीरी के सौ रुपए दाम लग गए। सेठ फसल की पहली मतीरी का स्वाद लेना चाहते थे। वे धनी थे। चाहे तो एक हजार रुपए भी दे सकते थे। यह बात तो धर्मा की समझ में आती थी, किंतु यह साधारण सा दिखने वाला व्यक्ति इतनी बड़ी कीमत दे कर इस मतीरी को क्यों खरीदने पर तुला है। धर्मा के मन में आश्चर्य जागा।

आखिर उसने उस साधारण से दिखने वाले व्यक्ति से पूछ ही लिया, 'भाई तुम इस नन्हे से फल को इतनी बड़ी कीमत दे कर क्यों खरीदना चाहते हो?' उस व्यक्ति ने कहा, 'देखो भाई, मैं भगवान का एक छोटा सा भक्त हूं। वे मेरे सर्वस्व हैं और मेरे पास जो कुछ है वह भगवान का ही है। कल मंदिर में अन्नकूट का उत्सव है। मंदिर की पाठशाला में भगवान के भोग के लिए सभी शाक बने हैं, सिर्फ मतीरी के शाक की कमी है। मैं अपना सर्वस्व दे कर भी इस मतीरी को खरीदना चाहता हूं। मेरे पास मात्र सौ रुपए हैं। कृपया, आप यह मतीरी मेरे हाथ बेच दीजिए।' धर्मा ज्यों-ज्यों सोचता गया, त्यों-त्यों उसके हृदय का अंधकार छंटता गया। उसने सोचा, 'मेरा सर्वस्व कौन है? निश्चय ही मेरे बच्चे।' सोचता-सोचता धर्मा अपनी झोंपड़ी में जा पहुंचा। बच्चों से घिरा धर्मा अब अपने हाथों से काट-काट कर उन्हें मतीरी खिला रहा था। बच्चों के होठों पर मुस्कराहट और आंखों में चमक आ गई थी और धर्मा को लग रहा था कि साक्षात् दीपमालिका उसकी झोंपड़ी में उतर आई है।

-कुसुम

पानी पहुंचा पानन में

पहाड़ का गांव था पानन। गांव में सब कुछ था। बस पानी की कमी थी। पानी का एक ही स्रोत था। सभी उसी जलस्रोत से पानी भरते। गांव की खेती बरसात के पानी पर निर्भर थी। जिस साल बरसात नहीं होती, खेती चौपट हो जाती।

पानन गांव में गोलू भी रहता था। गोलू था मेहनती। वो गांव वालों के मवेशी चराता। बदले में सभी उसे अनाज आदि दे देते। वो सुबह ही घर-घर से सबके पालतू जानवर हांक ले जाता, शाम को सबके खूंटों पर उन्हें बांध जाता। सर्दी, गर्मी हो या बरसात। सारे काम रुक जाते, मगर गोलू का मवेशियों को चराने ले जाने का काम नहीं रुकता। वो एक ही बात कहता, 'ये जानवर हैं, बोल नहीं सकते, मगर भूख तो इन्हें भी लगती है। बेचारे खूंटे पर ही बंधे रहेंगे।'

एक दिन की बात है। रोजाना की तरह वो सबके मवेशियों को हांक कर ले गया। आज वो मवेशियों को पानन की ऊंची पहाड़ी पर ले गया। वहां ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। एक घने पेड़ के नीचे गोलू लेट गया। उसकी आंख लग गई। जब वो उठा तो मवेशी पहाड़ के दूसरी ओर चले गए थे। पहाड़ की चोटी पर चढ़कर गोलू ने देखा कि मवेशी पहाड़ के दूसरी ओर नीचे उतर गए। वहां गधेरा बह रहा था। गोलू समझ गया कि मवेशियों ने पानी पीने के लिए इतना लंबा रास्ता तय किया था।

अचानक गोलू के दिमाग में एक विचार आया। उसने अपनेआप से कहा, 'मवेशियों ने अपनी प्यास बुझाने के लिए पहाड़ की चोटी चढ़कर लंबा रास्ता तय किया है। दूसरी ओर पहुंचकर ये ढलान पर नीचे उतरे हैं। इन्होंने गधेरे की खोज कर प्यास बुझाई है। अगर इस गधेरे का पानी पानन गांव तक पहुंच जाए तो गांव की खेती सोने की फसल उगाने लगेगी।'

गोलू ने सिर उठाकर देखा। पहाड़ की चोटी आसमान छू रही थी, जहां से उतरकर मवेशी और वह खुद आया था। उसे खुद पर हंसी आई। वह फिर बड़बड़ाया, 'इतनी ऊंचाई पर पानी कैसे पहुंचेगा। पानन गांव तो पहाड़ी के उस पार है।' वह मवेशियों को हांकने की तैयारी करने लगा। तभी उसे एक चूहा दिखाई दिया। चूहे के मुंह में जंगली फल था। वह उसे अपने बिल में ले गया। गोलू ने अपनेआप से कहा, 'इस गधेरे का पानी भी सुरंग खोदकर पहाड़ के उस पार ले जाया जा सकता है। दूसरी ओर पानन गांव है। पानी के लिए गूल बनाकर पानन के एक-एक खेत में पानी पहुंचाया जा सकता है।'

उसने जल्दी-जल्दी सारे मवेशियों को इकट्ठा किया। शाम होने से पहले वो पानन पहुंच गया। उसने कई गांववालों को सुरंग खोदने वाली योजना बताई। मगर सबने इस काम को असंभव बताया। गोलू निराश नहीं हुआ। वह अकेला ही सब्बल, गैंती, फावड़ा और कुदाल लेकर गधेरे वाली पहाड़ी पर पहुंच गया। उसने मवेशी चराने का काम बंद कर दिया। वह भोर होते ही पानन से चल पड़ता। पहाड़ी पार करता, दूसरी ओर पहुंचकर पहाड़ पर सुरंग बनाने के काम में जुट जाता। पानन में सब एक ही बात कहते, 'गोलू पगला गया है।'

मगर गोलू धुन का पक्का था। दिन, हफ्ते और महीने बीतते गए। गोलू बिना रुके, बिना थके सुरंग खोदता गया। उसकी मेहनत बेकार नहीं गई। कई सालों की मेहनत रंग लाई। एक दिन वो भी आया, जब गोलू पहाड़ के आर-पार सुरंग खोदने में सफल हो गया। फिर क्या था। पानन का बच्चा-बच्चा सुरंग देखने पहाड़ पर चढ़ पड़ा। सुरंग देखकर सब हैरान थे। गोलू ने देखा कि पहाड़ी पर सारा गांव उमड़ आया है। गोलू बोला, 'क्या देख रहे हो? चलो खेतों तक गूल बनाने के लिए अपने-अपने फावड़े लेकर आओ। पानन के हर खेत पर पानी पहुंचाना है।' गोलू दादा के जयकारे के साथ गांव वाले पानी की ओर दौड़ पड़े। सब अपने घरों से खुदाई के औजार ले आए। गधेरे से पानी खेत तक पहुंचाने के लिए मिलकर गूल बनाई। गूल को सुरंग तक मिलाया गया। पानी तेज वेग से सुरंग पार करता हुआ पानन की पहाड़ी से उतरता हुआ खेतों तक जा पहुंचा।

पानी को तरसता पानन पानी से भरपूर हो गया। हर खेत में पानी पहुंच गया। आज भी फसल काटते और बोते समय पानन के लोग गोलू दादा की पूजा करना नहीं भूलते।

-मनोहर चमोली 'मनु'

(उत्तराखंड की लोककथा पर आधारित)

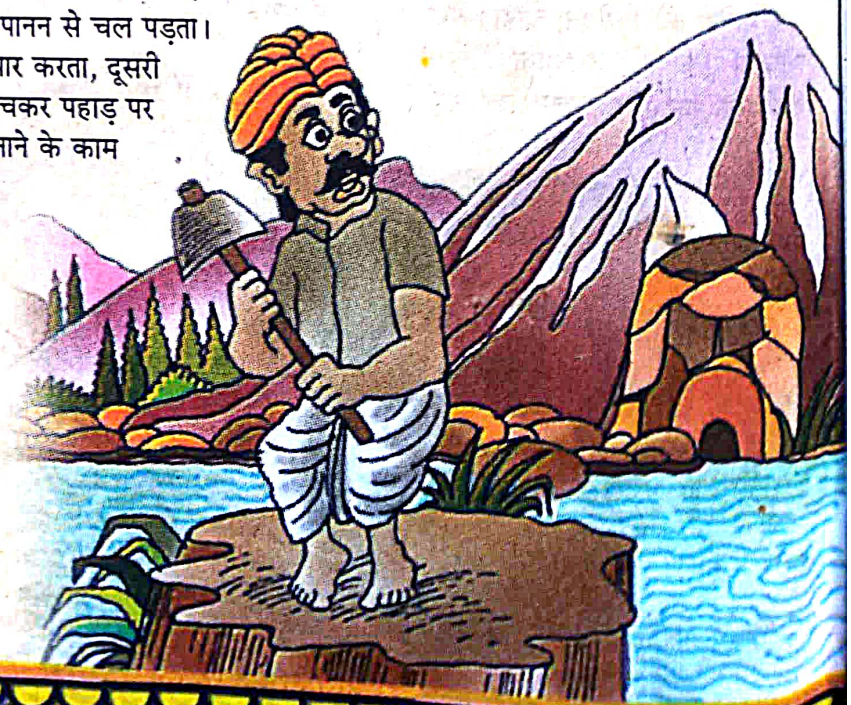

कहानी

नकलची कालू

'मां, दिवाली पर मुझे भी वैसी ही ड्रेस चाहिए जैसी मीकू खरगोश ने बनवाई है,' कालू चूहे ने इठलाते हुए कहा। 'लेकिन तुम्हारी तो दिवाली की ड्रेस तैयार होकर भी आ गई है। आज ही दर्जी दे गया है।' उसकी मां ने कहा।

'पर मुझे तो मीकू खरगोश जैसी चाहिए। उसने काले रंग की बहुत सुंदर ड्रेस बनवाई है।'

'पर बेटा! एक बार तुम अपनी ड्रेस तो देखो, हो सकता है तुम्हारी ड्रेस मीकू की ड्रेस से भी सुंदर हो। वैसे भी मीकू के सफेद रंग पर तो काली पोशाक खिलेगी, पर तुम्हारे ऊपर काली ड्रेस अच्छी नहीं लगेगी। मैंने तुम्हारे लिए बहुत सुंदर गुलाबी ड्रेस बनवाई है।' मां ने उसे समझाते हुए कहा।

कालू ने मां की एक न सुनी। वह अपनी बात पर अड़ा रहा। प्रायः ऐसा होता था। कालू को हमेशा वे ही खिलौने, वे ही किताबें, वे ही कपड़े पसंद आते थे जो उसके दोस्तों के पास होते थे।

कालू अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था। शायद अधिक लाड़-प्यार से ही वह बिगड़ गया था। पिता उसके लिए बिन मांगे ही तरह-तरह के उपहार लाते थे। पर कालू कभी उनकी प्रशंसा नहीं करता। उसे तो सदा अपने मित्रों की चीजें ही पसंद आती थीं। वैसी ही चीजें खरीदकर वह बड़ा खुश होता था। उसके मित्रों ने तो उसकी इस आदत के कारण उसका नाम ही नकलची कालू रख दिया था।

जब मां को लाग कि कालू मानने वाला नहीं है तो हमेशा की तरह उसने उसकी बात मान ली और उसके लिए मनचाही ड्रेस खरीद ली।

दिवाली के दिन नई पोशाक पहनकर कालू अपने मित्रों से मिलने के लिए चल दिया। कालू चूहे को काली ड्रेस में देखकर सभी दोस्तों ने उसकी हंसी उड़ाई। दूसरी ओर मीकू खरगोश की वैसी ड्रेस की सभी जी खोलकर बड़ाई कर रहे थे।

रात का समय था। सभी ने अपने घरों पर रंगबिरंगी रोशनी कर रखी थी। चीकू गिलहरी ने घर के चारों ओर दीपकों की कतार लगाई थी तो गिट्टू तोते ने मोमबत्ती जलाई थी। नीलू सियार ने अपने घर पर रंगबिरंगे लट्टू लटकाए थे। पर सबसे अनोखी रोशनी की थी कछुओं ने।

जंगल के बीच बने छोटे तालाब में सभी कछुए रहते थे। कछुओं ने अपनी पीठ पर मोमबत्तियां जला रखी थीं। वे तालाब में तैर रहे थे। मोमबत्तियों की छाया तालाब के पानी पर पड़ रही थी। तालाब में चलती-फिरती रोशनी बहुत ही सुंदर लग रही थी। सभी जानवरों ने कछुओं की रोशनी की प्रशंसा की। कालू चूहे को भी कछुओं की पीठ पर जलती मोमबत्तियां बहुत अच्छी लगीं। वह जल्दी-जल्दी अपने घर पहुंचा।

उसके माता-पिता घर पर नहीं थे। शायद पड़ोस में दिवाली पर मिलने गए थे। कालू ने अपने कुछ चूहे साथियों को इकट्ठा किया और बोला, 'मित्रो! इस बार हम दिवाली की रोशनी अनोखे ढंग से करेंगे। हमारी रोशनी को देखकर बड़े-बड़े जानवर भी दांतों तले अंगुली दबा लेंगे।'

सभी चूहे कालू चूहे की बातों में आ गए। कालू चूहे ने सभी चूहों की पीठ पर जलती हुई मोमबत्तियां लगा दीं। एक मोमबत्ती अपनी पीठ पर भी लगा ली। योजना के अनुसार सभी चूहों को एक कतार बनाकर जंगल में घूमना था।

थोड़ी दूर तक तो सभी चूहे खुश होते हुए चले। पर थोड़ी देर बाद ही उनकी पीठ पर पिघला हुआ मोम गिरने लगा। जलन के मारे वे उछलने लगे। उछलने से कई चूहों की मोमबत्तियां ही गिर गईं और उनकी पीठ के बाल जल गए। दर्द के कारण सभी चूहे जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगे।

उनका रोना-धोना सुनकर आस-पास से जानवर दौड़े आए। उन्होंने उनकी मोमबत्तियां बुझाईं व उनके मरहम पट्टी की।

कालू चूहा भी बुरी तरह से झुलस गया। 'बेटा! तुमने यह मूर्खता क्यों की? मां ने आंसू बहाते हुए कालू से पूछा।'

'मां, मैंने कछुओं को अपनी पीठ पर मोमबत्तियां लगाकर तालाब में तैरते देखा था। मुझे उनकी दिवाली की रोशनी करने का यह ढंग बहुत अच्छा लगा इसलिए मैंने भी इसी तरह रोशनी करने की सोची।'

'पर बेटा! तुमने यह नहीं सोचा कि कछुओं की खाल पर गरम मोम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तुम्हारी नाजुक खाल गर्म मोम को कैसे सहन कर सकती थी!'

'आप ठीक कहती है मां। अब मैं समझ गया हूं कि बिना सोचे-समझे हमें किसी की नकल नहीं करनी चाहिए।' कालू ने कहा तो मां खुश हुई। उसकी दिवाली की खुशी और बढ़ गई।

-गौरव

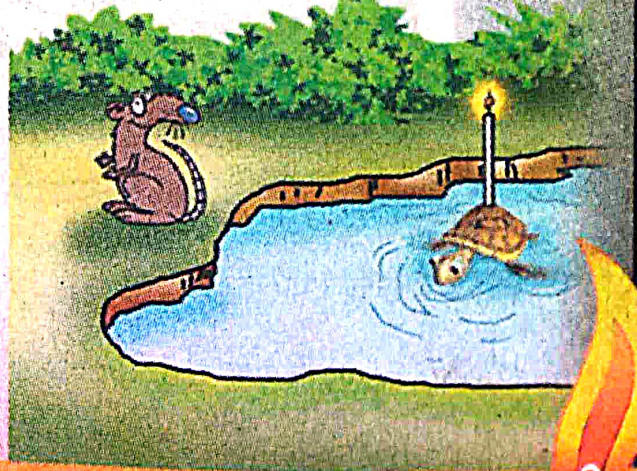

दो चमकते तारे

जापान के एक गांव में रहता था, मिकेरान। वह पेशे से कुम्हार था। मिट्टी के बरतन बनाकर उन्हें दूसरे गांवों में बेचता था। एक दिन सिर पर बरतनों का टोकरा लिए, मिकेरान पहाड़ों के बीच से गुजर रहा था। तभी उसने एक पेड़ पर बेहद सुंदर पोशाकें लटकती देखीं। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। देखा, पास की झील में 5-6 परियां नहा रही थीं। वह समझ गया कि पोशाकें उन्हीं परियों की हैं।

मिकेरान से रहा न गया। उसने एक पोशाक चुपके से अपने थैले में डाल ली और आगे चल पड़ा। आज मिकेरान के मन में एक अजीब सी उमंग थी। शाम को वह जल्दी ही घर की ओर चल दिया। झील के पास पहुंचा तो उसे किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। मिकेरान ने देखा, एक सुंदर युवती रो रही है।

मिकेरान ने उससे रोने का कारण पूछा, तो उसने रोते-रोते ही कहा, 'मैं झील में नहा रही थी। न जाने मेरी पोशाक कहां चली गई। बिना पोशाक में परी लोक नहीं जा सकती।'

मिकेरान ने सोचा कि वह पोशाक लौटा दे, पर इतनी सुंदर युवती को देख, उसने उसे अपनी पत्नी बनाने का निश्चय किया। बोला, 'तुम मुझसे शादी कर लो।' युवती ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसका नाम तानाबाता था। दोनों की शादी हो गई।

समय बीता। दोनों के एक बेटा हुआ। दोनों खूब खुश हुए। गृहस्थी मजे में चल रही थी। एक दिन तानाबाता की नजर एक गंदी सी पोटली पर पड़ी। उसने उत्सुकतावश पोटली को खोल लिया। पोटली खोलते ही तानाबाता दंग रह गई, यह तो उसकी पोशाक थी। उसे समझते देर न लगी कि उस दिन मिकेरान ने ही उसकी पोशाक चुराई थी।

अब तक सब कुछ भूल चुकी तानाबाता को पोशाक देखते ही परीलोक, अपनी सहेलियां और माता-पिता याद आ गए। उसने उसी वक्त अपनी पोशाक पहन ली। पोशाक पहनते ही वह फिर से परी बन गई। अपने बच्चे को गोद में लेकर वह आसमान में उड़ने ही वाली थी, तभी मिकेरान दौड़ता हुआ आया। वह उससे रुक जाने की प्रार्थना करने लगा। तानाबाता भी भावुक हो गई। उसने कहा, 'मैं रुक नहीं सकती। तुम मुझे सचमुच चाहते हो, तो तुम्हें

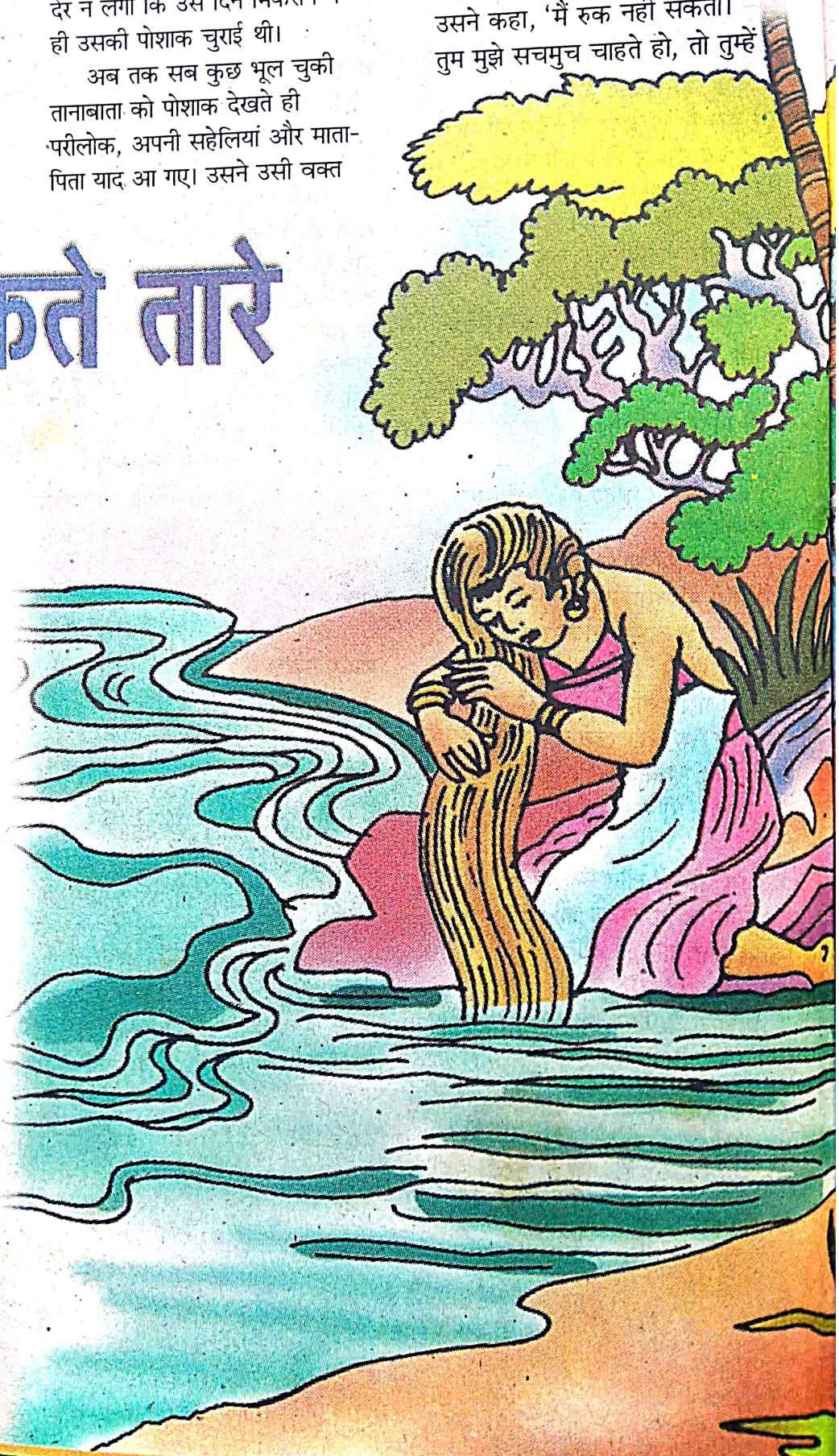

मिकेरान तानाबाता को नाम लेकर पुकारने लगा। तानाबाता ने उसे देख लिया। उसने हाथ बढ़ाया और मिकेरान को अपनी ओर खींच लिया। दोनों ने जी भर कर बातें कीं। पर तानाबाता के कठोर पिता को यह पता चला तो वे क्रोधित हो गए। उन्होंने मिकेरान से कहा, 'अगर तुम मेरी बेटी के साथ रहना चाहते हो,तो तीन शर्तों को मानना पड़ेगा।

परीलोक आना होगा।'

'पर मैं वहां कैसे आऊंगा?' मिकेरान ने पूछा।

'तुम पुआल की हजार चप्पलें बना, बांस के नीचे गाड़ दो। अगर तुम मुझे सच्चे दिल से चाहते हो तो जरूर पहुंच जाओगे।' तानाबाना ने उसे उपाय बता दिया।

मिकेरान इसी काम में जुट गया। पर हड़बड़ी में उसने 999 चप्पलें ही बनाईं। फिर जल्दी से उन्हें बांस के नीचे गाड़ दिया। अचानक बांस तेज गति से बढ़ने लगा। देखते ही देखते आसमान तक पहुंच गया। मिकेरान लपक कर उस पर चढ़ गया। वह काफी ऊंचाई तक पहुंच गया, पर आसमान छूने में जरा सी कसर रह गई। एक चप्पल कम जो थी।

मिकेरान तानाबाता को नाम लेकर पुकारने लगा। तानाबाता ने उसे देख लिया। उसने हाथ बढ़ाया और मिकेरान को अपनी ओर खींच लिया। दोनों ने जी भर कर बातें कीं। पर तानाबाता के कठोर पिता को यह पता चला तो वे क्रोधित हो गए। उन्होंने मिकेरान से कहा, 'अगर तुम मेरी बेटी के साथ रहना चाहते हो, तो तीन शर्तों को मानना पड़ेगा। सबसे पहले खेत में बाजरे के बीज बोकर दिखाओ।' कहकर उन्होंने एक बोरी बाजरे के बीज की दे दी।

दूसरे दिन मिकेरान दिन भर बीज बोता रहा। शाम को उसने तानाबाता के पिता को बताया तो वे नाराज होकर बोले, 'अरे पागल! तुमने तो उन्हें मैदान में बो दिया। उन्हें धान के खेत में बोना था। जाओ उन्हें सही जगह बोकर आओ।'

दुखी मिकेरान अपनी गलती सुधारने चल पड़ा। वह असमंजस में था कि इतने सारे बोए हुए बीजों को निकाल कर, दूसरी जगह ले ज़ाना कैसे संभव है। तभी चमत्कार हुआ। हजारों कबूतर कहीं से आए और उन्होंने देखते ही देखते बाजरे के एक-एक दाने को चुग, धान के खेत में बो दिया।

अब तीसरी शर्त बाकी थी। मिकेरान के कठोर दिल ससुर ने उसे बिना खाए एक सप्ताह तक कड़ी धूप में तरबूज के खेतों की रखवाली करने का काम सौंप दिया।

मिकेरान ने हार न मानी। वह तरबूज के खेत की रखवाली करने लगा। दो दिन तक तो वह कड़ी धूप में, बिना खाए-पीए खेत में डटा रहा। पर तीसरे दिन उसकी प्यास से हालत खराब हो गई। उसने एक तरबूज खाकर अपनी प्यास बुझाने की सोची। उसने जैसे ही तरबूज को काटा, पानी की धारा फूट पड़ी, ऐसी जैसी नदी की धारा होती है।

उस प्रवाह में मिकेरान तानाबाता से दूर बहता गया। तानाबाता पुकारती रही। मिकेरान तानाबाता की ओर बढ़ने की कोशिश करता रहा। पर सब कुछ बेकार। दोनों नदी के दो किनारों पर थे। बीच में आकाशगंगा बह रही थी।

कहा जाता है, आकाश गंगा के दो छोर पर दो चमकते तारे मिकेरान और तानाबाता ही हैं। साल में एक बार ये आकाशगंगा को पार कर एक-दूसरे के करीब आ जाते हैं। इस दिन जापान में खूब उत्सव मनाया जाता है। इसे तानाबाता त्योहार कहते हैं।

-शिखर

मदन का भाई नन्दू

कहानी

मदन बैलगाड़ी चलाता था। उसके पास नन्दू नाम का एक ही बैल था इसलिए उसने अपनी गाड़ी को थोड़ा छोटा और इस तरीके से बनवा लिया था कि उसे खींचने में नन्दू को कोई परेशानी न हो।

उस दिन मदन अपनी बैलगाड़ी से सेठ रामरतन के अनाज के कुछ बोरे सूर्यगढ़ की अनाजमंडी ले जा रहा था। आधे रास्ते पहुंचकर उसके बैल नन्दू की तबियत खराब हो गई। मदन अपने बैल नन्दू को भाई जैसा मानता था। नन्दू को गाड़ी खींचने में परेशानी हो रही थी। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। मदन ने उसे रुकने को कहा। नन्दू किसी तरह धीरे-धीरे चलने की कोशिश करता रहा।

नन्दू को लड़खड़ाता देख मदन ने गुस्से में उसे रुकने के लिए कहा। नन्दू रुक गया। गाड़ी से उतरकर मदन ने नन्दू को छूकर देखा, 'अरे! तुझे तो बुखार है? और तू है कि...' मदन ने उसे गाड़ी से खोला और नजदीक के एक पेड़ के नीचे आराम करने को कहा। पास ही एक गांव था। मदन गांव से नन्दू के लिए चारा और बाल्टी में पानी ले आया। नन्दू ने थोड़ा सा पानी पिया। थोड़ा सा चारा खाया, फिर छोड़ दिया। मदन ने उसे हाथ से सहलाते हुए उसकी हिम्मत बढ़ाई, 'अरे! कुछ खाएगा- पिएगा नहीं तो ठीक कैसे होगा? इतना बलवान होकर हिम्मत छोड़ रहा है। हिम्मत रख भई...।'

नन्दू बोलता नहीं था, लेकिन वह मदन की सब बात समझता था। मदन भी इशारों-इशारों में नन्दू की हर बात समझ लेता था। नन्दू ने आंखों के इशारे से कहा, 'मुझे अपनी चिंता नहीं। मुझे सेठ रामरतन के माल को जल्द से जल्द मंडी पहुंचाने की चिंता है।'

'कोई बात नहीं, जान है तो जहान है! सेठ क्या कर लेगा? ज्यादा से ज्यादा हमारे भाड़े के पैसे काट लेगा या नहीं देगा। देखा जाएगा। तुझे कुछ हो गया तो? तू चिंता न कर, मैं अभी तेरी दवा का इंतजाम करता हूं।'

थोड़ी देर बाद ही मदन पास के गांव से एक वैद्य को बुला लाया। वैद्य ने नन्दू को चैक किया, फिर अपने झोले से निकाल कर कुछ जड़ी-बूटियां खिलाईं और पचास रुपए लेकर चलता बना। रात हो गई थी। दोनों पेड़ों के नीचे लेट गए। सुबह तक नन्दू की हालत और खराब हो गई थी। उससे उठकर खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। वहां से गुजरने वाले लोग कुछ पल रुकते। नन्दू को देखते और कहते, 'इसकी हालत तो खराब हो गई है, इसका तो बचना मुश्किल है।'

मदन की चिंता बढ़ती जा रही थी। वहां से गुजरने वाले एक अन्य व्यक्ति ने मदन को सलाह दी, 'देसी इलाज-विलाज छोड़ो। किसी पढ़े-लिखे वेटेनरी डॉक्टर को दिखाओ।' जानवरों के डॉक्टर का पता लगाकर मदन उसे बुलाकर लाया। डॉक्टर ने नन्दू का चेकअप किया और कहा, 'इसे अंतड़ियों का इंफेक्शन हो गया है, जैसे इंसानों को होता है न? ऐसे ही जानवरों को भी इंफेक्शन हो जाता है। इसे पांच दिन तक रोज इंजेक्शन देने पड़ेंगे। कुछ दवाईयां भी देनी पड़ेंगी। मैं लिख देता हूं। यहां से डेढ़-एक मील दूर अगले गांव में दवाइयों की दुकान है, वहां से मिल जाएंगी। सात-आठ सौ रुपए की पड़ेंगी। सौ रुपए रोज की मेरी फीस होगी। इलाज करवाना हो तो सोच लो....?'

'डॉक्टर साहब, नन्दू ठीक तो हो जाएगा न?'

डॉक्टर ने पहले मदन की ओर देखा, फिर नन्दू की ओर देखा। दोनों की आंखों में आंसू थे। डॉक्टर साहब धीरे से बोले, 'ठीक क्यों नहीं होगा। कोशिश करना हमारा कर्त्तव्य है, बाकी तो ऊपर वाले की मर्जी पर है। फिलहाल कुछ दवाईयां अपने पास से दे देता हूं। तुम शाम तक मेरी दवाईयां और इंजेक्शन ले आओ। मैं शाम का फिर आऊंगा।' कहकर डॉक्टर साहब अपनी फीस लेकर चलते बने।

मदन नन्दू के पास गया तो नन्दू सिर हिलाकर पूछने लगा, 'क्यों मेरे लिए इतना परेशान हो रहे हो? मरने दो मुझे। किराए की बैलगाड़ी लेकर माल मंडी में पहुंचा दो। मुझे यहां पड़ा रहने दो। वापसी में देख लेना। मैं ठीक हो गया तो ठीक, नहीं तो....।'

'मैं तुम्हें तुम्हारे इस हाल पर कैसे छोड़कर जा सकता हूं। बीमार नहीं होते क्या लोग? इलाज से ठीक नहीं होते क्या?'

'इतने पैसे कहां से लाओगे? इतने तो हम लेकर भी नहीं चले।'

'रास्ते में खाने-पीने के लिए हम जो बाल्टी-बरतन अपने साथ लेकर चलते है न, मैं उन्हें बेच दूंगा। तू चिंता मत कर...।'

'मेरे लिए इतना....'

'क्या इतना? अपनी बारी भूल गया? जब मेरे माता-पिता हमारे सिर पर कुछ कर्ज छोड़कर गुजर गए थे और लोगों ने हमारे खेतों पर कब्जा कर लिया था। तब मैं बीमार चल रहा था।

कुछ गुण्डे-लठैत हमारी झुग्गी पर भी कब्जा करने आए थे, लेकिन तूने जमकर उनका मुकाबला किया था। उनकी लाठियां खाईं, पर उन्हें झुग्गी पर कब्जा नहीं करने दिया। मेरी जान बचाई। सींग मार-मारकर खदेड़ दिया था तूने? और आज मैं तुझे यूं ही छोड़कर चला जाऊं? मुसीबत में हम दोनों साथ रहे हैं और आगे भी रहेंगे! सुन लिया न....।'

दोनों की आंखों में आंसू बह रहे थे। तभी वहीं आस-पास मंडरा रहे एक आदमी ने मदन को पास बुलाकर कहा, 'इस बैल के लिए इतना परेशान क्यों हो रहे हो? आखिर है तो एक जानवर ही?'

मदन को गुस्सा आ गया, 'इंसान भी तो जानवर ही है! बल्कि जानवर तो इंसान को अपना दोस्त समझते हैं और इंसान...पशुओं का फायदा उठाता है। और बाद में उसे मार-काट कर खा जाता है। इंसानों जैसा निर्दयी और खुदगर्ज तो जानवर होगा ही नहीं?'

वह आदमी हंसते हुए बोला, 'अरे छोड़ो-छोड़ो ये उपदेश की बातें...! और जरा बुद्धि से काम लो... इस बीमार बैल को मुझे एक हजार रुपए में बेच दो और जो पैसे तुम इसके इलाज में खर्च कर रहे हो वे बच जाएंगे। मेरे दिए एक हजार रुपए और इलाज से बचे पैसों को मिलाकर मैं तुम्हें नया बैल खरीदवा देता हूं, मजे से जहां जाना हो, वहां जाओ।'

मदन ने हैरानी से पूछा, 'तुम इस बीमार बैल का क्या करोगे?' उस आदमी ने हंसते हुए कहा, 'इसे किसी कसाई को काटने के लिए दे दूंगा और क्या....!'

सुनते ही मदन भड़क उठा। उस आदमी को मारने के लिए डंडा लेने अपनी बैलगाड़ी की ओर दौड़ा। वह आदमी मदन के गुस्से को देखकर भाग खड़ा हुआ। मदन इतना गुस्से में था कि उसे जान से ही मार डालता।

अगले पांच दिन तक मदन वहीं खुले में पड़ा रहा और नन्दू की सेवा करता रहा। कभी उसे दवाई खिलाता, कभी चारा खिलाता। कभी उसे नहलाता। डॉक्टर आता इंजेक्शन लगाता। छठे दिन नन्दू उठकर खड़ा हो गया। नन्दू के स्वस्थ हो जाने पर मदन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

स्वस्थ होते ही नन्दू ने इशारे से मदन को कहा, 'अब जल्दी से चलो सेठ रामरतन का माल मण्डी में पहुंचा दो।'

मदन ने हंसते हुए कहा, 'सेठ रामरतन तो हमें ढूंढ़ रहा होगा। वो सोच रहा होगा कि हम दोनों उसका माल लेकर भाग गए हैं।'

ज्यों ही मदन अपनी बैलगाड़ी लेकर मण्डी की ओर रवाना होने लगा। उसने देखा सामने से गांव के दो-तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति चले आ रहे हैं। एक आदमी ने आगे बढ़कर कहा, 'मैं इस गांव का प्रधान हूं। मैं तुम्हारे साथ अपनी इकलौती लड़की का रिश्ता करना चाहता हूं। मुझे तुम्हारे जैसे लड़के की तलाश थी। तुम्हारे गांव अपना आदमी भेजकर मैंने तुम्हारे बारे में सबकुछ मालूम कर लिया है। तुम मेहनती और ईमानदार आदमी हो। जो आदमी पशुओं से इतना प्यार कर सकता है, वह मेरी बेटी को कभी धोखा नहीं देगा। तुम मण्डी जा रहे हो, तो जाओ। हम एक माह बाद खुद तुम्हारे गांव रिश्ता लेकर आएंगे।'

दोनों खुशी-खुशी मण्डी की ओर चल दिए। मण्डी पहुंचे तो सेठ रामरतन तो जैसे उनके स्वागत में ही खड़े थे। वे तो सोच रहे थे कि सेठ उन्हें देखते ही बिगड़ उठेगा और उन्हें बुरा-भला कहेगा। लेकिन सेठ ने हंसते हुए कहा, 'तुम लोग एक सप्ताह देर से पहुंचे। अच्छा किया। तुम लोग पहले पहुंच जाते तो मेरा माल सस्ते में बिक जाता। इस बीच इधर अनाज के भाव बहुत बढ़ गए हैं। अब मैं अपना माल दोगुने दाम पर बेचूंगा। मुझे दुगुने का फायदा हो गया है। मैं तुम्हें भी इनाम के रूप में दोगुना किराया दूंगा।

मदन ने नन्दू की ओर देखा। दोनों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

-कमल चोपड़ा

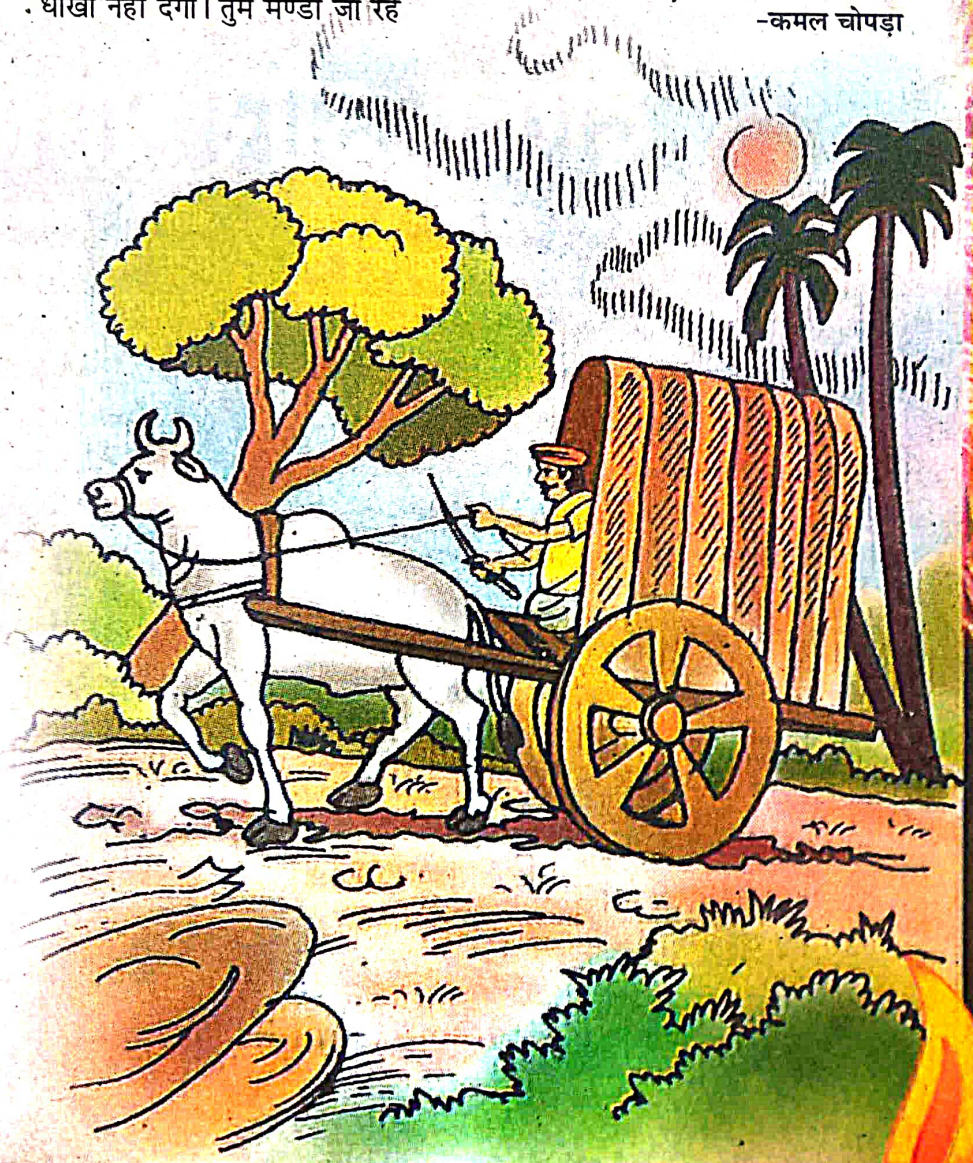

बिना बम की हो दिवाली

धूमधाम, तड़-तड़ की आवाजें यानी दीवाली की मस्ती की शुरुआत। हर ओर दियों की कतारें, मिठाई से फूले हुए गाल लिए नये-नये कपड़ों से सजे बच्चे दिख रहे थे। बच्चे हों और पटाखे न हों ऐसा कहीं होता है भला। सोनू तो बम की पूरी लड़ी ले कर आया था और चीनू को समझा रहा था कि सारे बमों का धमाका कर तो बस मजा आ जाएगा। यह योजना बन ही रही थी कि दादाजी आ गए।

दादा ने कहा, 'कभी एक बात सोची है कि बूढ़े लोगों, छोटे बच्चों और बीमारों को इस धू-धड़ाम से कितनी तकलीफ होती है। अनार, चकरी, फूलझड़ी देख कर तो चलो कुछ मजा भी आता है। मगर बम के पटाखे तो सिवा कान फोड़ने के और कुछ नहीं करते। इसके अलावा हवा दूषित करते हैं सो अलग।'

'सो कैसे?', बच्चे बोले।

'यह तो तुम जानते ही हो कि सभी प्राणी जिनमें मानव और पशु-पक्षी प्रमुख हैं, ऑक्सीजन यानी शुद्ध प्राणवायु ग्रहण करते हैं और कॉर्बन डाइ ऑक्साइड यानी अशुद्ध वायु छोड़ते हैं। किसी भी पदार्थ के जलने से प्राणवायु जलती है और दूषित वायु पैदा होती है। अब जब तुम पटाखे जलाते हो तो बड़ी मात्रा में शुद्ध प्राणवायु होगी ही। तुमने देखा है न कि पटाखे फोड़ने से वायु कितनी दूषित हो जाती है और उस हवा में हमारा सांस लेना तक दूभर हो जाता है। बोलो अभी भी ये सारे बम एक साथ फोड़ोगे?'

'नहीं दादाजी, थोड़े-थोड़े कर के पटाखे चलाएंगे हम।' चीनू बोला।

दीपक और मोमबत्ती

अंधेरा गहराने लगा था, राजू दीपक जलाने में मां की मदद कर रहा था। मां ने उसे कुछ मोमबत्तियां भी दे दी थीं। वह एक दीपक और एक मोमबत्ती इस क्रम से रोशनी कर रहा था। राजू जब अंदर चला गया तब एक मोटी मोमबत्ती नाक चढ़ा कर दीपक से बोली, 'जरा परे खिसक कर बैठो, काले-कलूटे दीपक।' दीपक चुप रहा। उसे चुप देखकर मोमबत्ती चिढ़ गई और गुस्से से बोली, 'अब दीपकों का जमाना नहीं है। दीवाली के दिन रंगबिरंगी या गोरी-गोरी मोमबत्तियां ही जलाई जाती हैं।''

जरूर जलती होंगी पर दीवाली का शगुन तो दीपकों से ही होता है। देवी लक्ष्मी के आगे भी दीपक ही जलाया जाता है।'' दीपक बोला। 'ज्यादा बढ़-बढ़ कर मत बोलो, नहीं तो अभी धक्का दे कर नीचे गिरा दूंगी। आजकल दीपक जलाता ही कौन है। अरे, मिट्टी के माधो, देख मेरी रोशनी कितनी तेज है, तू तो बस टिमटमा रहा है।' मोमबत्ती हंसती हुई गर्व से बोली।

लगभग एक घंटे बाद दीपक ने मुड़कर मोमबत्ती को देखा तो वह हैरान रह गया। मोमबत्ती का विशालकाय गोरा शरीर पिघल चुका था और अब पिघले हुए मोम के सहारे वह धीमे-धीमे जल रही थी। दीपक का तेल भी समाप्त होने को था। तभी अंदर से राजू आया और उसने सभी दीपकों में तेल डाल दिया। बुझती मोमबत्ती ने देखा कि दीपक की लौ फिर पहले जैसी तेज हो गई है।

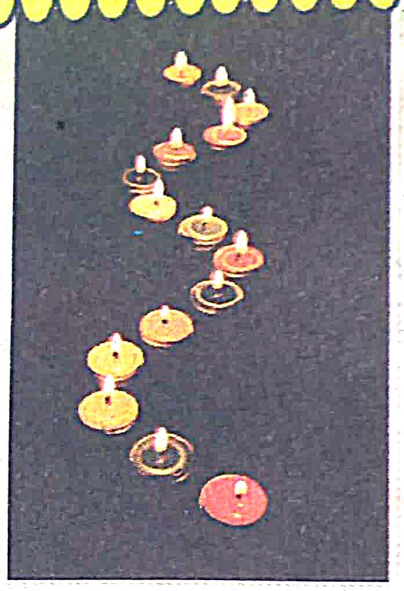

कहानी भैया दूज की

बच्चो, दिवाली के बाद भैया दूज का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन घर की महिलाएं-बहनें घर पर पूजा करती हैं। भाई इस दिन अपनी बहन के यहां आते हैं और बहन प्यार से उन्हें भोजन कराती है। भैया दूज की परंपरा कैसे शुरू हुई, क्या है इसके पीछे छिपी कहानी, जानें।

उत्तर-मध्य भारत में यह पर्व भातृ द्वितीया 'भैयादूज' के नाम से जाना जाता है, पूर्व में 'भाई-कोटा', पश्चिम में 'भाईबीज' व 'भाऊबीज' कहलाता है। इस पर्व पर बहनें प्रायः गोबर से मांडने बनाती हैं, उसमें चावल और हल्दी के चित्र बनाती हैं तथा सुपारी, फल, पान, रोली, धूप, मिष्टान्न आदि रखती हैं, दीप जलाती हैं। इस दिन यम द्वितीया की कथा भी सुनी जाती है। कथा कुछ इस प्रकार है।

सूर्य भगवान की स्त्री का नाम संज्ञा देवी था। इनकी दो संतानें, पुत्र यमराज तथा कन्या यमुना थी। संज्ञा देवी पति सूर्य की उदय होती किरणों को न सह सकने के कारण उत्तरी ध्रुव प्रदेश में छाया बन कर रहने लगीं। उसी छाया से ताप्ती नदी तथा शनिचर का जन्म हुआ। इधर छाया का यम तथा यमुना से विमाता सा व्यवहार होने लगा। इससे खिन्न होकर यम ने अपनी एक नई नगरी यमपुरी बसाई। यमपुरी में पापियों को दंड देने का कार्य करते भाई को देखकर यमुनाजी गोलोक (स्वर्ग) चली आई जो कि कृष्णावतार के समय भी थी।

यमुना अपने भाई यमराज से बड़ा स्नेह करती थी। वह उससे बराबर निवेदन करती कि वह उसके घर आकर भोजन करें, लेकिन यमराज अपने काम में व्यस्त रहने के कारण यमुना की बात को टाल जाते थे। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर एक दिन सहसा यम को अपनी बहन की याद आई। उन्होंने दूत भेजकर यमुना की खोज करवाई, मगर वह मिल न सकीं। फिर यमराज स्वयं गोलोक गए जहां विश्राम घाट पर यमुनाजी से भेंट हुई। भाई को देखते ही यमुनाजी ने हर्ष से उनका स्वागत-सत्कार किया तथा उन्हें भोजन करवाया। इससे प्रसन्न हो यम ने वर मांगगने को कहा। यमुना ने कहा, 'हे भाइया में आपसे यह वरदान मांगना चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी यमपुरी जाएं।'

प्रश्न बड़ा कठिन था। यम के ऐसा वर देने से यमपुरी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता। भाई को असमंजस में देखकर यमुना बोली, 'आप चिंता न करें, मुझे यह वरदान दें कि जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करके, इस मथुरा नगरी स्थित विश्राम घाट पर स्नान करें वे तुम्हारे लोक को न जाएं।' इसे यमराज ने स्वीकार कर लिया। उन्होंने बहन यमुनाजी को आश्वासन दिया, 'इस तिथि को जो अपनी बहन के घर भोजन नहीं करेंगे उन्हें मैं बांधकर यमपुरी ले जाऊंगा और तुम्हारे जल में स्नान करने वालों को स्वर्ग होगा।' तभी से यह त्योहार मनाया जाता है।

लाल साड़ी में लिपटी, सोने के आभूषणों में दमकती लक्ष्मी, कमल के पुष्प पर विराजती है। आसपास खड़े सफेद हाथी उनका अभिवादन करते हैं। वे धन, संपदा, सौभाग्य, सौंदर्य और मंगल की देवी हैं लक्ष्मी ही श्री हैं। श्री से ही हर कार्य का शुभारम्भ होता है। एक हाथ में कलश या अक्षय-पात्र लिए लक्ष्मी दूसरे हाथ से धन बरसाती हैं। लक्ष्मी की सभी कई रूपों में पूजा-स्तुति करते हैं। आइए जानें लक्ष्मी के विविध रूप।

आदि लक्ष्मी

पुराणों के अनुसार आदि लक्ष्मी जीवन देने वाली प्रथम जननी हैं। इन्हें आदि शक्ति के नाम से भी जाना जाता है। देव-दानव, मनुष्य सभी उनकी शक्तियों के समक्ष अज्ञानी हैं। ब्रह्म पुराण के अनुसार आदि लक्ष्मी से ही अंबिका (पार्वती), विष्णु, लक्ष्मी-ब्रह्मा तथा सरस्वती-शिव की उत्पत्ति हुई।

बाद में आदि लक्ष्मी ने सरस्वती को ब्रह्मा से, लक्ष्मी को विष्णु से तथा अंबिका को शिव से वैवाहिक बंधन में बांधा। फिर ये तीन दंपती ब्रह्मांड को मिटाने, रचने और स्थिर रखने का कार्य करने निकल पड़े। आदि शक्ति तीन गुण- रज, तम और सत्व का भाव लिए होती हैं। इनमें से रज को हम लक्ष्मी, तम को महाकाली एवं सत्व को महासरस्वती के रूप में मानते हैं।

महालक्ष्मी

आदि लक्ष्मी से अलग महालक्ष्मी के स्वरूप को समझ पाना भक्तों के लिए सरल होता है। ये प्रकृति के उदार भाव की प्रतिनिधि होती हैं। लक्ष्मी पति विष्णु संसार का पालन करते हैं, जिसमें लक्ष्मी धन, बुद्धि तथा शक्ति द्वारा योगदान देती हैं।

गज लक्ष्मी

कई चित्रों, मूर्तियों आदि में लक्ष्मी के स्वरूप पर जल वर्षा करते दो हाथी (नर-मादा) दिखाई देते हैं। ये हाथी 'दिग्गज' के आठ जोड़ों में से एक होते हैं, जो ब्रह्मांड के आठ कोनों पर स्थित रहकर आकाश को संभाले हुए हैं। ये लक्ष्मी के कृपा पात्र हैं। गज अर्थात हाथी को शक्ति, श्री तथा राजसी वैभव वाला प्राणी माना गया है। गज को वर्षा करने वाले मेघ तथा उर्वरता का प्रतीक माना जाता है। इस तरह ये उर्वरता तथा समृद्धि की देवी लक्ष्मी के सहचर हैं। इनके साथ इनका स्वरूप गज लक्ष्मी नाम से जाना जाता है।

बच्चो, लक्ष्मी को तुम किस रूप में देखते हो? ज्यादातर की यही धारणा होती है कि लक्ष्मी धन की देवी है और इनकी पूजा करने से धन की प्राप्ति होती है। पर लक्ष्मी का केवल यही स्वरूप नहीं है। पुराण कथाओं में लक्ष्मी को विविध रूपों वाली माना गया है। लक्ष्मी के प्रत्येक रूप से हमें कोई न कोई शिक्षा मिलती है। हमें लक्ष्मी की पूजा सिर्फ धन-देवी मानकर ही नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसके अलग-अलग रूपों को भी समझना चाहिए और उनसे कुछ न कुछ सीखना चाहिए।

लक्ष्मी तेरे कितने नाम

धान्य लक्ष्मी

अनाज-रसोईघर को हमेशा भरा रखने वाली शक्ति के रूप में पूजा जाता है, धान्य लक्ष्मी को। द्रोपदी को हमेशा भोजन से भरा रहने वाला पात्र धान्य लक्ष्मी ने ही आशीर्वाद स्वरूप दिया था। धान्य लक्ष्मी हर वर्ग, वर्ण तथा स्तर के मनुष्य की भूख की पूर्ति करती है। वे उन लोगों से प्रसन्न रहती हैं, जो अन्न का सम्मान और भोजन को आदर से ग्रहण करते हैं।

राजलक्ष्मी

राजयोग नसीब से मिलता है, ऐसा लोगों का मानना है। लगभग हर धर्म में राजसी वैभव प्रदान करने वाली एक देवी होती है। इस संदर्भ में हिन्दू मान्यताओं के अनुसार राज लक्ष्मी को पूजा जाता है। राजलक्ष्मी किसी व्यक्ति को शक्ति-वैभव तथा समस्त राजसी सुखों का मालिक बनाती है।

गृहलक्ष्मी

गृहलक्ष्मी का निवास हर घर में होता है। ये मकान में प्रेम का संचार कर उसे घर बनाती हैं। इनकी अनुपस्थिति में घर कलह, झगड़ों, निराशा आदि से भर जाता है। गृहस्वामिनी को इनका प्रतीक माना जाता है। इसलिए गृहप्रवेश के समय धान के कटोरे को पैर से स्पर्श कर या कुमकुम से चरण चिन्ह बनाकर प्रवेश करती है। उसके ऐसा करने को समृद्धि के आने तथा बुराइयों के घर से विदा हो जाने का प्रतीक माना जाता है। जहां गृहस्वामिनी की कद्र न हो, गृह लक्ष्मी उस घर को त्याग देती है।

सौंदर्य लक्ष्मी

ब्रह्मा की पुत्री 'रति' दिखने में बेहद साधारण थीं। अतः उसने सौंदर्य लक्ष्मी से मदद की गुहार लगाई। सौंदर्य लक्ष्मी ने उसे वरदान स्वरूप सोलह शृंगार की जानकारी दी, जिन्हें धारण करते ही रति तीनों लोकों में सबसे सुंदर युवती बन गई तथा प्रेम के देवता 'मन्मथ' के हृदय को जीतने में सफल हुई। इस प्रकार लक्ष्मी सुंदरता का वरदान देने वाली है।

भाग्य लक्ष्मी

ऐसी मान्यता है कि बच्चे के जन्म के छह दिन बाद भाग्य लक्ष्मी स्वयं आकर बच्चे के भाल (मस्तक) पर उसका भाग्य लिखकर जाती हैं। इसी मान्यता के चलते भारत के कुछ क्षेत्रों में (खासकर महाराष्ट्र में) उस स्थान को जहां नवजात सोया होता है, सफाई कर, रंगोली सजाकर रखी जाती है। साथ ही वहां स्लेट-चॉक का कॉपी-पेन भी रखा जाता है, ताकि भाग्य लक्ष्मी बच्चे का भाग्य लिख सके।

संतान लक्ष्मी

प्राणियों को उर्वरता तथा वंश वृद्धि का वरदान देती हैं, संतान लक्ष्मी। संतान लक्ष्मी स्त्री को सृजन का वरदान देती हैं तथा छोटे बच्चों की बीमारियों से रक्षा करती हैं। बंगाल में बिल्लियों तथा मादा शेर को इनका प्रतीक माना जाता है, क्योंकि ये दोनों ही अपने बच्चों का पालन-पोषण अकेले अपने बल पर करते हैं।

वीर लक्ष्मी

जीवन की हर परिस्थिति या शत्रु का साहस से सामना करने का बल और तेज ये प्रदान करती हैं। इन्हें वैष्णो देवी नाम से भी पूजा जाता है। ये शेर की सवारी करती हैं तथा मां दुर्गा के समान अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रहती हैं।

गौ लक्ष्मी

गाय को भारतीय समाज में मां का दर्जा दिया गया है। क्योंकि एक मां की तरह ही वह भी निस्वार्थ भाव से मनुष्य के पालन-पोषण के लिए ढेर सुविधाएं जुटाती हैं, इसलिए इन्हें गौ लक्ष्मी के रूप में पूजा जाता है। पुराणों में कामधेनु का भी वर्णन है, जो प्राणीमात्र की समस्त इच्छाएं पूरी करती हैं।

विद्या लक्ष्मी

ज्ञान को धन में बदलने का वरदान देने वाली देवी हैं विद्या लक्ष्मी। सरस्वती की ही तरह ये भी ज्ञान देने वाली हैं। विद्या लक्ष्मी ज्ञान द्वारा भौतिक समृद्धि के रास्ते खोलती हैं।

आरोग्य लक्ष्मी

स्वास्थ्य सहित सम्पन्न जीवन जीने की कामना से पूजा जाता है, 'आरोग्य लक्ष्मी' को। समुद्र मंथन में से विष्णु के अवतार तथा आयुर्वेद के जनक धन्वंतरी के साथ निकली आरोग्य लक्ष्मी जीवन को स्वस्थ-सुखी रहने का वरदान देती है।

लक्ष्मी के ये सारे स्वरूप सुख-समृद्धि की कामना से पूजे जाते हैं। ये सभी स्वरूप नम्रता, धैर्य, मेहनत, बुद्धिमत्ता, सभ्यता, शांति आदि गुणों को अपने आचरण में उतारने की सीख देते हैं। अतः लक्ष्मी प्राप्ति के लिए हमें इन गुणों को आचरण में उतारना ही चाहिए।

दीपक उजाले, सत्य और ज्ञान का प्रतीक है। दीपक की विकास यात्रा वर्षों से जारी है। इस बीच दीपों ने कई रूप बदले और पुरातन से आधुनिक बन गए। दीपक की यह विकास यात्रा कैसे चली, इस लेख में जानें।

दीपक का सफर हजारों साल पुराना है। पाषाण काल में आदमी ने पत्थर के दीपक जलाना सीख लिया था। इन दीपकों में तेल के स्थान पर पशुओं की चर्बी पिघलाकर डाली जाती थी और वृक्षों की पतली छाल को ऐठाकर बाती बनाई जाती थी। दीपक की इस प्रारंभिक अवस्था के प्रमाण कई पुरातन खोजों में खुदाई के दौरान प्राप्त हुए हैं।

दीपक की यह विकास-यात्रा आगे बढ़ी और सीप से बने दिए अस्तित्व में आए। केवल दीपक का आकार बदल गया था। फिर धीरे-धीरे आदमी ने मिट्टी के दीपक बनाना सीखा। इनमें सरसों, जैतून और शीशम का तेल जलाया जाता था।

धातुओं के आविष्कार के बाद तो दीपक की यह विकास-यात्रा एकदम तेज हो गई। धातुओं को गलाकर-ढालकर सुंदर और कलात्मक दीपक बनाए जाने लगे। ये दीपक न केवल प्रकाश के लिए, बल्कि सजावट के लिए भी बनाए जाते थे। धीरे-धीरे विभिन्न आकृतियों और ऊंचाई के मजबूत दीपक बनने लगे, जिन्हें अमीर लोग तथा राजा-महाराजा अपने महलों में लगाते थे। कई दीपदान तो 6-7 फीट ऊंचे होते थे।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिट्टी और धातुओं के दीपक और उन्हें रखने के लिए सुंदर कलात्मक स्तम्भों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। प्राचीन काल में जब बिजली नहीं थी, धनाढ्य लोग अपने घरों में बड़े-बड़े झाड़-फानूसों में मोमबत्ती या दीये जलाकर प्रकाश किया करते थे। कई घरों में धातु के दीवार-गिर लगाए जाते थे। कलात्मक दीपकों में हुए विकास के बाद नारी की आकृति के बने धातु के बड़े-बड़े दीपक सामने आए। इन्हें दीपांगना अथवा दीप-लक्ष्मी कहा जाता था। यह दीप तत्कालीन भारत में बहुत लोकप्रिय हुए तथा उस समय ऐसे दीपक रखना सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता था। वृक्ष की आकृति के वृक्ष-दीप भी बहुत प्रचलित हुए। इन वृक्ष-दीपों में कई शाखाएं होती थीं और प्रत्येक शाखा पर एक-एक दीपक रख दिया जाता था। वृक्ष-दीप का ऊपरी सिरा किसी देवता या पशु-पक्षी की अनुकृति हुआ करता था।

धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से धर्म-ग्रंथों में दीपक को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। वैदिक काल ही से दीपक की महिमा और उसके महत्त्व का बखान ऋषि-मुनियों द्वारा किया जाता रहा है। कहा गया है कि दीपक सूर्य का ही अंश है। स्कंद-पुराण के अनुसार, दीपक की उत्पत्ति यज्ञ से होना माना गया है। आरती और पूजा-अर्चना के लिए सोने-चांदी और पीतल जैसी धातुओं के विभिन्न आकृतियों वाले कई सुंदर नक्काशीदार दीपक बनाए गए। ये आरती के

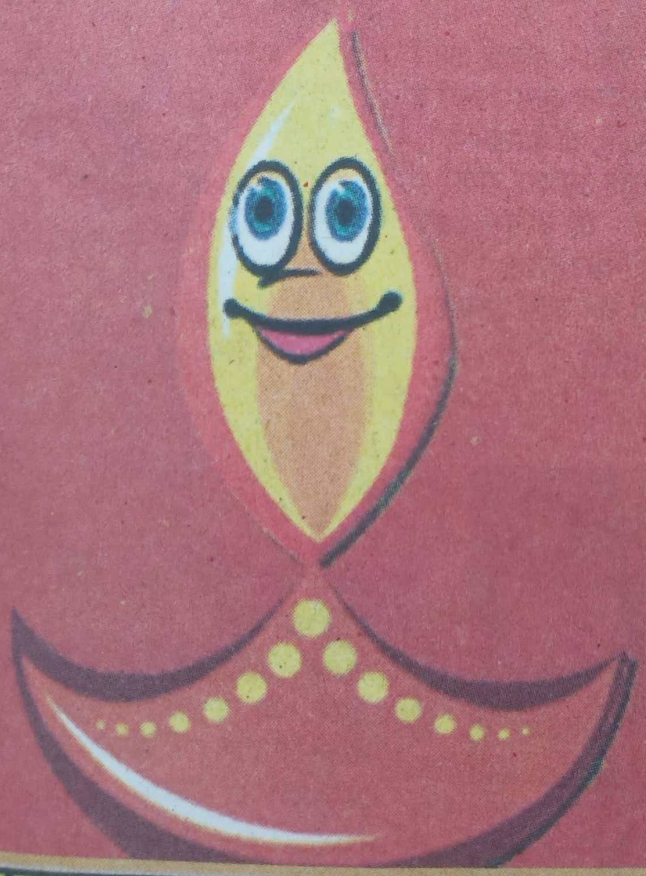

दीपक पंचमुखी और सप्तमुखी हुआ करते थे। मंदिरों के प्रवेश-द्वार पर प्राचीन-काल में बहुत बड़ी आकृति के दीप शेर या हाथी की शक्ल में बने होते थे। दक्षिणी भारत के प्राचीन मंदिरों में आज भी इनकी झलक देखी जा सकती है। कई दीप शेष-नागरूपी पीतल के स्तंभ पर पांच, सात अथवा ग्यारह छोटे-छोटे दीपकों द्वारा बनाये जाते थे।

धार्मिक व्रतों के अवसरों पर नदी के किनारे पत्तों की शैया पर दीप-दान की परम्परा भी प्राचीन काल से चली आ रही है। नदी में एक साथ झिलमिलाते सैकड़ों दीप अत्यंत रोमांचक और मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हैं। दीपक

जलाने की विधि भी शास्त्रों में बताई गई है। दीपक के अचानक बुझ जाने को लेकर भी कई मान्यताएं प्रचलित हैं। दीपक अपनी लम्बी विकास यात्रा तय करके आज इस मुकाम पर पहुंचा है। सोना, चांदी, धातु, सीप पत्थर और अन्य पदार्थों से बने दीपकों के बावजूद आज मिट्टी का दीपक ही सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रचलन में है। अब दीपक का निर्माण कुम्हार के चाक द्वारा होता है।

दीपक का यह सफरनामा अभी खत्म नहीं हुआ है। भले ही आज बिजली के जगमगाते बल्बों और ट्यूबलाइटों ने दीपक की जगह ले ली हो, लेकिन दीपक आज फिर भी हमारे जीवन और संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा बना रहेगा क्योंकि दिवाली दीपक के बिना अधूरी होती है।

-राजकुमार जैन

☺ राहुल- आज से मैंने फैसला कर लिया कि अब शर्त नहीं लगाया करूंगा।
रवि- तुम ऐसा नहीं कर सकते।
राहुल- लगाओ शर्त।

☺ डाकिए की भर्ती के लिए साक्षात्कार चल रहे थे। एक उम्मीदवार से पूछा गया।
साहब- पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी कितनी है?
उम्मीदवार- मुझे अगर वहां चिट्ठियां बांटने जाना पड़ेगा, तो मैं अपना आवेदन वापस लेता हूं।
सवाल पर बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए उम्मीदवार ने जवाब दिया।

☺ नेता- आपने मुझे वादा करके वोट क्यों नहीं दिया?
युवक- आपने भी तो मुझे वादा करके मेरा काम नहीं किया।

☺ मालिक (नौकर के उम्मीदवार से)- हमें एक एक जिम्मेदार नौकर की जरूरत है।
नौकर- साहब, मैं बहुत जिम्मेदार हूं, जहां मैं पहले काम करता था, वहां गलती किसी की भी हो। जिम्मेदार मैं ही ठहराया जाता था।

☺ ग्राहक- वेटर, इस सूप में दो कॉकरोच निकले हैं, जबकि मैंने सिर्फ सूप का आर्डर दिया था।
वेटर- ठीक है साहब, आप सिर्फ सूप के ही पैसे दीजिएगा।

☺ राजू- तुम्हारी मम्मी धीरे कब बोलती है?
ध्यानी- जब उन्हें पापा से कुछ मांगना होता है।
राजू- और जोर से कब बोलती है?
ध्यानी- जब उन्हें वो चीज नहीं मिलती।

☺ अध्यापक- बताओ, अगर किसी का जन्म 1980 में हुआ है, तो वर्तमान में उसकी उम्र क्या होगी?
छात्र- यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि पैदा होने वाला पुरुष था या स्त्री।

☺ ग्राहक- वेटर, जल्दी से एक ऑमलेट ले आओ।
वेटर- साहब, कौनसा इंगलिश, स्पेनिश या फ्रेंच?
ग्राहक- कोई सा भी ले आओ, मुझे ऑमलेट खाना है, उससे बात नहीं करनी।

☺ रवि- 'यार, तुझे लोग ईश्वर कैसे मान बैठे?
राजेश- आज जब मैं पार्क में घूमने गया तो लोगों ने मुझे देखते ही कहा- हे ईश्वर, तू आज फिर आ गया।

पाठकों के चुटकुले

☺ पिता- बेटे, तुम इतने महान बनो कि दुनिया के कोने-कोने में तुम्हारा नाम रोशन हो?
बेटा- पापा महान तो मैं बन जाऊं, पर एक समस्या है।
पिता- क्या?
बेटा- दुनिया गोल है, और उसके चार कोने हो ही नहीं सकते, फिर नाम कैसे चारों कोनों में फैलेगा?

संदीप मिश्रा, मो. रायपुर, (उ.प्र.)

☺ राम- मोहन, बता मेरी टोकरी में क्या है, तो सारे अण्डे तेरे। अगर यह बता दे कि कितने हैं तो आठों तेरे, और अगर ये बता दे कि किस जानवर के हैं, तो मुर्गी भी तेरी?
मोहन- यार, कुछ तो हिन्ट दे।

☺ गोलू- मोलू, पहले पांच साल तक तुम कुत्ते के साथ कॉलेज आते थे। अब क्या हुआ?
मोलू- यार, कुत्ते ने ग्रेजुएट की डिग्री ले ली।

मो. इकबाल अहमद नूरी, समस्तीपुर (बिहार)

☺ पहला मित्र- मुझे आपके उधार पैसे देने में कुछ दिन और लग जाएंगे।
दूसरा- वजह?
पहला- मेरे नानाजी का देहांत हो गया है।
दूसरा- मैं कुछ भी नहीं जानता, तुम मेरे सौ रुपए लौटा दो। कोई भी अपने साथ धन लेकर ऊपर लेकर नहीं जाता।

☺ टीचर- जो भी मूर्ख छात्र हो, वह खड़ा हो जाए।
चार-पांच बार कहने के बाद एक छात्र खड़ा हुआ।
टीचर- तो तुम मूर्ख हो?
छात्र- जी नहीं सर।
टीचर- फिर क्यों खड़े हुए?
छात्र- सर, आप अकेले ही इतनी देर से खड़े थे, इसलिए अच्छा नहीं लग रहा था।

बाबूलाल धाकड़, सिंगौली, नीमच (म.प्र.)

ऊंट को केमल कहते हैं। केमल शब्द अरबी भाषा में गेमल से बना है। जिराफ शब्द की उत्पत्ति भी अरबी भाषा से हुई है।

कैट यानी बिल्ली शब्द, लैटिन भाषा के गाटा शब्द से बना है। बतख यानी डक अंग्रेजी के शब्द से जन्मा है, जिसका अर्थ है- पानी में गोता लगाने वाला।

जिराफ शब्द का अर्थ है- लंबी गर्दन। ऑक्स, काउ, बुल, डीअर आदि शब्दों की उत्पत्ति एंग्लो-सेक्सन भाषाओं से हुई है।

समुद्री पक्षी एल्बेट्रास अपने पंख बिना फड़फड़ाए 15 मील तक उड़ सकता है।

चमगादड़ अंडे नहीं देते, उनके बच्चे सशरीर जन्म लेते हैं।

गोत्र क्या है

हम अपने नाम के आगे जाति-गोत्र लगाते है। हिन्दू परिवारों में शादी से पूर्व गोत्र मिलान होता है उसके बाद ही शादी की बात आगे बढ़ती है। हिन्दू धर्म और वर्णाश्रम व्यवस्था में गोत्र वंश या कुल के पहले व्यक्ति के नाम पर आधारित होता है। प्राय: यह पिता के वंश के आधार पर निर्धारित होता है। आमतौर पर गोत्र किसी न किसी वैदिक ऋषि के नाम से जाना जाता है।

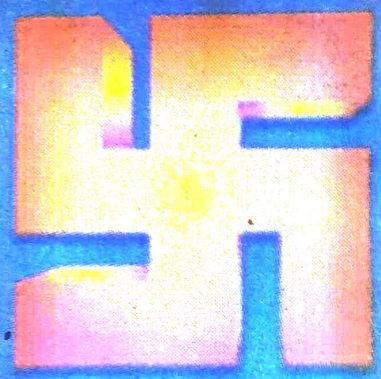

यह धारणा है कि वेदों में वर्णित अनेक ऋषियों में से सात के नामों से वंशानुगत गोत्र को पहले मान्यता दी गई है लेकिन बाद में लोग अपने पूर्वजों में से किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या ऋषि के नाम से भी गोत्र मानने लगे। यही कारण है कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में हर किसी पात्र या व्यक्ति को गोत्र के नाम से भी पुकारा जाता है। आमतौर पर गोत्र पुरुष के नाम से जुड़ा होता है। इसलिए आज जितने भी गोत्र होंगे उनका नाम पुरुष ऋषि मुनियों या महापुरुषों के आधार पर मिलेगा। जैसे-जैसे समय बीतता गया लोग अपने-अपने गोत्र अपनी वंशानुगत परंपरा के आधार पर अपनाते गए। इसलिए गोत्रों की संख्या भी बढ़ती गई।

राम-राज्य

कौशल राजा दशरथ की पत्नियां- कौशल्या (राम की माता), सुमित्रा (लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता), कैकेयी (भरत की माता)।

राजा दशरथ के पुत्र व पुत्रवधुएं- राम-सीता, लक्ष्मण-उर्मिला, शत्रुघ्न-श्रुतकीर्ति, भरत-मांडवी।

राजा दशरथ के राजपुरोहित- महर्षि वसिष्ठ, महर्षि वामदेव।

राजा दशरथ के प्रमुख मंत्री- धृष्ट, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्धन, अकोप, धर्मपाल, सुमंत्र, सिद्धार्थ, अर्थसाधक, अशोक, मंत्रपाल।

राजा दशरथ के मंत्रिमंडल में शामिल ऋषि- सुयज्ञ, जाबालि, कश्यप, गौतम, मार्कण्डेय, कात्यायन।

राजा दशरथ के समधी व उनकी पुत्रियां- मिथिला नगरी के राजा जनक तथा उनकी पुत्रियां, सीता, उर्मिला, सांकाश्या। नगरी के राजा, कुशध्वज तथा उनकी पुत्रियां- मांडवी, श्रुतकीर्ति। राजा जनक तथा राजा कुशध्वज सगे भाई थे।

निषादराज गुह- शृंगवेरपुर के राजा

युधाजित- भरत के मामा।

मंथरा-राजा दशरथ की रानी कैकयी की दासी।

जटायु और संपाति- गिद्ध (दोनों भाई)

ऋष्यशृंग- तपस्वी ऋषि।

परशुराम- ब्राह्मणपुत्र, जमदग्नि ऋषि के पुत्र। परशुराम के पिता जमदग्नि की किसी क्षत्रिय ने हत्या कर दी थी, अत: उन्होंने समस्त क्षत्रिय जाति का विनाश करने की प्रतिज्ञा की थी।

वालि- किष्किंधा का राजा तथा सुग्रीव का भाई। उसकी पत्नी का नाम तारामती तथा पुत्र का नाम अंगद था।

सुग्रीव-वालि का भाई, इसका निवास ऋष्यमूक पर्वत था। वालि की मृत्यु के बाद यह किष्किंधा का राजा बना तथा इसने वालि की पत्नी तारामती को अपनी पत्नी बनाया।

वानर सेना के मुख्य योद्धा- सुग्रीव, अंगद, तार, नील, शतबलि, विनत, सुषेण, हनुमान, जांबवान, नल, गज, मैन्द, द्विविद, ऋषभ, शतानंद, दुर्मुख।

दधिमुख-सुग्रीव का मामा।

यज्ञोपवीत

हिन्दू धर्म में यज्ञोपवीत का अपना एक अलग महत्त्व है। इसको धारण करने लिए धार्मिक उत्सव का आयोजन किया जाता है। यज्ञ-हवन आदि कार्य किए जाते हैं। इसे उपनयन संस्कार भी कहा जाता है। उप का अर्थ होता है निकट और नयन का अर्थ होता है- ले जाना। प्राचीन भारत में जब बालक आठ साल का हो जाता था तो अध्ययन और ज्ञानार्जन के लिए उसे पाठशाला या गुरु के पास ले जाने के समय किए गए संस्कारों को यज्ञोपवीत कहा जाता।

प्राचीन भारतीय परम्परा में जन्म के बाद नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह, मृत्यु आदि समय-समय पर भिन्न-भिन्न संस्कारों का विधान बताया गया है। जीवन में नैतिक दायित्वों के सकुशल निर्वाह के लिए विद्यार्जन को बहुत अहम माना गया है। यज्ञोपवीत संस्कार

में बालक को ज्ञान की महत्ता और उसकी प्राप्ति के उपायों के लिए प्रेरणा देते हुए उसे यह दायित्व दिया जाता है कि जीवन को नैतिकता और सदाचार के साथ कैसे जिया जाय। इसमें उसे जो उपवीत या जनेऊ पहनाया जाता है। उसमें तीन धागे होते हैं और एक गांठ होती है। तीन धागे तीन अलग-अलग दायित्वों के प्रतीक होते हैं। एक ब्रह्म ऋण का, दूसरा पितृ ऋण का और तीसरा गुरु का प्रतीक होता है। इन्हें ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक भी माना गया है। इसकी गांठ आध्यात्मिकता की प्रतीक स्वरूप ब्रह्म-ग्रंथि होती है। आमतौर पर जनेऊ पुरुष पहनते हैं। इसलिए विवाह के बाद अपनी पत्नी की ओर से पति को छह धागों वाले जनेऊ पहनने का प्रावधान है।

दुनिया के देश

आर्मेनिया

आर्मेनिया वर्ष 1920 में सोवियत सोशलिस्ट गणराज्य का एक हिस्सा बना। आर्मेनिया के बारे में महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह पहला देश था, जिसने क्रिश्चियन धर्म को आधिकारिक रूप से अपनाया। ओटोमन तुर्कों के बर्बर शासनकाल (1994-96) के दौरान हजारों नागरिकों को मार डाला गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ओटोमन तुर्कों ने आर्मेनियाई नागरिकों को मध्य एशिया के रेगिस्तान में जाने को मजबूर किया। ऐसा माना जाता है कि छह से आठ लाख आर्मेनियाई इस दौरान भुखमरी से मारे गए। वर्ष 1936 में यह सोवियत संघ का हिस्सा बना। सन् 1989 में नगारनो कराबाक के मुद्दे पर एक असैनिक विद्रोह हुआ। वर्ष 1999 में सोवियत संघ ने इसे स्वतंत्रता प्रदान कर दी और आर्मेनिया राष्ट्रकुल में शामिल हो गया।

एक नजर में आर्मेनिया

आधिकारिक नाम-हयास्तानी हैनरापेटोटियन (आर्मेनियाई गणराज्य)।
राजधानी-येरावान।
मुद्रा- द द्राम।
मानक समय-जी एम टी से 3 घंटे आगे।
भाषा-आर्मेनियाई (आधिकारिक), रशियन।
जनसंख्या-29,82,904
कुल क्षेत्रफल- 29,800 वर्ग किलोमीटर।
जलवायु- गर्मियों में दिन गर्म एवं रातें ठंडी होती हैं। सर्दियों में भारी हिमपात होता है।
मानचित्रानुसार- पहाड़ी क्षेत्र है। कई चोटियां 10 हजार फीट से अधिक ऊंची हैं।
प्रमुख नदियां-ऐरेक्स, ज्वागा।
सर्वोच्च शिखर-माउंट अरागत्स-4,090 मीटर।
प्रमुख बड़े शहर-येरावान, वेनेद्जोर।
प्रति व्यक्ति वार्षिक आय-4,600 डॉलर।
निर्यात-850 मिलियन डॉलर। हीरे, खनिज पदार्थ।
आयात-1. 3 बिलियन डॉलर। प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम उत्पाद, तंबाकू उत्पाद व तेल।
प्रमुख फसलें-गेहूं, आलू, टमाटर, जौ, कपास, अंगूर, बादाम, जैतून, अंजीर।
प्रमुख उद्योग-कृत्रिम रबड़, कपास, बुनाई, शराब निर्माण एवं खाद्य सामग्री
प्रमुख खनिज- ग्रेनाइट, तांबा, एल्यूमीनियम, जिंक।
शासन प्रणाली-गणतंत्रात्मक।
संसद-नेशनल असेंबली।
धर्म-आर्मेनियन अपोस्टोलिक (94 प्रतिशत)
लिंगानुपात-109 पुरुष/100 महिला।
साक्षरता दर -9.86 प्रतिशत।
शिशु मृत्यु दर-23.28/1000 जन्म पर।
औसत उम्र-71.55 वर्ष।
प्रमुख हवाई अड्डा-जेरीवान स्थित ज्वारट्नोट्ज।
इंटरनेट कोड- .am

TWISTER

* Dear mother, give your other udder to my other brother.
* The Smothers brothers' father's mother's brothers are the Smothers brothers' mother's father's other brothers.
* No need to light a night light on a light night like tonight.

The Magical Ink

Once there lived a girl called Roma. One day when she was watching T.V. she saw a programme of how to make magical ink that can do homework. So she decided to make it right away as she would no longer have to do her homework.

She asked her mother for the ingredients. She did not tell her the reason for what she wanted them because then her mother won't allow her to make it.Then Roma took the ingredients into the kitchen. After taking mother's permission she took a bowl for mixing and mixed a bit of coloured powder (blue coloured powder for the colour of the ink), a bit of grains and some water as instructed. Then she put the mixture into the mixer for grinding.

I suppose her mother was hearing all the chaos in the kitchen. But she was least bothered now.Roma was thinking that this substance could make her very famous in her class.

Roma was waiting to make the magical ink fully successful by pouring it in the ink pen. While Roma was thinking about all this, the ink was ready. Her excitement knew no bounds. Roma put the ink in a special container and labeled it- THE MAGICAL INK.

Now the last step remaining was to pour the ink into the pen. But suddenly she got a jerk and the ink bottle fell on the floor and broke. She got very angry. She thought her sister was pushing her, so she shouted. But she heard a soothing response, " Dear, calm down.It's only a dream. " It was her mother 's voice. She realised that her mother had pushed her a little to wake her up. But still she thinks that Magical Ink can be created. So Roma is going to make the ink again! ! Therefore she needs your best wishes to help her in the great event.

-Sayali

Deepavali Delights

Deepavali is here, Deepavali is here
That grand festival of Lights
That ends evil after a protracted fight
When good with all its might
Leads us from darkness to Light.

Deepavali is here, Deepavali is here
That great festival of sound
When crackers and laughter abound
When crackers and sparklers light up the sky
When delighted children jump with joy.

Deepavali is here, Deepavali is here
That gorgeous festival of snacks and sweets
Where everyone enjoys a royal feast
When old and young with delight meet
With love and affection all hearts beat.

Diwali is here, Diwali is here
That gracious festival which celebrates victory
The ancient festival of myth and mystery
That is mentioned in both mythology and history
The festival that signals Triumph over Tragedy.

FESTIVE QUOTES

* Life is a festival only to the wise.
* You are invited to the festival of this world and your life is blessed.
* The truth is that existence wants your life to become a festival...because when you are unhappy, you also throw unhappiness all around.

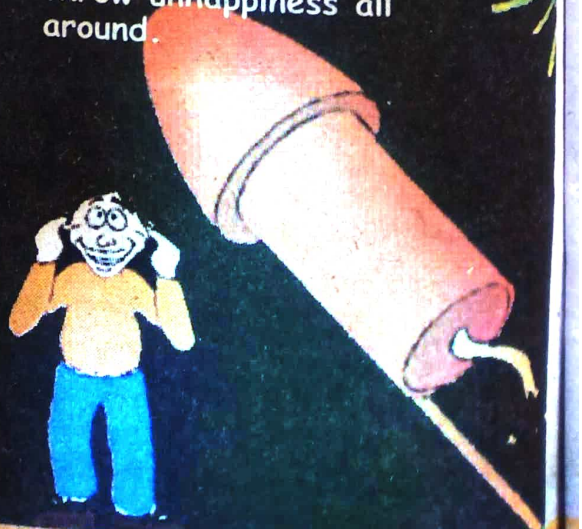

Lesson- 74

बोलो अंग्रेजी

बच्चो, इस बार तुम्हें आदतों से संबंधित वाक्य दिए जा रहे हैं। ऐसे वाक्य अक्सर रोजमर्रा की बोलचाल में आते हैं। यदि इन वाक्यों को समय-समय पर बोलते रहें तो ये स्वयं ही आदत में आ जाते हैं। स्पोकन इंगलिश के लिए ऐसे वाक्यों का निरंतर अभ्यास बहुत लाभदायक होता है।

1. उसने नाक में दम कर रखा है।

He is a nuisance.

ही इज ए न्यूसेन्स।

2. वस्तुतः ऐसा गलती से हो गया।

Actually, It was done by mistake.

एक्चुअली, इट वॉज डन बाइ मिस्टेक।

3. वह फिजूल की बातों में अपना समय गंवाता है।

He wastes his time in gossiping.

ही वेस्ट्स हिज टाइम इन गोसिपिंग।

4. उसने मेरे विश्वास को ठेस पहुंचाई।

He has let me down.

ही हैज लैट मी डाउन।

5. मुझे उससे चिढ़ आती है।

He irritates me.

ही इर्रीटेट्स मी।

6. वह अपनी बात का धनी नहीं है।

He doesn't keep his words.

ही डजन्ट कीप हिज वर्ड्स।

7. उसने मुझे धोखा दिया।

He has betrayed/ cheated me.

ही हैज बिट्रेड/ चीटेड मी।

8. मुझे गुस्सा मत दिलाओ।

Don't make me lose my temper.

डोंट मेक मी लूज माइ टेम्पर।

9. वह गधा है।

He is a duffer.

ही इज ए डफर।

10. आप व्यर्थ में लाल-पीले हो रहे हो।

You are unnecessarily getting annoyed.

यू आर अन्नेसेसरिली गैटिंग अनॉय्ड।

Word-Power

Art	कला
Artful	कुशल
Articulate	स्पष्ट, साफ, जोड़ना
Artist	कलाकार
As	समान

Antonyms

Violence- हिंसा	Nonviolence- अहिंसा
Fotune- भाग्य	Misfortune- दुर्भाग्य
Arrogant- उग्र	Humble- विनम्र
Arrival- पहुंचना	Departure- रवाना होना

Synonyms

Strenuous- उत्साही, उद्यमी
Ardent, Energetic, Resolute, Vehement, Vigorous, Zealous.

चाइल्ड मुहावरे

Be child's play (बी चाइल्ड्स प्ले)
यानी बहुत सरल होना, बहुत आसान होना।
To be very easy.
इसका प्रयोग इस तरह से कर सकते हैं।
Using this new computer is child's play.

Be like a child in a sweetshop-
यानी बहुत उत्साहित होना, बहुत खुश होना। जैसे बच्चे मिठाइयां देखकर खुश होते हैं, और अपने आप पर संयम नहीं रख पाते कि ये मिठाई लूं या वह मिठाई लूं या सब ले लूं। इसका प्रयोग इस प्रकार करेंगे-
Give him a room full magazine and books and he's like a child in a sweet-shop.
इसके लिए अमरीकी और ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी में
Be like a kid in a candy store
(बी लाइक ए किड इन ए कैंडी स्टोर कहते हैं)

The child from hell- (द चाइल्ड फ्रॉम हेल)
(हास्य में) यानी बहुत शरारती, बहुत बदमाश। यहां चाइल्ड की जगह मदर, वूमन का भी प्रयोग होता है। जैसे मदर फ्रॉम हेल, या वूमन फ्राम हेल।
Gullu is notorious for playing pranks. He is always involved in one or the other kind of mischief. He really is a child from hell.

(अगले अंक में जारी)

पटाखे चलाएं जरा संभलकर

बच्चो, दिवाली का त्योहार सभी हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। त्योहार की उमंग और उत्साह में लोग भूल जाते हैं कि पटाखों की रोशनी जहां मन को खुशियों से भर देती है, वही इससे होने वाली हानियां खुशी से ज्यादा नुकसान पहुंचाती हैं।

इस पर्व को धूमधाम से मनाने के लिए करोड़ों रुपए के पटाखे खरीदे जाते हैं और कुछ ही पलों में हम पटाखे जला कर इस धन का अपव्यय कर डालते हैं।

सिर्फ खुशी के प्रदर्शन के लिए इतने सारे पटाखों की आवश्यकता नहीं होती। नन्हीं-नन्हीं झिलमिलाती फुलझड़ियों एवं रोशनी देने वाले छोटे-छोटे पटाखे भी मन में उमंग पैदा कर सकते हैं। वैभव प्रदर्शन और एक-दूसरे की होड़ में जितने धन का अपव्यय होता है, उसका सदुपयोग किसी विकास कार्य में किया जाए तो कितने ही लोगों का जीवन संवर जाए।

आर्थिक पहलू के साथ-साथ पटाखों को चलाने से पर्यावरण को भी बहुत हानि पहुंचती है। इनसे निकले जहरीले धुएं से वातावरण प्रदूषित हो जाता है। ये धुआं श्वसन के जरिए हमारे फेफड़ों में जमकर हमें बीमार कर देता है। पटाखों के कारण कई पशु-पक्षी मारे जाते हैं, सो अलग।

इसी तरह तेज आवाज के पटाखे चलाकर खुश होने वाले ये सोच भी नहीं सकते कि इस ध्वनि प्रदूषण के परिणाम कितने घातक हो सकते हैं। सुनने की क्षमता से यह शोर ज्यादा होने पर कान के पर्दों को भी नुकसान पहुंचाता है। पटाखे चलाते समय हाथ में फूट जाने या आग लग जाने से हर वर्ष कितनी ही जानें जाती हैं और दिवाली का उजाला अंधेरे में बदल जाता है।

हालांकि आज पर्यावरण और लोगों को नुकसान एवं बीमारी से बचाने के लिए आतिशबाजी से होने वाले नुकसान के प्रति लोगों को जागरूक बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन हर घर-विद्यालय स्तर पर भी प्रयास होने चाहिए।

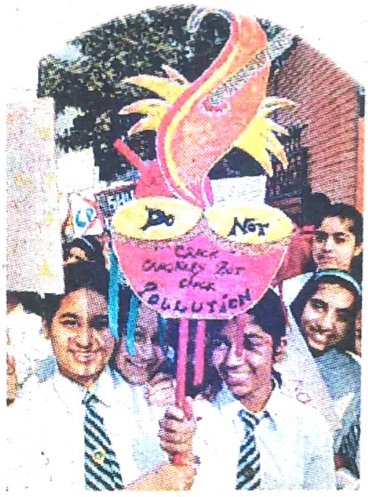

पटाखे छुड़ाते समय सावधान रहना बहुत जरूरी है। कई बार जोश में बच्चे सब कुछ भूल जाते हैं और ऐसी कई सामान्य सी बातों को भूल जाते हैं जो पटाखे छुड़ाते समय याद रखी जानी चाहिए।

-आतिशबाजी चलाते समय सूती कपड़े ही पहनें। पैरों में चप्पल, जहां तक हो सके जूते पहनें, ताकि अधजले एवं गर्म पटाखों से पैर ना जले।

- पटाखे जेब में भरकर ना घूमें। पटाखों के बक्से को गर्मी पैदा करने वाली चीजों के करीब ना रखें। इसमें विस्फोट होने की आशंका रहती है। अधजले पटाखों को न उठाएं।

-बम को हाथ में लेकर चलाने की गलती ना करें और ना ही उसका कागज निकालकर बत्ती निकालने की चेष्टा करें।

-फुलझड़ी चलाते वक्त हाथों को बहुत घुमाएं नहीं। इसकी छोटी-सी चिंगारी भी बड़ा हादसा कर सकती है।

-पटाखों को तेज आवाज के लिए टिन के डिब्बों या मटके रख कर ना चलाएं। धमाके के साथ इनके उड़े हुए टुकड़ों से किसी को भी चोट लग सकती है।

-रॉकेट चलाते वक्त भी इसका सिरा ऊपर की ओर ही रखें। इस खतरनाक पटाखे के कारण सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं।

-आतिशबाजी करने के लिए बेहतर होगा कि एक समूह बनाकर कॉलोनी या मोहल्ले के खुले मैदान में एकत्र हों और आतिशबाजी का आनंद उठाएं। इससे कम पटाखों में आप ज्यादा से ज्यादा मजा ले पाएंगे। तो इस बार आतिशबाजी का आनंद लेकर अपने पर्यावरण और सभी के प्रति सचेत रहते हुए दीवाली का मजा लें।

दोस्तो, इस कॉलम में शख्सियतों के बचपन की रोचक जानकारियां दी जा रही हैं। इस बार जानें संगीतकार ए.आर. रहमान के बचपन के बारे में....

खेलते-खेलते संगीत से जुड़ गया

मेरा बचपन

मैं आपका दोस्त हूं, ए.आर. रहमान। संगीत की दुनिया में जो नयापन है, मैं उसे खोजता हूं और संगीत की दुनिया में खो जाना मुझे पसंद है। आपको भी उद्यम करने के नए तरीके खोजने में मजा आता है और आप भी अपनी ही दुनिया में खोए रहते हैं, तो आप सभी और मैं एक जैसे हुए। जब दो एक जैसे लोग मिल जाएं तो बातचीत करने में मजा आता है। दोस्तो, मेरे घर पर संगीत की परम्परा थी। पहले हमारे पुरखे 'हरि कथा' किया करते थे। पिताजी, आर.के. शेखर, एक जाने-माने संगीतकार थे। घर में बहुत से वाद्य-यंत्र रखे रहते थे। इसलिए मैं बचपन से ही वाद्य-यंत्रों से खेलते-खेलते संगीत से जुड़ गया। अगर आपके पिताजी या दादाजी भी इस तरह की कोई कला जानते हों तो आपको उनसे सीखना चाहिए।

उन दिनों पिताजी सिंगापुर से यूलीलॉक्स और क्लेवॉयलिन (आज के जमाने के मुताबिक सिंथेसाइजर) लाए थे। इन दोनों ही वाद्यों की मधुरता मेरे मन में बैठ गई। छुटपन में कोई भी चीज हमें जल्दी अच्छी लगती है, तब सीखने में भी सुविधा रहती है। शुरुआत में ये महंगे वाद्य थे इसलिए मुझे इन्हें हाथ नहीं लगाने दिया जाता था। चार साल की उम्र में ही मैं उस वाद्य के सफेद और काले बटन (की) से खेलने लगा।

मैं पिताजी को देखता था कि वो काम के लिए दिन-रात मेहनत करते थे। दुर्भाग्य से जब मैं 9 साल का हुआ तो पिताजी चल बसे। इसलिए 11 साल की उम्र तक मुझे भी घर के लिए पैसे कमाने की जरूरत हुई और मैंने काम भी किया। मैंने कुछ नाटकों में काम करके घर के लिए छोटी-मोटी कमाई की। दक्षिण के प्रसिद्ध संगीतकार और मेरे गुरु इलयाराजा के ग्रुप में भी मैंने सिंथेसाइजर बजाया और पैसे कमाए।

मुझे एक बात से चिढ़ होती थी कि भगवान हमारे दुखों को देखते हुए हमारी कोई मदद नहीं कर रहा है। यहीं से मैंने ईश्वर को मानना छोड़ दिया था। कुछ समय बीता। एक बार मेरी बहन बहुत बीमार हो गई। हमने बहुत डॉक्टरों को दिखाया पर उसकी हालत में कोई सुधार ही नहीं हो रहा था। हम सारी कोशिश करके देख चुके थे। तभी एक पीर बाबा कादीमुल्ला शाह काफरी ने बहन के सिर पर हाथ रखा और उसके लिए दुआ की। बहन ठीक हो गई। पीर बाबा ने मुझे समझाया कि पूरी दुनिया ईश्वर की वजह से ही चल रही है। वह हमें दुख देता है तो सुख भी वही देता है। इस तरह ईश्वर में मेरा भरोसा लौटा।

कुछ दिन बाद मां मुझे एक ज्योतिषी के पास ले गईं और उन्होंने मुझे दिलीप कुमार की जगह नया नाम दिया अब्दुल रहमान शार्ट में ए.आर. रहमान। यह जो आर लगा वह पिताजी की याद दिलाता है। ज्योतिषी का कहना था कि इस नाम से मैं बहुत बड़ा आदमी बनूंगा। जब कोई हमारे बारे में ऐसा कहता है तो हम ज्यादा मेहनत करते हैं और उनकी बात सही करके दिखाते हैं। मैंने भी ऐसा ही किया। बाद में नौशाद अली की सलाह पर ए.आर. का मतलब अल्लाह रक्खा हो गया। बाद के सालों में मैंने लंदन के ट्रिनिटी कॉलेज ऑफ म्यूजिक से स्कॉलरशिप प्राप्त की और वहां से म्यूजिक की शिक्षा लेकर भारत लौटा। एक बात मेरे साथ रही कि किसी भी मुश्किल में खुद को संगीत से अलग नहीं होने दिया। पर यह भी सच है कि हम कितनी ही अच्छी शिक्षा पा लें, अगर माता-पिता की दुआएं हमारे साथ नहीं हैं तो हमें तरक्की नहीं मिलती। इसलिए कभी भी माता-पिता का दिल नहीं दुखाना। आप भी उनकी हर बात मानना। उनके साथ रहना। और हां, ईश्वर में भी यकीन बनाए रखना। आज जब भी मैं परेशान होता हूं तो ईश्वर को याद करता हूं। वह हर मुश्किल आसान कर देता है। आप भी ऐसा ही करना। मेहनत करते रहना। ईश्वर उन्हीं की मदद करता है जो मेहनत करते हैं।

तुम्हारा
ए.आर. रहमान

मेरियन के पिता ने रॉबर्ट के साथ अपनी बेटी को पहली बार देखा था। इधर रॉबर्ट से भी वे आमने-सामने पहली बार मिले थे। राबर्ट जानता था कि मेरे पिता इन्हीं के कारण आज कैदखाने में हैं। इधर मेरियन के पिता जान चुके थे कि रॉबर्ट अपने पिता की तरह खरा और अंत तक लड़ने वाला है। यह डर उनके मन में कहीं बैठ गया था कि फिटजुथ को भले ही कैद करवा दी गई हो, पर रॉबर्ट तो उससे भी ज्यादा खतरनाक हो सकता है....

अनाथ हुआ रॉबिन

पहली ही मुलाकात में रॉबर्ट ने मेरियन के पिता को अपने तेवर दिखा दिए थे। फिर भी रॉबर्ट उसके पिता का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। वह केवल क्रोध से तिलमिलाकर रह गया। रह-रहकर उसके कान में अपने पिता के लिए कहे गए अपशब्द गूंज रहे थे। उसे अफसोस हो रहा था कि वह मेरियन के पिता को कोई कठोर उत्तर क्यों नहीं दे सका। और तो और उसे मेरियन के जाने से भी दुःख पहुंचा था, उसके आने से वह कितना सुखी महसूस कर रहा था। मां के बाद और पिता के जेल चले जाने के बाद अगर वह किसी से अपनी बात कह सकता था, तो वो मेरियन ही थी। मेरियन के साथ बिताए सारे पल उसे अच्छी तरह से याद थे। और याद थी वो प्रतिज्ञा। उसने प्रतिज्ञा की कि वह मेरियन के साथ किए वादों को कभी नहीं भूलेगा, और केवल कर्म पर ही विश्वास करेगा। उसका एकमात्र लक्ष्य होगा कि पहले वह अपने आप को धनुर्विद्या में निपुण करे। यही सब सोचकर वह रोजाना अभ्यास में लग गया।

इधर मेरियन का पिता यह समझ चुका था कि मेरियन रॉबर्ट से हर हाल में मिलेगी ही। डराकर उसे ज्यादा दिनों तक रॉबर्ट से दूर नहीं रखा जा सकता। इसी बात से तंग आकर वे इस बात पर विचार करने लगे कि मेरियन को किस उपाय से रॉबर्ट से दूर किया जाए। सबसे पहले उन्हें विचार आया कि क्यों न मेरियन को यह जगह ही छुड़वा दी जाए। वह चापलूस तो था, राजमहल में बात करके मेरियन को रानी की सेवा में रनिवास भेजने का प्रबन्ध कर लिया। जब मेरियन को इस बारे में पता चला तो उसने अपनी ओर से वह सब कोशिश की, जिससे वह रनिवास न जा सके। लेकिन पिता के आगे उसकी एक न चली और उन्होंने मेरियन को अपने अंगरक्षकों के साथ रनिवास में सेवा के लिए लंदन शहर को रवाना कर दिया।

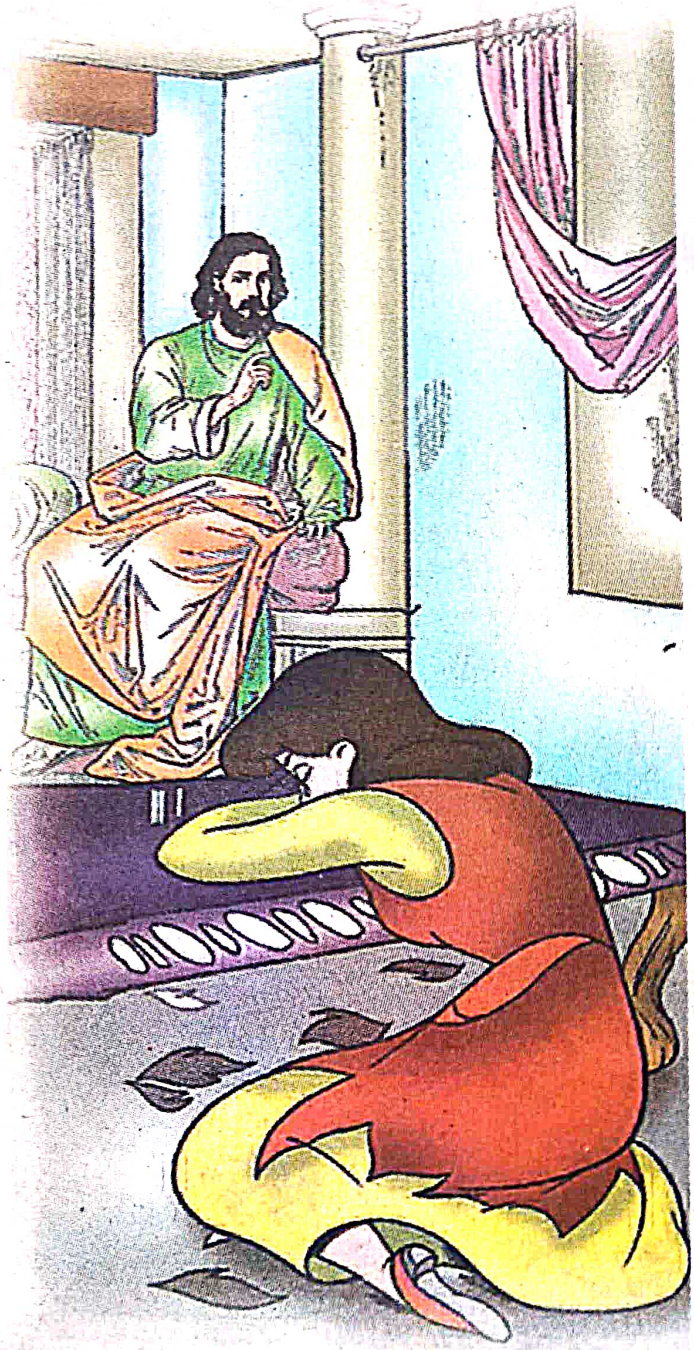

इधर जब रॉबर्ट के पिता को पता चला कि उनकी पत्नी चल बसी है, तो उनके दुःख की कोई सीमा न रही, वे किसे कहते? अपमान का दुःख क्या कम था कि पत्नी भी साथ छोड़ गई। वह पत्नी जिसने उनके हर सुख-दुःख में साथ दिया था, वह भी छोड़ चली। यह सब सोचकर रॉबर्ट के पिता अब उदास रहने लगे। उसके अन्दर जीने की इच्छा समाप्त होने लगी थी। वे भी बीमार रहने लगे। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा। जिसे जीने की ही इच्छा न हो उसे ज्यादा दिनों तक कोई भी जीवन नहीं दे सकता। उनके जीवन की अवधि कम होती जाती है। ऐसी ही उदास और अनिच्छा की हालत में आखिर वे भी एक दिन चल बसे!

(अगले अंक में जारी)

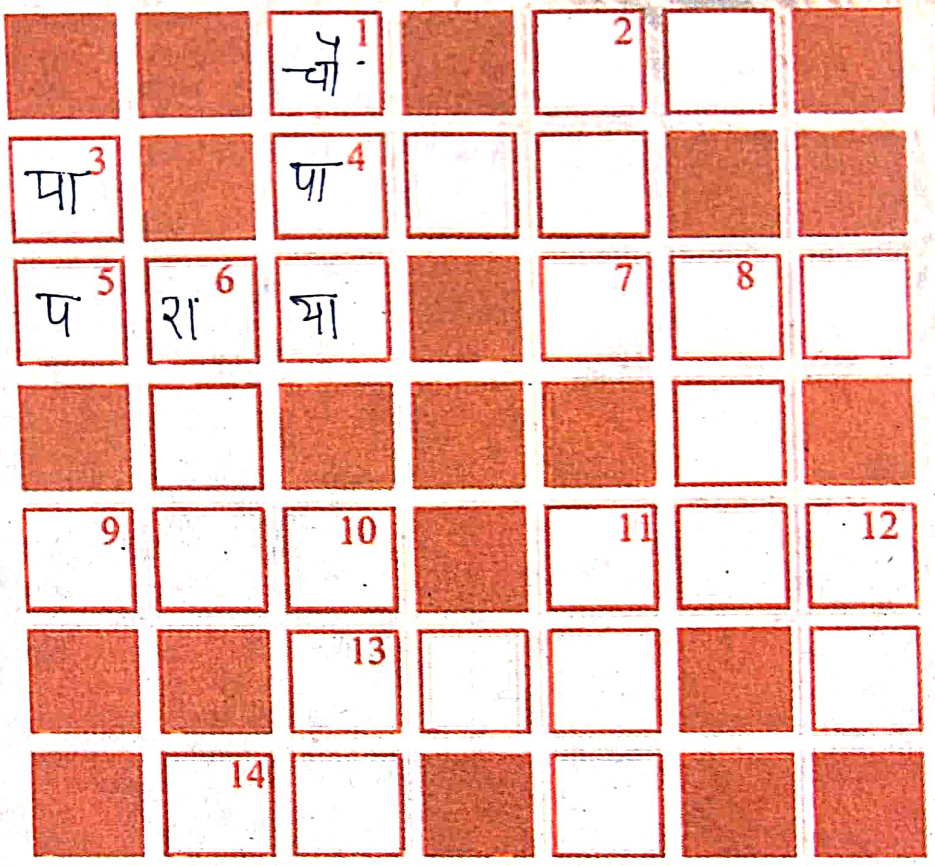

वर्ग पहेली

बाएं से दाएं

2. कुंती का सबसे बड़ा पुत्र, कान (2)
4. ईसाई धर्म का पुरोहित (3)
5. दूसरा, जो अपना न हो (3)
7. उपवन, वाटिका, छोटा बगीचा (3)
9. पुलकित, खुश (3)
11. किसी चीज पर अंकित प्रतीक, मुद्रा (3)
13. दैत्य, असुर (3)
14. बांह, भुजा, पक्ष (2)

ऊपर से नीचे

1. चार पैरों वाला, पशु (3)
2. निकट, पास (3)
3. अधर्म, अपराध (2)
6. वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो (3)
8. गांठ, ग्रंथि (3)
10. कांटा, सामान तौलने का उपकरण (3)
11. रस्सी की बनी जाली, जो बैलों के मुंह पर बांधी जाती है (3)
12. नस, नाड़ी, हठ (2)

-देवांशु

बुला रहा है फिनलैंड

फिनलैंड में प्रकृति ने अपना खूब प्यार लुटाया है। यह वही नोकिया वाला फिनलैंड है, जिसका मोबाइल सैट आपमें से कइयों के पास होगा। प्रकृति की भरपूर छटा का आनंद लेने इस बार चलते हैं, झीलों, संग्रहालयों, बाग-बगीचों वाले नीले शहर फिनलैंड की सैर पर.....

फिनलैंड को यहां के लोग अपनी भाषा में सौमी फिनलैंड कहते हैं। इसका अर्थ होता है बेहद खूबसूरत। यहां सबसे मुख्य बाजार सेन्ट्रल हेलसिंकी का है और सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन भी इसी नाम से है। फिनलैंड की यात्रा के दौरान ऐसा महसूस होता है कि मानो ऋतुओं के देवता ने सभी ऋतुओं के प्रकाश से शहर को नहला दिया हो। इन चारों ऋतुओं और प्रकृति का अद्भुत आनंद उठाने के लिए यह शहर उपयुक्त है।

फिनलैंड में कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। जिनका आनंद आप उठा सकते हैं। जैसे-लोकल म्यूजिक चेम्बर म्यूजिक, फोक, पॉप, रॉक डांस, नाटक, साहित्य और विजुअल आर्ट्स सहित अन्य।

नोकिया शहर फिनलैंड के एक शहर का नाम है। नोकिया का जो मोबाइल हम उपयोग करते हैं वे इसी शहर में बनते हैं। यह मोबाइल बनाने वाली कंपनी फिनलैंड के नोकिया शहर में ही है। हेलसिंकी फिनलैंड की राजधानी है। यह फिनलैंड का सबसे बड़ा शहर है। फिनलैंड का मौसम बहुत ही सुहावना और मनमोहक है। गर्मियों के समय रात बारह बजे के बाद कुछ अंधेरा होता है इसके पहले दस बजे के आस-पास तो ऐसा लगता है कि जैसे अभी-अभी शाम हुई है। जबकि ठंड के वक्त दिन में अधिकांश अंधेरा होता है। दोपहर में कुछ समय के लिए सूरज देव के दर्शन हो पाते हैं, है ना यह अद्भुत नजारा!

व्हाइट चर्च

नेशनल आर्काइव्ज

हेलसिंकी का एक बाजार

फिनलैंड की ट्रेडिशनल फिनिश पेस्ट्री

सीना बाथ फिनलैंड में बहुत ही प्रसिद्ध है। सुनने में यह शब्द थोड़ा अजीब लगता है। पर असल में यह एक प्रकार का स्नान होता है। एक कमरे में एक बड़ा-सा पत्थर होता है इस पत्थर को लाल हो जाने तक गर्म किया जाता है। गर्म हो जाने पर इस पर पानी डाला जाता है। पानी डालने पर निकलने वाली भाप से लोग नहाते हैं। इस तरह का स्नान सप्ताह में एक बार किया जाता है। इसी को सीना बाथ कहा जात है। फिनलैंड एक ठंडा देश है। यहां लोगों को पसीना नहीं आता है इसलिए अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए इस तरह का स्नान किया जाता है।

वाइफ केयरिंग कॉन्टेस्ट यहां का एक मनोरंजक खेल है। इस खेल में पति अपनी पत्नी को गोद में उठाकर दौड़ लगाता है। जो इस दौड़ में जीतता है उसे अपनी पत्नी के वजन का टेडी बीयर दिया जाता है।

सप्ताह के अंत में यहां के लोग बहुत मौजमस्ती करते हैं। शुक्रवार की शाम से ही मनोरंजन शुरू हो जाता है। क्लब जाना, डिस्को करना यहां के लोगों का शौक है। यहां के लोग बहुत सुंदर होते हैं। सबकी आंखें नीली होती हैं।

संत निकोलस चर्च यहां का सबसे बड़ा चर्च है। यह पर्यटकों का सबसे पसंदीदा चर्च है। इस चर्च के बारे में कहा जाता है कि यहां आए जो भी मांगेंगे, इच्छा जरूर पूरी होगी। अगर आप संसार की सबसे महंगी शादी करना चाहते हैं तो चले आएं इस चर्च में सात लाख पचास हजार यूरो लेकर। असल में यही वो चर्च है जहां सबसे महंगी यादगार शादी होती है।

कोप्पटोर बाजार यहां का सबसे बड़ा मछली बाजार है, जहां सब तरह की मछलियां मिलती हैं। हां थोड़ी महंगी जरूर हैं। हेलसिंकी जू यहां का बहुत बड़ा जू है। यह एक आइलैंड पर बसा हुआ है। इसलिए यहां जाने के लिए आपको बोट से जाना पड़ेगा। यहां दुनिया भर के कई पक्षियों के दर्शन हो जाएंगे। यहां जानवरों के रहने के लिए इतने सुंदर घर बने हैं कि यकीन नहीं होगा कि यहां जानवर रहते हैं।

लिना मेकी पार्क यहां का सबसे बड़ा पार्क है। यह बहुत ही सुंदर है। यह पार्क देखते हुए आप समुद्र के बारे में इसमें रहने वाले प्राणियों के बारे में बहुत गहराई से समझ पाएंगे। यहीं आप शार्क, डॉल्फिन, व्हेल आदि मछलियों को देख पाएंगे। लेपलैंड फिनलैंड का एक बेहद खूबसूरत शहर है। कहते हैं कि यह सांताक्लॉज का घर है। यहां क्रिसमस के समय ही जाया जाता है और यहां होने वाले उत्सवों का मजा लिया जाता है। इतना कुछ देखने-जानने के लिए...। तो कब जा रहे हैं इस नीले देश के सुहाने सफर पर। जहां प्रकृति पलक बिछाकर आपका इंतजार कर रही है।

प्रस्तुति: मधु

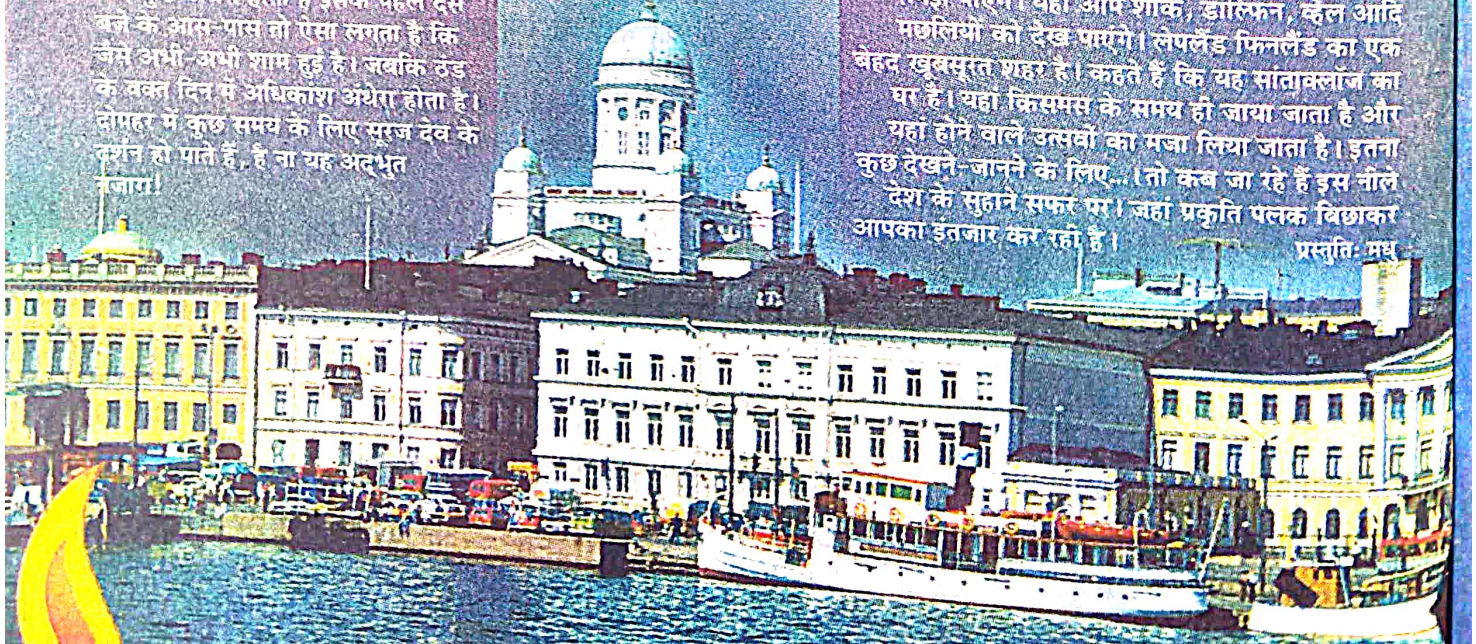

देखो तो भी, ना देखो तो भी...

अक्सर देखा जाता है कि टीवी के प्रति बच्चे बड़े क्रेजी होते हैं। कई बार तो बाहर खेलने से भी कतराते हैं। सिर्फ टीवी के सामने बैठना ही भाता है। अभी तक माना जाता था कि इससे उनको मानसिक और शारीरिक हानि होती है।

एक वैज्ञानिक शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकला है कि छोटे बच्चे टीवी देखें या ना देखें पर अगर वे टीवी चलते समय उस स्थान पर मौजूद हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें नुकसान हो रहा है। शोधकर्ताओं के मुताबिक कमरे में बच्चा भी खेल या पढ़ रहा है, तथा टीवी भी चल रहा है, तो बच्चे के कानों में पीछे चल रहे टीवी के कार्यक्रम की आवाज उसकी मानसिक एकाग्रता को भंग करेगी। इससे उसके सीखने की समझ को कम करेगी। ऐसे में वह सीखने या पढ़ने की एकरूपता को बनाए नहीं रख पाएगा। इसलिए पढ़ाई और टीवी एक साथ नहीं।

सबसे पहले मां-पापा

काफी तकनीकी प्रयास के बाद अब वैज्ञानिकों को भी यह समझ आ गया है कि छोटा बच्चा सबसे पहले मम्मी-पापा शब्द ही क्यों बोलना शुरू करता है।

बैंकूवर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने यह पता लगाने के लिए चालीस बच्चों को लेकर बीस-बीस बच्चों के दो ग्रुप बनाए। इनमें एक ग्रुप को टाटा, मामा, पापा आदि शब्द सिखाए गए। दूसरे ग्रुप को मगामा, मेगापु, पेनापा आदि शब्द सुनाए गए। सिखाने का यह दौर कई दिनों तक चला। अभ्यास में पता चला कि जैसे ही एक जैसे अक्षर वाले शब्द का उच्चारण होता है तो बच्चे के बाएं हिस्से में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है और वह ज्यादा सक्रिय हो जाता है। लेकिन दूसरे मे गा पु आदि टेढ़े शब्दों में ऐसा नहीं होता था। कई और निष्कर्ष भी निकलकर आए कि बच्चा कई चीजें सीखकर आता है, जैसे खाना निगलना, एक जैसे शब्दों की पहचान करना। इसीलिए दुनिया में मां-पापा आदि से संबंधित नाम एक जैसे शब्दों से मिलकर ही बने होते हैं। हिंदी में भी मामा, पापा, काका, दादा आदि होते हैं। अंग्रेजी में भी मम्मा, डैडी या मम्मी होते हैं।

अरे! यहां तो खतरा है!

क्या कभी आपने इस रहस्य को जाना कि हर बार चूहा आपसे और बिल्ली से कैसे बचकर भाग जाता है। दरअसल उसमें एक विशेष प्रकार का सेंसर काम करता है। इसे आप उसका राडार भी कह सकते हैं। ये सेंसर सभी स्तनधारी प्राणियों में होते हैं। चूहे की बात की जाए तो चूहे की नाक के ठीक ऊपर छोटे-छोटे माइक्रोस्कोपिक बालों का गुच्छा होता है। चूहे किसी भी खतरे को भांपते ही हवा में ऐसे अणु छोड़ते हैं। दूसरे चूहों के नाक पर लगा अलार्म सेंसर तुरंत उस एरिया में आने पर खतरे का संकेत पाते ही वहीं रुककर मुड़ जाता है और खतरे से बच जाता है। इसे ग्रुनबर्ग गेंगलिन कहा जाता है। यह सिस्टम बंदर, बिल्ली में भी होते हैं। यहां तक कि इंसानों में भी पाए जाते हैं। कोरिया विश्वविद्यालय के एक परीक्षण में चूहे के इन बालों को काट दिया। परीक्षण में वह खतरे को ना भांपकर आगे गया, जबकि अन्य चूहे खतरा भांप कर तुरंत लौट गए। इंसान का दिमाग भी अचानक खतरे में दिमाग के संकेत से पहले ही प्रतिक्रिया इसी आधार पर कर देता है।

गणित में महारथी हाथी

ऐसा नहीं है कि पृथ्वी पर इंसान ही गणित की समझ रखता है। हाथी भी गणित में माहिर होते हैं। एशियाई हाथियों पर किए गए एक सर्वेक्षण से यह बात साबित हुई है।

हाथियों का अंकों और जोड़ बाकी के बारे में ज्ञान मालूम करने के लिए जापान के एक जंतुआलय में सर्वेक्षण किया गया। इस परीक्षण में मादा हाथी के सामने चारों ओर से ढके, और ऊपर से खुले दो डिब्बे रखे गए। पहले डिब्बे में तीन और दूसरे डिब्बे में पांच सेब डाले गए। सेब इस तरह से डाले गए कि हथिनी उन्हें देखती रहे। कुछ देर बाद इन डिब्बों में 2-2 सेब फिर डाले गए। फिर हथिनी को छोड़ा गया, तो हथिनी ने उस डिब्बे को चुना जिसमें सेबों की संख्या अधिक थी। हथिनी ने न केवल सेबों की संख्या याद रखी बल्कि उसने जोड़कर भी सोच लिया कि किस डिब्बे में ज्यादा सेब हैं।

कुत्ते के कान उन उच्च आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) वाली ध्वनियों को भी सुन सकते हैं, जिन्हें सुनने में मनुष्य के कान पूर्णतया अक्षम रहते हैं।

सूर्य का 95 प्रतिशत हाइड्रोजन व हीलियम गैसों से बना है।

चंद्रमा का प्रकाश वास्तव में सूर्य का परावर्तित प्रकाश ही होता है।

* जन्मजात नेत्रहीनों के सपनों में दृश्यों के स्थान पर केवल ध्वनियां होती हैं।

* फेंफड़ों में 300 अरब नन्हीं-नन्हीं रक्त वाहिनियां होती हैं। अगर इन्हें आपस में जोड़ दिया जाए तो इनकी लंबाई 1500 मील हो जाएगी।
* अब्राहम लिंकन अमरीका के पहले राष्ट्रपति थे, जिनकी हत्या गोली मारकर की गई थी।

पेलिकन पक्षी की चोंच का थैला (pouch) इतना फैल सकता है कि उसमें 3 गैलन पानी तथा 30 पौण्ड मछलियां समा सकती हैं।

फिलीपींस में पाई जाने वाली बोया चिड़िया अपना घोंसला बनाने में जुगनुओं का प्रयोग करती है, ताकि उसका घोंसला अंधेरे में भी चमकता रहे।

जन्म के समय मानव की मांसपेशियों का आकार और ताकत उनकी पूर्णावस्था से 14 गुना कम होती है।

संसार का सबसे लंबा जानवर जिराफ है। नर जिराफ की लंबाई 18 फीट तक होती है।

दुनिया में एवरेस्ट से भी ऊंची पर्वत की चोटी मोनोकोआ है। पानी में डूबे इस पर्वत की ऊंचाई 33,476 फीट है, और इसकी चोटी हवाई द्वीप में दिखाई देती है।

संयुक्त राज्य अमरीका में 10 हजार से अधिक गोल्फ खेलने के मैदान हैं।

* पृथ्वी पर रहने वाले लोगों की आधी संख्या कुल भू-क्षेत्रफल के मात्र 13 वें हिस्से पर रहती है।

सेक्रेटरी चिड़िया एक समूचा मुर्गी का अंडा बिना उसका छिलका तोड़े निगल सकती है।

अरबी भाषा में ऊंट शब्द के लिए एक हजार से भी अधिक पर्यायवाची शब्द हैं।

प्रस्तुति : अरविन्द

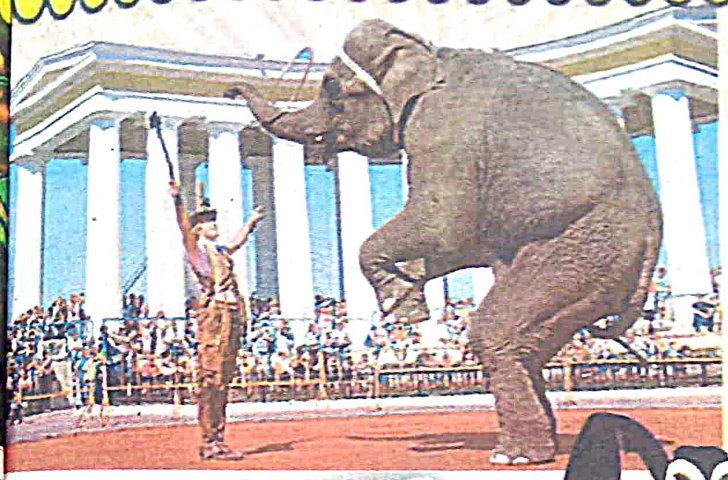

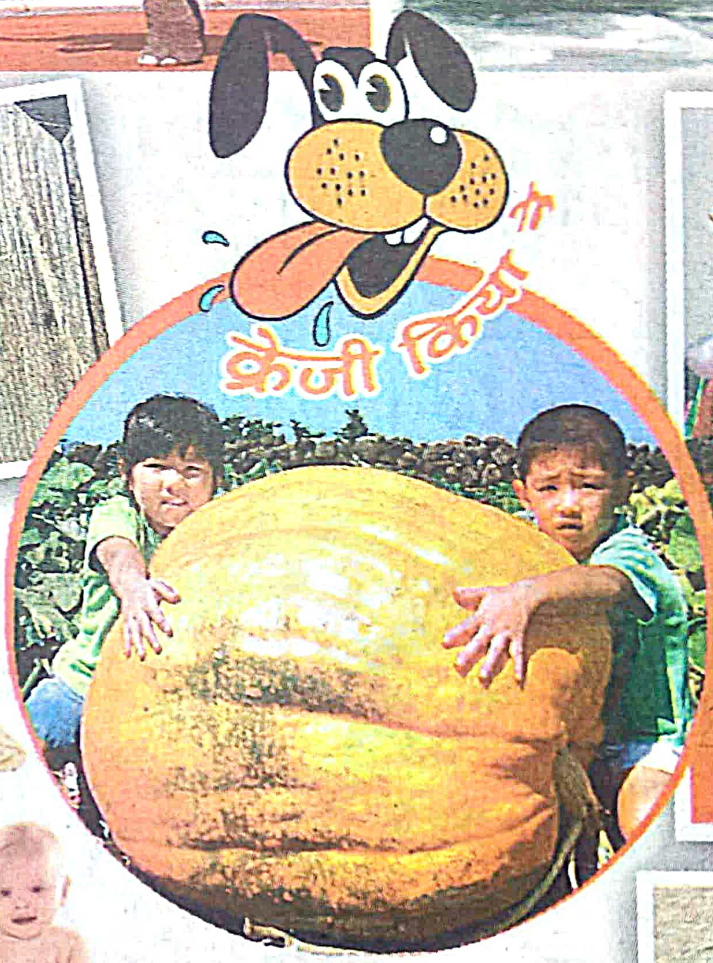
कैजी किड्स

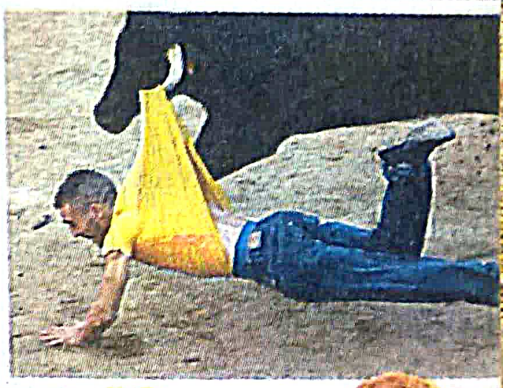

कहने आई दिवाली

घर-आंगन से तम को हर लो
कहने आई दिवाली,
मन के द्वार दीपक धर लो
कहने आई दिवाली।
प्रेम-सुधा हरदम बरसाओ
कमजोरों का हाथ बंटाओ,
कण-कण को आलोकित कर लो
कहने आई दिवाली।
जग में झूठ नहीं फलता है
सच का राज सदा चलता है,
सच्चाई से जीत सब लो
कहने आई दिवाली।
अंधियारों का मुख हो काला
प्यार-प्रीति की जपना माला,
हृदय-हृदय में आज उतर लो
कहने आई दिवाली।

-रामदेवलाल अग्रवाल

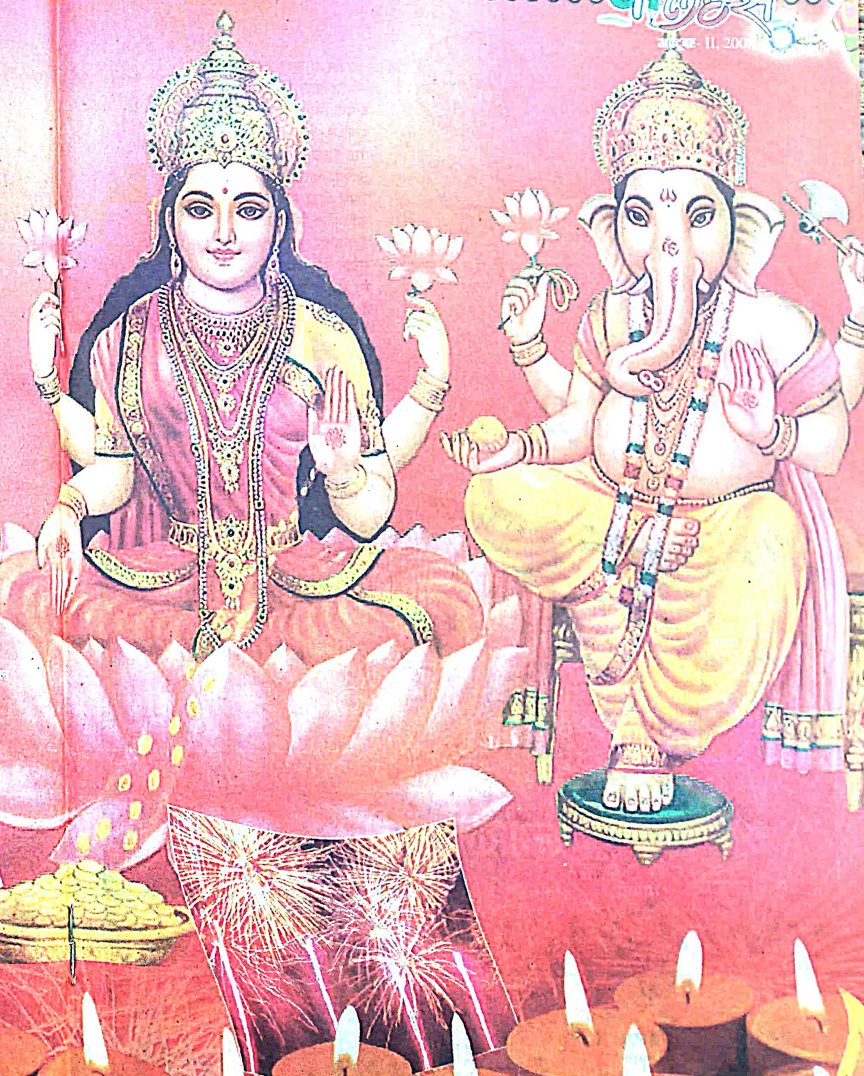

कहने आई दिवाली

घर-आंगन से तम को हर लो
कहने आई दिवाली,
मन के द्वारे दीपक धर लो
कहने आई दिवाली।
प्रेम-सुधा हरदम बरसाना
कमजोरों का हाथ बंटाना,
कण-कण को आलोकित कर लो
कहने आई दिवाली।
जग में झूठ नहीं फलता है
सच का राज सदा चलता है,
सच्चाई से जीत सब लो
कहने आई दिवाली।
अंधियारों का मुख हो काला
प्यार-प्रीति की जपना माला,
हृदय-हृदय में आज उतर लो
कहने आई दिवाली।

-चमंडीलाल अग्रवाल

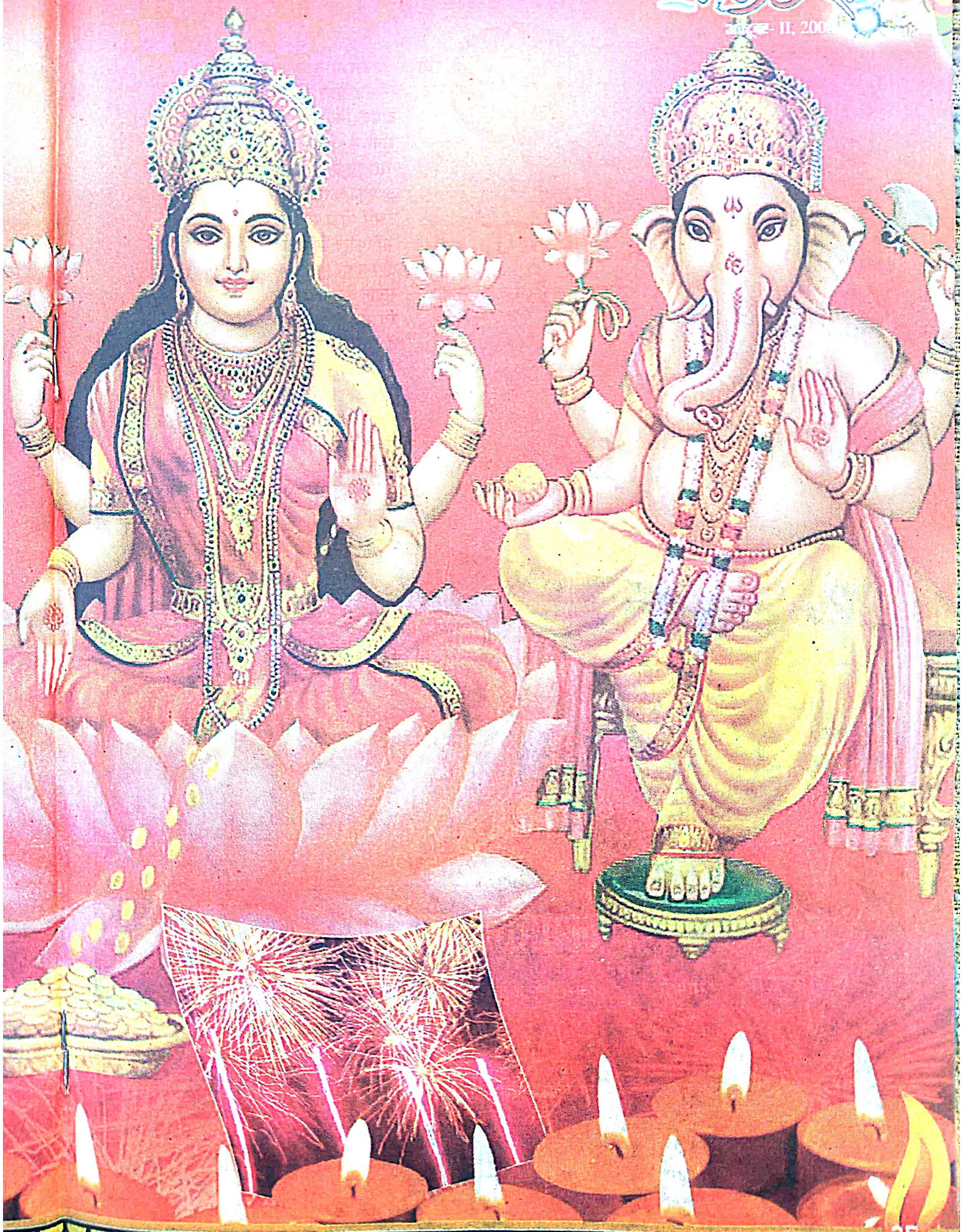

दीपक रंगबिरंगे

सामग्री-दीपक, पोस्टर कलर, ब्रश, क्लीयर वार्निश और फेविकोल।

विधि- बाजार में तरह-तरह की डिजाइन के दीपक मिलते हैं, उन्हें पानी से धोकर अच्छी तरह सुखा लें। जो रंग आपको करना है, उसमें थोड़ा सा फेविकोल मिलाकर दीपक पर कर दें। सूखने के बाद हल्के रंग से डिजाइन बना दें। इन पर क्लीयर वार्निश कर दें। आप चाहें तो इनमें मोम पिघला कर डाल सकते हैं या तेल भी डाल सकते हैं।

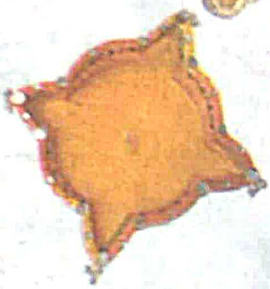

आर्ट & क्राफ्ट

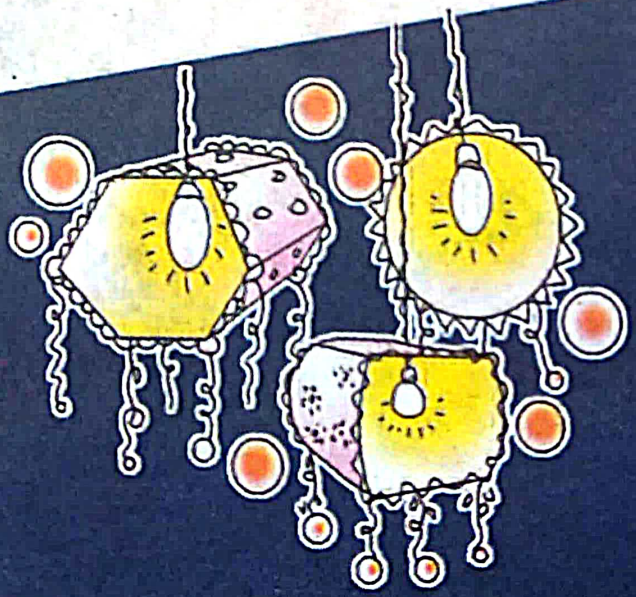

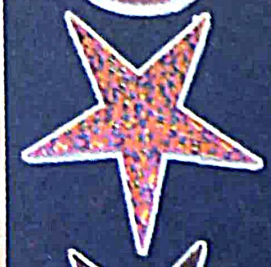

लुभावनी कंदील

सामग्री- पुट्ठे के डिब्बे, लकड़ी का टुकड़ा, फेविकोल, रंग, रंगबिरंगे रिबन्स।

विधि- पुट्ठे के डिब्बे पर सितारे के आकार के दो टुकड़े काटकर सुन्दर रंगों से सजा लें। उन दोनों के बीच लकड़ी का टुकड़ा फंसाकर एक तरफ से खुला छोड़कर बाकी तरफ रिबन चिपका दें। सूखने पर जिधर खुला छोड़ा है उधर से एक छोटा सा बल्ब अन्दर लकड़ी के टुकड़े पर बांध दें। ध्यान रहे बल्ब कंदील से टच नहीं होना चाहिए। उसकी डोरी को बाहर निकालें। जहां चाहें, वहां इसे लटकाकर जलाएं। घर जगमगा उठेगा। इसे शेप कोई भी दे सकते हैं।

पर्स में छिपी
जादू की छड़ी

आवश्यक तैयारी- एक फुट लम्बी जादुई छड़ी तथा पॉकेट पर्स (बटुआ)।

पूर्व तैयारी-
1. बटुए को खोलकर उसकी नोट रखने वाली पॉकेट के ठीक बीच में नीचे की ओर से थोड़ी सी सिलाई खोल लें या ब्लेड से काटकर जगह बना लें।
2. जादुई छड़ी को अपने बाएं हाथ में रबड़ बैंड की सहायता से बांध लें।

जादू का प्रदर्शन- अपनी जेब से बटुआ निकालें और उसमें से रुपए-पैसे तथा अन्य कागजात निकालकर टेबल पर रख दें, ताकि दर्शकों को यकीन आ जाए कि पर्स खाली है। अब बटुए को अपने बाएं हाथ में पकड़ें तथा दाएं हाथ को बटुए में डालकर धीरे-धीरे एक जादुई छड़ी बाहर निकालें। धीरे से बटुए में से एक जादुई छड़ी को बाहर निकलते देख दर्शक हैरान हो जाएंगे। छड़ी को किसी ठोस वस्तु पर मारकर यह भी साबित कर दें कि यह कागज या रबड़ की नहीं है। दर्शकों के मांगने पर बिना किसी संकोच के जादुई छड़ी को चैक करने के लिए दे दें।

जादू में छिपा रहस्य- जब बटुए में दायां हाथ डालें, तब बटुए के बीच बने छेद से अंगुलियों की सहायता से बाएं हाथ में बंधी जादुई छड़ी को धीरे-धीरे ऊपर खींच लें।

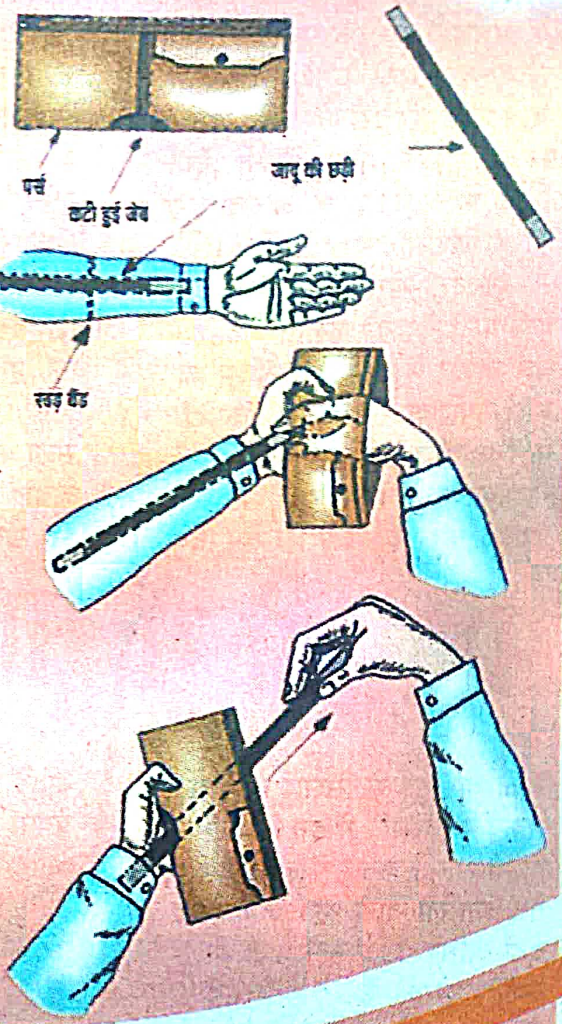

कमाल है
खारा खीरा मुरझाया

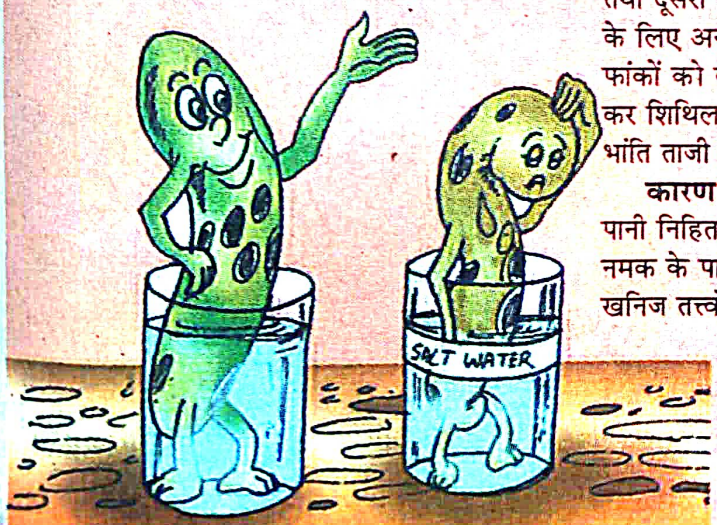

किसी पानीदार फल या सब्जी का टुकड़ा नमक के पानी तथा सादे पानी में डालने पर अलग-अलग परिणाम दिखाता है, क्यों? हम बताते हैं-

पहले तो ये सामान जुटाओ- एक खीरे की छिली हुई दो फांकें, एक गिलास ताजा पानी, एक गिलास नमक का पानी।

अब शुरू करो- खीरे की एक फांक ताजे पानी के गिलास में तथा दूसरी फांक नमक के पानी वाले गिलास में डाल कर कुछ घण्टों के लिए अनछुआ छोड़ दो। कुछ घण्टे बाद जब तुम दोबारा खीरे की फांकों को देखोगे, तो पाओगे कि नमक के पानी वाली फांक मुरझा कर शिथिल पड़ गई है, जबकि ताजे पानी वाली फांक पहले की भांति ताजी है।

कारण भी जान लो- खीरे की फांक में अन्य फलों की भांति पानी निहित होता है। जब तुम इसे नमक के पानी में डालते हो, तब नमक के पानी में खनिज तत्त्वों का अनुपात, खीरे की फांक में निहित खनिज तत्त्वों की तुलना में अधिक होता है। ये खनिज तत्त्व खीरे की फांक से पानी को बाहर निकलने पर मजबूर कर देते हैं, जिससे खीरे की फांक मुरझा जाती है। इसके ठीक विपरीत यह फांक ताजे पानी की अपेक्षा उसमें अधिक पानी अपने अन्दर खींच लेती है और ताजी बनी रहती है।

-आ.सू.

खेलो खेल पुराने

मारदड़ी में मारामार

मारदड़ी न सिर्फ राजस्थान, बल्कि कई राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में खेला जाता है। इस खेल में कूदना, फांदना, झुकना, मुड़ना, बैठना और दौड़ना पड़ता है। इसके अलावा हाथों की भी कसरत भी हो जाती है।

माददड़ी खेलने के लिए केवल दड़ी यानी गेंद की जरूरत होती है। जब बाजार में रबड़ और टेनिस की बॉल उपलब्ध नहीं थी, तब कपड़ों के चिथड़ों को लपेटकर उन्हें गोलाकार रूप देकर, सुई-धागे से सिलाई कर गोल दड़ी का रूप दिया जाता था। सुई से सिलाई नहीं कर सकने की स्थिति में इन चिथड़ों को किसी साबुत कपड़े में लपेट कर भी गेंद बना ली जाती थी। लेकिन यह दड़ी अधिक टिक नहीं पाती थी, क्योंकि इसको फेंकने से चिथड़े बिखर जाते थे।

दड़ी के चिथड़े बिखरे नहीं, इसके लिए सुई-धागे से मजबूत सिलाई जरूरी होती थी। दड़ी का आकार इतना ही बड़ा, गोलाकार होता था कि खेलने वालों के हाथ में यह आसानी से पकड़ा जा सके। आज भी गांवों में रबड़ या टेनिस की बॉल उपलब्ध नहीं होने पर बच्चे चिथड़ों से बनाई दड़ी से मारदड़ी खेलते हैं।

मारदड़ी में कोई विशिष्ट नियम नहीं होते, इसके लिए खेलने के स्थान की सीमा निर्धारित होती है। जहां बच्चों का मन हुआ, आपस में नियम बनाकर खेलना शुरू कर देते हैं। इस खेल में किसी निर्णायक की भी आवश्यकता नहीं होती। यह खेल गली-कूचे, मोहल्ले के मैदान, चबूतरों के इर्द-गिर्द, पेड़ों की छांव, खेल मैदान आदि में स्वतंत्र रूप से खेला जाता है। अक्सर मोहल्ले के बच्चे एक साथ मिलकर यह खेल खेलते रहते हैं।

मारदड़ी का यह खेल दो तरीके से खेला जाता है। एक तो दड़ी से केवल सामने वाले खिलाड़ी को मारने के लिए, दूसरा सामने वाले खिलाड़ी की टीम को दड़ी (गेंद) से मारकर हराने के लिए। इस खेल के लिए खिलाड़ियों की संख्या निर्धारित नहीं होती। अक्सर मारदड़ी का खेल 5 से 15 साल के लड़के व 5 से 10 साल की लड़कियां खेलती हैं। केवल मार के लिए खेले जाने वाले इस खेल में अक्सर एक खिलाड़ी अपने साथी पर दड़ी से मारने का प्रयास करता है, तो सामने वाला अपने साथी की दड़ी की मार से बचने का प्रयास करता है। मारदड़ी में तेजी से गेंद फेंकने और अचूक निशाना साधने वाला खिलाड़ी प्रभावी होता है। जिस खिलाड़ी के दड़ी लगती है, वह लगने वाले स्थान को मसलकर दर्द भुलाने का प्रयास करता है। हार-जीत के रूप में भी मारदड़ी खेल खेला जाता है। जिन-जिन खिलाड़ियों के शरीर पर दड़ी लगती है, वह आउट होकर बाहर बैठते जाते हैं और अंत तक जिसके दड़ी नहीं लगती, वह जीत जाता है।

अगर दल बनाकर यह खेल खेला जाता है तो एक दल के खिलाड़ी दूसरे दल के खिलाड़ियों पर गेंद से प्रहार करते हैं। जिस दल के सभी खिलाड़ी मार खाते हुए खेल से बाहर हो जाते हैं। उस दल को पराजय स्वीकारनी होती है।

शब्द युग्म

उपल	पत्थर
उत्पल	कमल
उदार	दानशील
उधार	ऋण
उपरत	विरक्त
उपरक्त	विलासी
उदाहरण	दृष्टान्त
उद्धरण	उतारना
प्रेम	प्रिय
पेय	पीने योग्य

अंतर है

Heal	स्वस्थ होना या करना
Heel	एड़ी
Heap	ढेर, अम्बार
Hip	नितंब
Hear	सुनना
Here	यहां
Heroin	हेरोइन
Heroine	नायिका

एक के तीन

Assure	अश्योर	आश्वस्त करना	आश्वासनम्
Accredit	एक्रेडिट	मान्यता प्रदान करना	संप्रप्यायनम्
Convince	कन्विंस	विश्वास दिलाना	प्रप्यायनम्
Recognize	रिकोग्नाइज	मान्यता देना	मान्यताकरणम्
Affiliate	एफिलिएट	संबंधित करना	सम्बन्धनम्

लोकोक्तियां

नमाज पढ़ने गए रोजे गले पड़े

एक समस्या से मुक्ति का प्रयास करने में बड़ी समस्या से घिर जाना।

न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी

किसी कार्य को करने के लिए अव्यावहारिक शर्त लगाना।

नक्कारखाने में तूती की आवाज

बड़ों के बीच में छोटे आदमी की कौन सुनता है।

दुष्टमित्र से सदा भय।
Friendship with mean fellow is always dreadful.

कहना और करना और।
Deeds are fruits words are but leaves.

कही खेल की सुनी खीलों की।
Talk of chalk and to hear cheese.

कहीं बूढ़े तोते भी पढ़ते हैं?
Can you teach an old woman to dance?

कमबख्ती जब आवे और चढ़े तो कुत्ता काटे।
He who is born in misfortune stumbles as he goes.

To catch cold- सर्दी लग जाना

To catch fire- आग लगना, जोश से भर जाना

To catch a glimpes of- झलक पाना

Cater-cousin- दूर का संबंध

उर्दू/ हिन्दी

कोर-	अंधा, नेत्रहीन, अंध, नबीना
क़ोरची-	सैनिक, सिपाही, फौजी, लोहार
कोल-	ताल, तालाब, तड़ाग
कोशक-	भवन, प्रासाद, महल
कोशिश-	प्रयत्न, उद्यम, प्रयास, परिश्रम

पर्यायवाची शब्द

प्रकाश	आलोक, उजाला, आभा, प्रभा
पवन	अनिल, वायु, वात, समीर
पत्नी	गृहिणी, बहु, वधु, दारा
पत्ता	दल, पर्ण, पल्लव
पाला	हिम, नीहार, तुषार

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

रामायण कथा-40

तारामती की गुहार

पिछले अंक में तुमने पढ़ा कि सुग्रीव-वालि के मध्य युद्ध चल रहा है और राम पेड़ों की ओट में खड़े होकर युद्ध देख रहे हैं। वे वालि को मारने के लिए निशाना साधते हैं। लेकिन वालि-सुग्रीव एक जैसे कद-काठी के लग रहे थे। कहीं हड़बड़ाहट में वालि की जगह सुग्रीव न मारा जाए, इसलिए राम ने वालि पर तीर नहीं चलाया।

उधर सुग्रीव वालि से युद्ध में हार कर ऋष्यमूक पर्वत पर भाग जाता है। सुग्रीव राम से वालि को न मारने का कारण पूछते हैं तो राम सुग्रीव को सारी बात कह देते हैं। वे सुग्रीव के गले में माला पहना कर उसे फिर वालि से युद्ध करने के लिए कहते हैं। अब आगे पढ़ें....

सुग्रीव ने फिर वालि के महल के सामने जाकर उसे युद्ध के लिए ललकारा। शाम का समय था। वालि आराम कर रहा था। सुग्रीव को वापस युद्ध के लिए आया देखकर उसे आश्चर्य हुआ। फिर भी वालि उसके साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। उसकी रानी तारामती ने उसे रोकने का प्रयास करते हुए कहा, 'नाथ! आप क्रोध त्याग कर दें। आपके भय से सुग्रीव ने ऋष्यमूक पर्वत पर आश्रय लिया है। वह कुछ देर पहले ही आपसे परास्त हो कर भाग गया था। अब वह फिर आपसे लड़ने के लिए आ गया है। पहले ऐसा नहीं हुआ। इसका कारण क्या है? इसके बारे में सोचिए। मैंने सुना है कि अयोध्या के दो राजकुमार राम और लक्ष्मण सुग्रीव से मिले थे। उन्होंने सुग्रीव के साथ मित्रता की है और उसे सहायता देने का वचन दिया है। सुग्रीव आपका इकलौता भाई है। आप उसे क्षमा करके उससे सुलह कर लें। इसी में आप दोनों की भलाई है।'

लेकिन वालि ने तारामती की सलाह पर ध्यान नहीं दिया। अंहकार के कारण उसकी मति भ्रष्ट हो गई थी। उसने तारामती से कहा, 'सुग्रीव मुझे युद्ध के लिए ललकारे और मैं चुपचाप बैठा रहूं तो मेरी अपकीर्ति होगी। ऐसी अपकीर्ति सहकर जीवित रहने का क्या अर्थ है?

तुम राम से मत डरो। राम धर्मात्मा हैं। वे सुग्रीव के किसी षड्यंत्र में सहयोग नहीं देंगे। सुग्रीव मेरा भाई है। अत: मैं उसका वध नहीं करूंगा। मैं तो उसे केवल ऐसी शिक्षा देना चाहता हूं कि वह फिर यहां आकर मुझे छेड़ने की हिम्मत न करे। तुम मुझे रोको मत। मैं सुग्रीव को हराकर तुरंत लौट आऊंगा।'

तारामती ने वालि के माथे पर कुंकुम का तिलक लगा कर उसे विदा किया। वालि आवेशपूर्वक सुग्रीव की ओर दौड़ पड़ा। मगर सुग्रीव निडर होकर अपनी जगह खड़ा रहा। अलौकिक आत्मविश्वास से उसका चेहरा चमक रहा था।

वालि ने छलांग लगा कर सुग्रीव पर हमला किया। सुग्रीव ने वीरतापूर्वक उसका सामना किया। वालि ने सुग्रीव से अपने प्राण बचा कर भाग जाने के लिए कहा। लेकिन सुग्रीव ने वालि की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। अब उसे राम की सहायता का पूरा विश्वास था। इसलिए उसने वालि से जोरदार संघर्ष किया।

(अगले अंक में जारी)

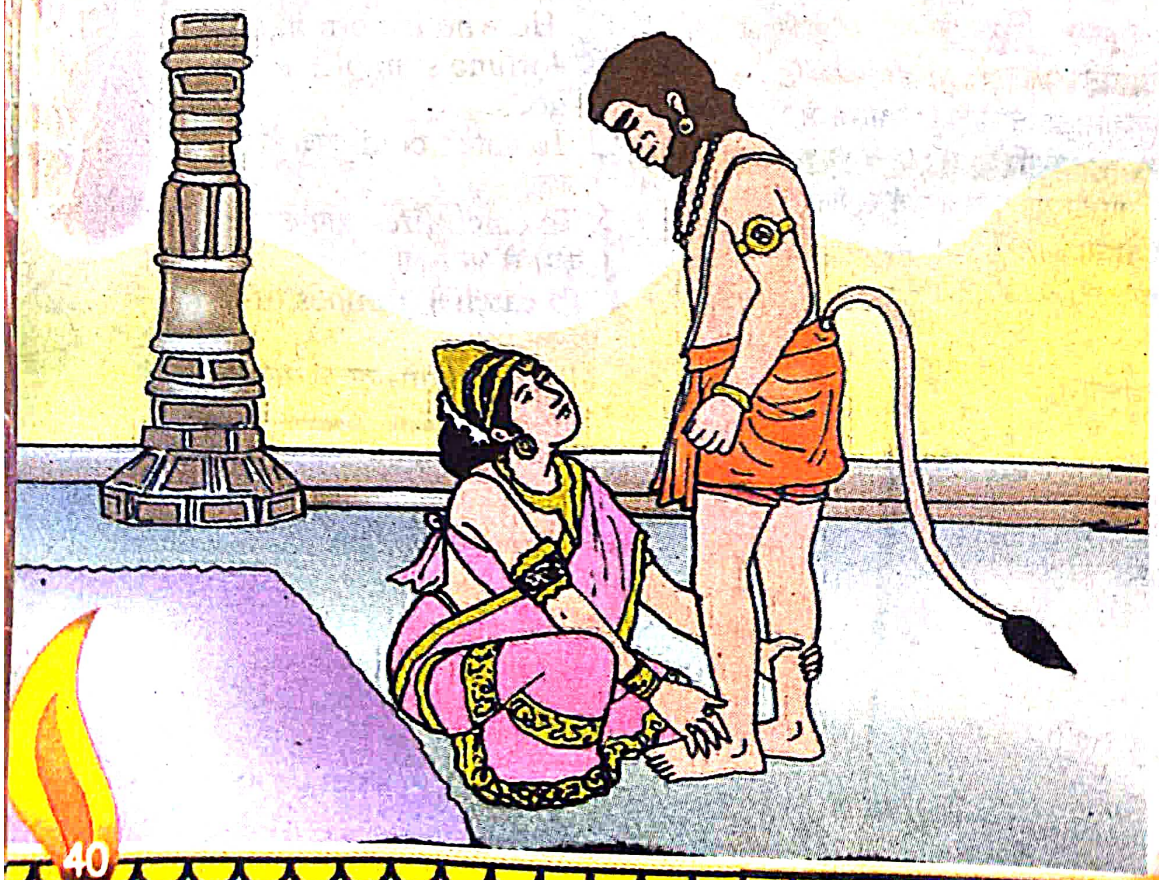

प्रजा के सामने अनुशासन का पहला पाठ तो अर्जुन ने दे ही दिया। सभी प्रेम और बंधनों को छोड़कर वह बारह वर्षों के लिए वनवास चला गया। लेकिन इधर राज्य में अनेक चुनौतियां भी तो सामने थीं। दुर्योधन को पाण्डव यहां भी नहीं सुहा रहे थे। भले ही उसके हस्तिनापुर से वे दूर चले गए थे....

पाताललोक में अर्जुन

अर्जुन अपने बहुत से प्रशंसकों के साथ बारह वर्षों के वनवास पर निकल गया। कई दिनों तक घने वनों और नदियों को पार करते वे गंगा नदी के किनारे पहुंचे। वहां उन्होंने कुछ दिनों के लिए डेरा डाला। अर्जुन अपना ज्यादा समय विद्वान ब्राह्मणों और बुजुर्गों के बीच बिताता था। कभी-कभी तो वह देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ भी करता था। इसके परिणामस्वरूप उसका समय तनावरहित और शान्तिपूर्वक बीत रहा था। लगातार शान्ति और यज्ञ करते रहने से उसके चेहरे पर अद्भुत तेज उभर आया था।

एक दिन जब अर्जुन अपने साथियों के साथ यज्ञ कर रहा था। अचानक एक सुन्दर युवती ने उसे देख लिया। अर्जुन के सुन्दर चेहरे और सुडौल शरीर को देखकर वह बरबस ही उस पर मोहित हो गई। उस युवती का नाम उलूपी था। वह नागाओं के राजा की पुत्री थी। उसने अर्जुन से विवाह करने का निश्चय कर लिया। अगले दिन जब अर्जुन नदी में स्नान करने गया तो उलूपी ने उसे पकड़ लिया और सीधा अपने पिता के पास ले गई। अपने आपको नागाओं के देश में पाकर अर्जुन भौंचक्का रह गया। उसने उलूपी से पूछा, 'हे सुन्दर युवती, तुम कौन हो और मुझे यहां क्यों ले आई हो?'

उलूपी ने अपना परिचय देते हुए कहा, 'आप नागाओं के राजा के महल में हैं और मैं यहां की राजकुमारी हूं। हे राजकुमार, मैं आपके रूप पर मोहित हूं और आपसे विवाह करना चाहती हूं।' उसकी बातें सुनकर अर्जुन समझ गया कि वह इनके देश में पानी के भीतर है, और यह युवती उस पर अत्यंत आसक्त है, इसलिए इसका मन नहीं तोड़ना चाहिए। यह विचार करके अर्जुन ने उलूपी से विवाह की अनुमति दे दी।

पाताललोक में दोनों का विवाह विधिपूर्वक हुआ। अर्जुन पाताललोक में कई दिनों तक रहा। इसके बाद उसने घर और साथियों के पास जाने की इच्छा प्रकट की। ताकि घरवालों और साथियों को अपने विवाह का शुभ समाचार दे सके।

उलूपी को उसकी बातें उचित लगी। अतः वह उसे वापस छोड़ने के लिए नदी के तट पर आई। नदी के किनारे पर उसे छोड़ते समय उलूपी ने अर्जुन को एक वरदान दिया, 'हे प्रिय! आज से सभी जल-जीव तुम्हारे रक्षक तथा मित्र होंगे। इसके फलस्वरूप तुम सदा पानी में अजेय रहोगे।' *(अगले अंक में जारी)*

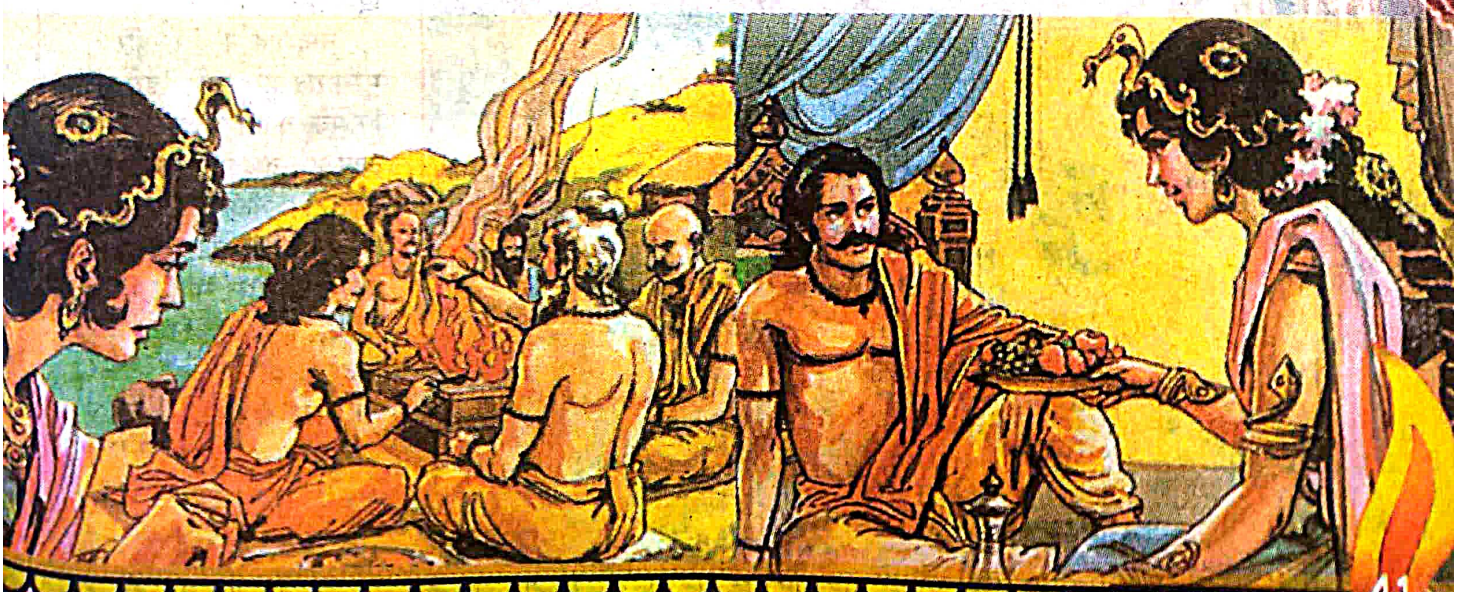

ऊंट की गर्दन क्यों मुड़ी है

अकबर बीरबल की हाजिर जवाबी के बड़े कायल थे। एक दिन दरबार में खुश होकर उन्होंने बीरबल को कुछ पुरस्कार देने की घोषणा की। लेकिन बहुत दिन गुजरने के बाद भी बीरबल को धनराशि (पुरस्कार) प्राप्त नहीं हुई। बीरबल बड़ी ही उलझन में थे कि महाराज को याद दिलाएं तो कैसे?

एक दिन महाराज अकबर यमुना नदी के किनारे शाम की सैर पर निकले। बीरबल उनके साथ था। अकबर ने यहां एक ऊंट को घूमते देखा। अकबर ने बीरबल से पूछा, 'बीरबल बताओ, ऊंट की गर्दन मुड़ी क्यों होती है?'

बीरबल ने सोचा, महाराज को उनका वादा याद दिलाने का यह सही समय है। उन्होंने जवाब दिया, 'महाराज यह ऊंट किसी का वादा भूल गया है, जिसके कारण ऊंट की गर्दन मुड़ गई है। महाराज, कहते हैं कि जो भी अपना वादा भूल जाता है तो भगवान उनकी गर्दन ऊंट की तरह मोड़ देते हैं। यह एक तरह की सजा है।' तभी अकबर को ध्यान आता है कि वो भी तो बीरबल से किया वादा भूल गए हैं। उन्होंने बीरबल से जल्दी से महल में चलने कहा। महल पहुंचते ही सबसे पहले बीरबल को पुरस्कार की धनराशि सौंप दी। और बोले, मेरी गर्दन तो ऊंट की तरह नहीं मुड़ेगी बीरबल। यह कहकर अकबर अपनी हंसी नहीं रोक पाए। इस तरह बीरबल ने अपनी चतुराई से बिना मांगे अपना पुरस्कार राजा से प्राप्त कर लिया।

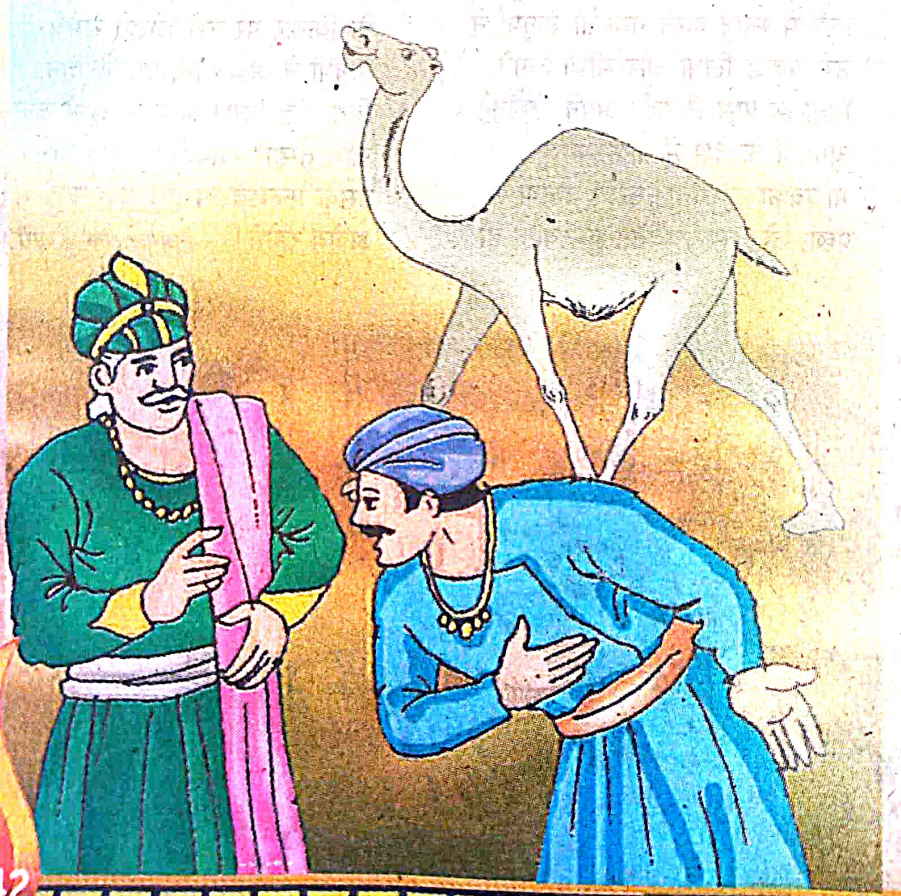

जाओ बुलाकर लाओ

एक दिन बादशाह अकबर सुबह के समय नहाकर निकले और अपने नौकरों से कहा, 'जाओ बुलाकर लाओ।' लेकिन बादशाह ने यह नहीं बताया कि किसे बुलाकर लाएं। नौकरों में बादशाह से ज्यादा पूछने की हिम्मत नहीं थी। वे बेचारे इधर-उधर दौड़ने लगे, परेशान होते रहे। क्योंकि आखिर बुलाएं तो किसे बुलाएं?

आखिर में एक नौकर को बीरबल की याद आई। वह दौड़ा-दौड़ा बीरबल के पास गया और उन्हें सारा किस्सा कह सुनाया। बीरबल ने उसे बताया, 'बादशाह हजामत बनवाना चाहते हैं।' नौकर हज्जाम को लेकर बादशाह के पास पहुंच गया। बादशाह बहुत खुश हुए।

बादशाह ने धीरे-धीरे मुस्कराते हुए पूछा, 'इसे तुम किसके कहने से हमारे पास लाए हो, तुम इतने चतुर तो नहीं हो।' नौकरों ने डरते-डरते जवाब दिया, 'हुजूर! दीवान बीरबल साहब से पूछकर इन्हें यहां लाया हूं।' बादशाह बीरबल की बुद्धिमत्ता से बेहद प्रसन्न हुए।

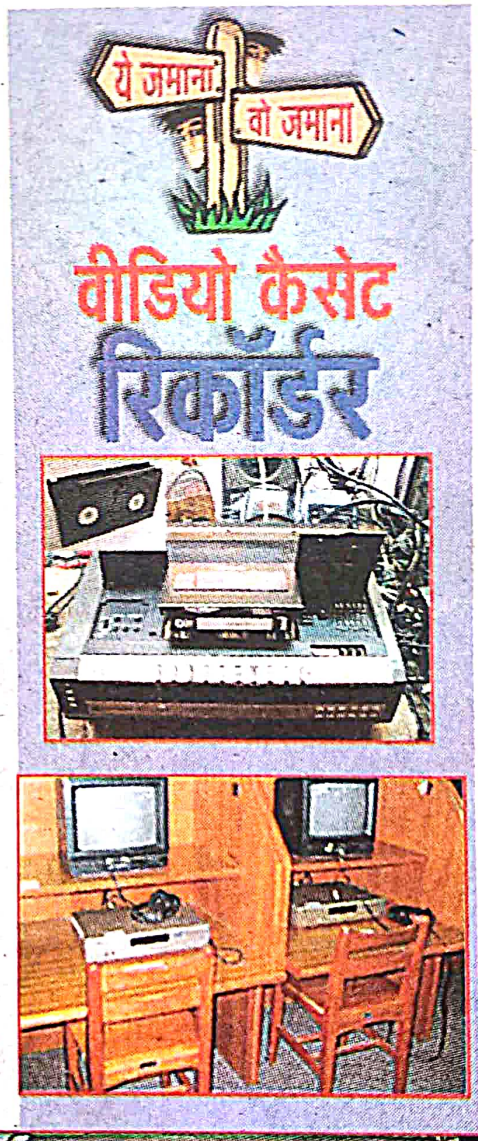

जिस प्रकार हम दूरदर्शन केंद्र से प्रसारित कार्यक्रमों को टेलीविजन पर देखते हैं, उसी प्रकार वीडियो द्वारा मनचाही टेप लगाकर टेलीविजन पर कार्यक्रम देख सकते हैं। सबसे पहले वी.सी.आर. यानी वीडियो कैसेट रिकॉर्डर ने हमें यह सुविधा दी थी। इस पर कार्यक्रम रिकॉर्ड भी किए जा सकते हैं। अपने शुरुआती दौर से वीसीआर ने कई रूप बदले। अब तो इसका रूप इतना आधुनिक और सुविधाजनक हो गया है कि छोटी सी जगह और ढेर सारी मेमोरी स्टोरेज के साथ इसे काम में लिया जा सकता है। आइए देखें वीसीआर की विकास यात्रा-

जब से चुम्बकीय टेप पर ध्वनि रिकार्डिंग की प्रणाली विकसित हुई और टेप-रिकॉर्डर का आविष्कार हुआ, तभी से वैज्ञानिक चुम्बकीय टेप पर दृश्यों को टेप करने की विधि विकसित करने में गंभीरता से जुट गए। इस कार्य में रेडियो कॉर्पोरेशन ऑफ अमरीका के अनेक वैज्ञानिकों ने वर्ष 1953 में रंगीन और सादे-टेलीविजन कार्यक्रमों को चुम्बकीय टेप पर रिकॉर्ड करने की प्रणाली विकसित कर उसका सफल प्रदर्शन किया।

ध्वनि संवेगों को रिकॉर्ड करना सरल था, पर दृश्य संवेगों को रिकॉर्ड करना साधारण कार्य नहीं था। लेकिन इन दोनों को रिकॉर्ड करने के तरीके में कोई खास बुनियादी अंतर नहीं था। ध्वनि रिकॉर्डिंग के लिए टेप की दर 16000 हर्ट्ज थी, परंतु दृश्य रिकॉर्डिंग के लिए यह दर कम से कम 50 लाख हर्ट्ज होनी आवश्यक थी। रंगीन रिकॉर्डिंग के लिए तो इससे भी दोगुनी दर की आवश्यकता होती है।

वीडियो टेप प्लास्टिक की एक पतली टेप होती है, जिस पर आयरन ऑक्साइड की एक बहुत ही पतली तह चढ़ी होती है। टेप की चौड़ाई 1.25 से 2.5 सेंटीमीटर होती है। किसी भी कार्यक्रम को रिकॉर्ड करने के लिए टेप रिकॉर्डर पर टेप चलाया जाता है। टेप करते समय टेलीविजन कैमरा चित्रों को विद्युत संदेशों में बदल देता है। उसी समय एक माइक्रोफोन ध्वनियों को विद्युत संदेशों में परिवर्तित कर देता है। ये दोनों संदेश टेप रिकॉर्डर के हैड द्वारा चुम्बकीय क्षेत्र में बदल जाते हैं, जिससे टेप पर चुम्बकीय पैटर्न बन जाते हैं, जो कार्यक्रम की प्रतिलिपि मात्र होते हैं। इसी टेप को अब मूल ध्वनि को सुनने और चित्र को देखने के लिए प्रयोग किया जाता है।

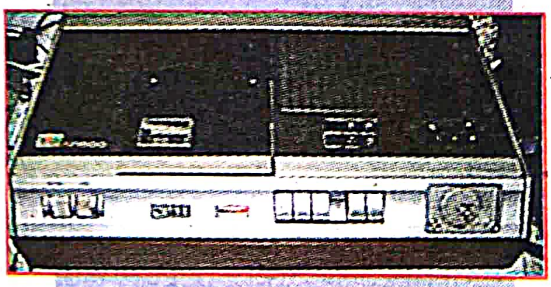

वीडियो टेप-रिकॉर्डर की मशीन अमरीकी टेलीविजन स्टूडियो में सन् 1958 में लगाई गई। अनेक कार्यक्रमों को वीडियो टेप पर रिकॉर्ड कर पुनः प्रसारित करने के लिए परीक्षण किए गए, जो काफी सफल रहे।

इसके बाद वीडियो कैसेट रिकॉर्डर का विकास हुआ। घर या स्कूल के टेलीविजन सेट से इस मशीन द्वारा टेप पर आरेखित कार्यक्रमों को पुनः दृश्य रूप में परिवर्तित किया जा सकता था। इस तरह अपनी पसंद का कार्यक्रम टेलीविजन पर वीडियो कैसेट रिकार्डर (वी.सी.आर.) द्वारा किसी भी समय देखा जा सकता था।

वीडियो टेप की सबसे बड़ी विशेषता यह है इसके टेप को धोने या प्रिंट करने की आवश्यकता नहीं रहती। और इसे ज्यों का त्यों प्रदर्शित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक ही टेप को साफ करके इस पर कई बार कार्यक्रम रिकॉर्ड और प्रदर्शित किए जा सकते हैं। इसके प्रयोग से फिल्म उत्पादन का खर्च काफी कम हो गया।

आज वीसीआर का मूल स्वरूप बिल्कुल बदल चुका है। यह नए रूप में हमारे सामने सीडी-डीवीडी प्लेयर के रूप में है। वीसीआर की तरह इसमें कैसेट लगाने का कोई झंझट नहीं है। पहले कैसेट में एक ही फिल्म आती थी। लेकिन अब एक डीवीडी में चार-पांच फिल्में रिकॉर्ड कर सकते हैं, और इनको लगातार एक साथ घंटों तक बैठ कर देख सकते हैं। इसके अलावा सीडी-डीवीडी का संचालन दूर बैठे रिमोट से आसानी कर सकते हैं। पूर्व में वीसीआर में ये सुविधाएं नहीं थीं। इसके अलावा आवाज-पिक्चर क्वालिटी से संबंधित अनेक सुविधाएं इनमें समाहित हैं।

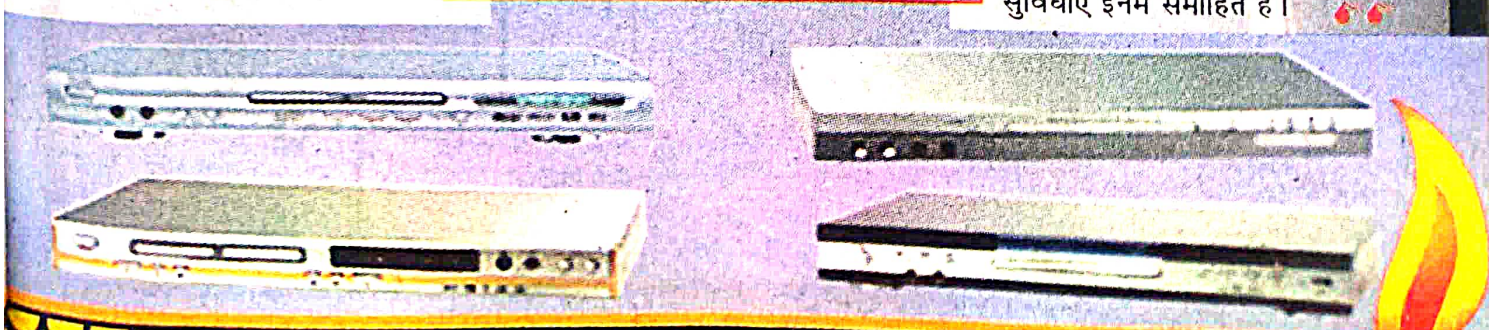

Dot to Dot

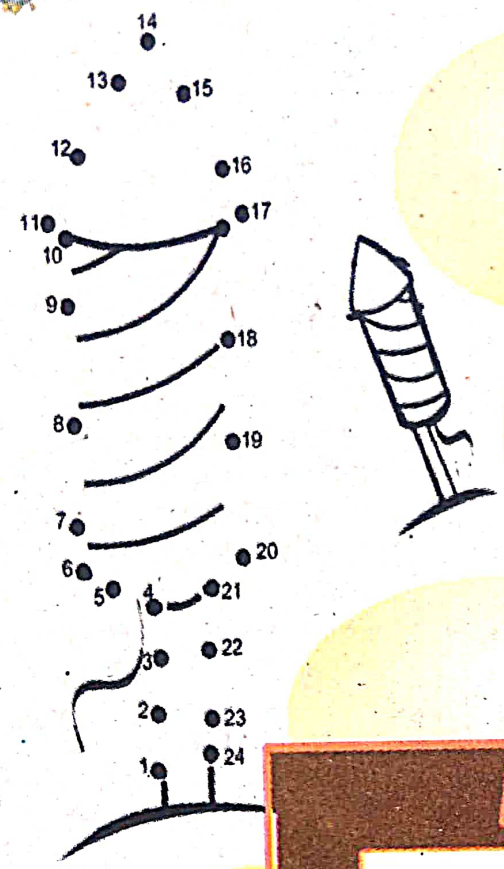

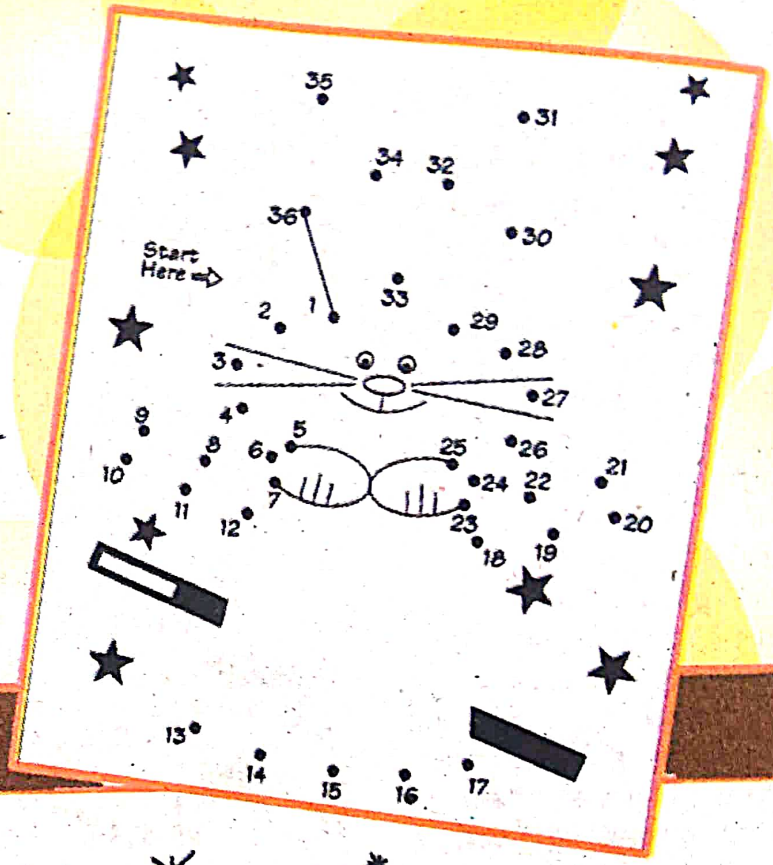

Maze Craze

1. लड़की का रिबन उड़ नहीं रहा 2. आसमान में चमकते तारे ज्यादा हैं 3. झाड़ियों के पीछे घास नहीं है 4. नीचे उगे फूलों की संख्या ज्यादा नहीं हैं 5. लड़की की चप्पल का डिजाइन अलग है 6. बीच वाली लड़की ने फ्रॉक पहनी है 7. पीछे उड़ रहा रॉकेट छोटा है 8. लड़की के फ्रॉक का डिजाइन अलग है 9. पीछे लगे दीए कम हैं 10. नीचे रखे पटाखे कम हो गए हैं।

उत्तर

1. बिल्ली की पूंछ छोटी है 2. लड़की की दूसरी बांह में स्ट्रिप नहीं है 3. सीढ़ी की लम्बाई ज्यादा नहीं है, और स्टेप्स कम हैं 4. कुल्हाड़ी ऊपर से काली है 5. पीछे खड़ी गाड़ी का हैंडल आगे की ओर है 6. चूहा थोड़ा आगे सरक गया है 7. पेड़ का तना ऊपर से अलग है 8. तितली पकड़ने की जाली की डण्डी बड़ी है 9. लड़की के कोट का बटन दूर है 10. नीचे रखे डिब्बे का एक हिस्सा बन्द है।

उत्तर

अन्तर बताओ

अंकों से चित्र

बालहंस के पिछले अंक में हमने आपको 31 से 40 तक के अंकों से चित्र बनाना सिखाया था। इस बार 41 से 45 तक अंकों से चित्र बनाना सीखिए।

-चांद

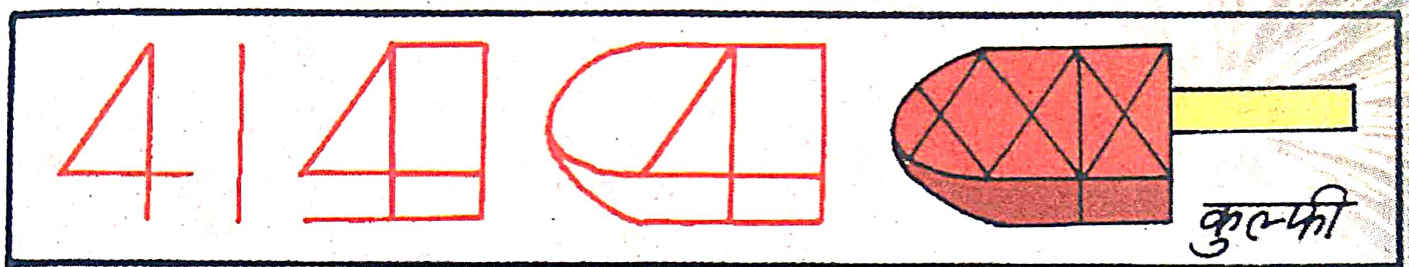

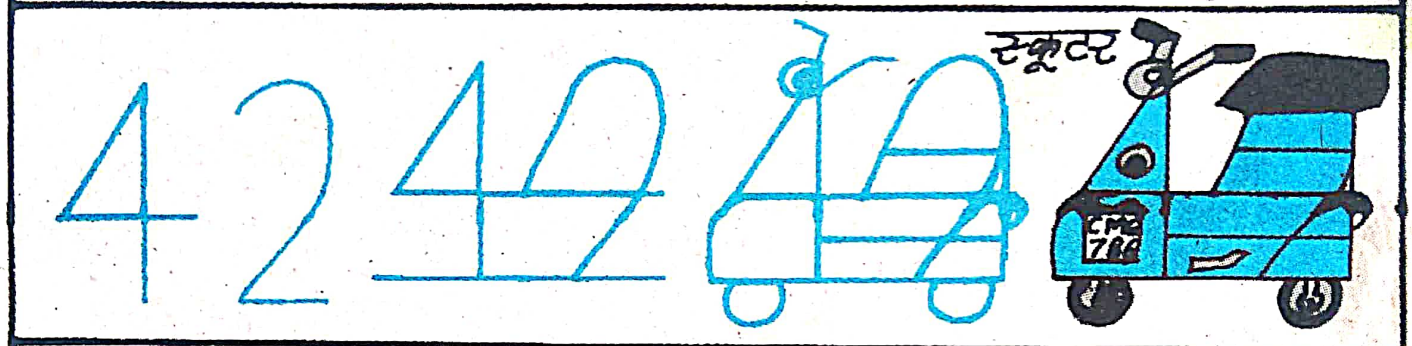

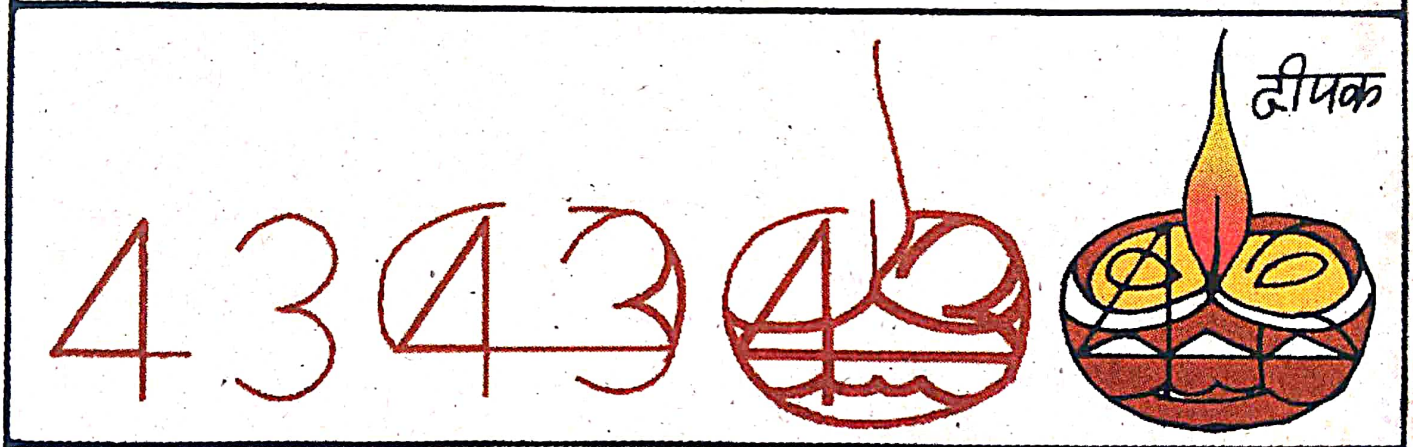

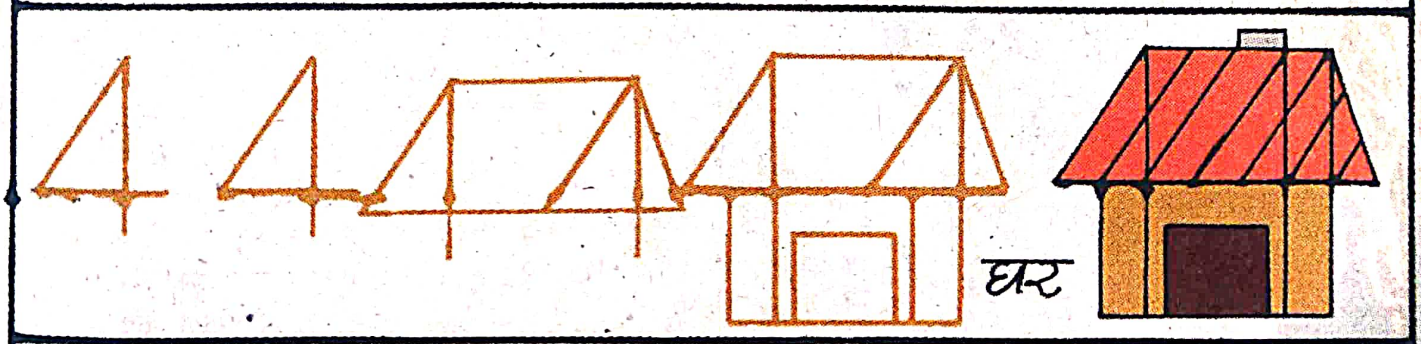

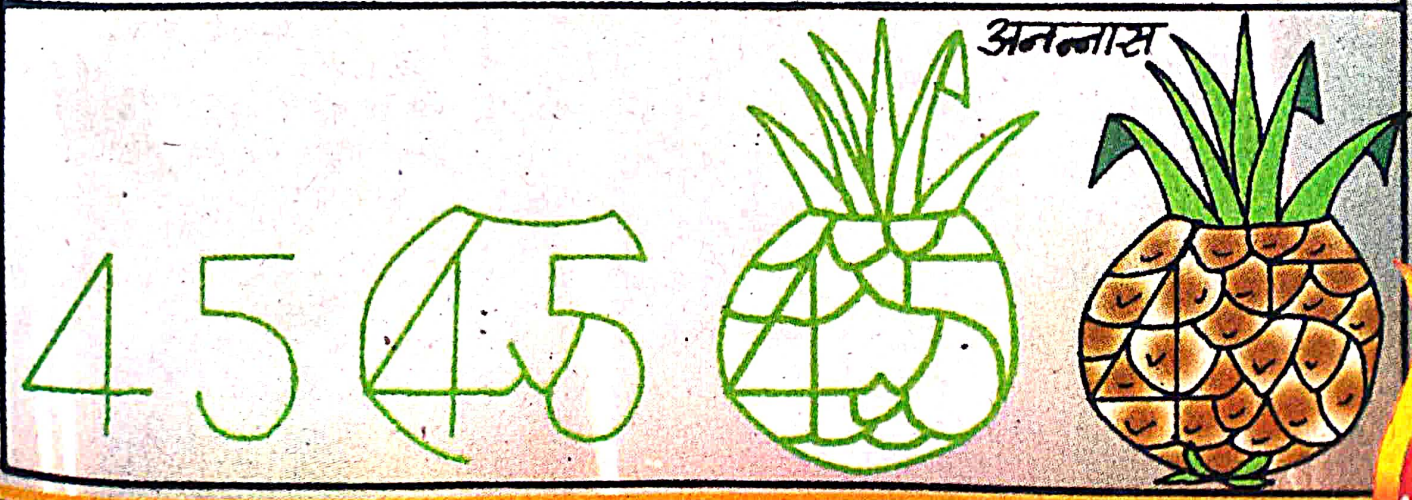

दिवाली की धूम

मधुवन में इस बार दिवाली का उत्सव धूमधाम से मनाया जाने वाला था। उछालचन्द बन्दर, जो कि शहर की दिवाली कई बार देख आ चुका था। उसने वनराज सिंह व प्रधानमंत्री दहाड़ सिंह चीते से मिलकर इस बार दिवाली का उत्सव नए ढंग से मनाने का आयोजन किया था। ऐसा शानदार आयोजन कि जिसकी ज्योति से पूरे वर्ष मधुवन के निवासियों के हृदय जगमगाते रहें। उसने दिवाली की रात को दीपकों और कंदीलों के प्रकाश में पशु-पक्षियों के खेल-कूद की प्रतियोगिता का प्रबन्ध किया था। विजेताओं के लिए सुंदर-सुंदर पुरस्कार भी रखे गए थे। प्रतियोगिता का निमंत्रण पूरे मधुवन के पशु-पक्षियों के पास भेज दिया था। निश्चित समय पर प्रतियोगिता शुरू हुई। दहाड़ सिंह चीते ने एक जोरदार दहाड़ मारी और खेल-कूद शुरू हो गए। सबसे पहले हुई लम्बी दौड़। जिराफ, शुतुरमुर्ग, हिरण, घोड़ा, कुत्ता, भेड़िया और चीते ने इसमें भाग लिया।

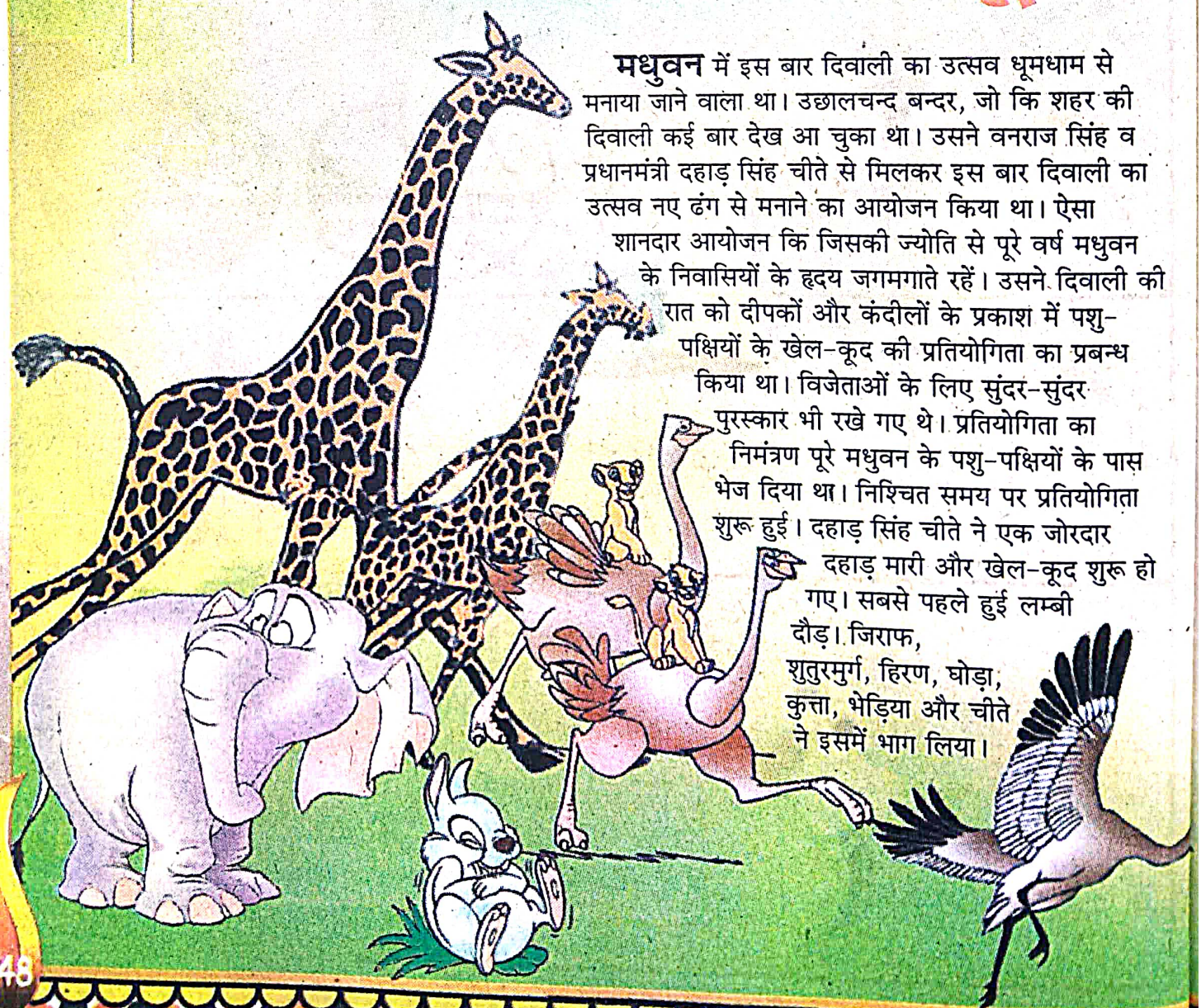

विशेषता यह थी कि धरती व आकाश दोनों पर यह प्रतियोगिता हो रही थी। धरती पर दौड़ने वाले पशु पैरों से दौड़ रहे थे, तो आकाश में पक्षी परों के सहारे उड़ रहे थे। बाज, गिद्ध, कबूतर, हंस व गरुड़ ऊपर खुले आकाश में उड़ते हुए अपनी शक्ति व युक्ति आजमा रहे थे। साथ ही वे धरती पर दौड़ने वाले खिलाड़ियों की निगरानी भी करते जा रहे थे।

कहानी

इस लम्बी दौड़ में भारी शरीर और छोटे पंखों वाला शुतुरमुर्ग बाजी मार ले जाता, पर हिरण ने चालाकी से उसका पत्ता गोल कर दिया। उसने पहले ही दौड़ के रास्ते में उल्टी-सीधी लकड़ियां रख कर उन्हें कपड़ों से इस तरह ढक दिया था कि देखने वाले को वहां शिकारी बैठा होने का भ्रम हो जाए। दौड़ते समय शुतुरमुर्ग ने जैसे ही उसे देखा। उसे वहां शिकारी होने का भ्रम हो गया। वह घबरा गया। अपने स्वभाव के अनुसार उसने तुरंत अपनी लम्बी गर्दन रेत के टीले में घुसा दी। शुतुरमुर्ग के ठीक पीछे दौड़ते हिरण ने जब यह देखा तो वह उत्साह से छलांगे भरता हुआ आगे बढ़ गया। इस तरह हिरण दौड़ में प्रथम आया। जिराफ दूसरे स्थान पर, चीता तीसरे स्थान पर आया। वैसे तो दूसरा स्थान चीते को ही मिलना था, पर दौड़ते समय उसकी नजर पास ही चरते एक छोटे बकरे पर पर पड़ गई। चीता उसे उठाकर पेड़ की शाखा से बांधने के चक्कर में पड़ गया।

उधर आकाश में हंस की उड़ान का कोई मुकाबला नहीं कर सका। उसे प्रथम स्थान मिला। गरुड़ को दूसरा तथा कबूतर को तीसरा। बाज के हाथों जीत इसलिए फिसल गई कि इतनी ऊंचाई पर उड़ते समय भी उसकी तीखी नजर एक पेड़ के पास उड़ते लवा पक्षी पर पड़ गई और वह उस पर झपट पड़ा।

तब हाथी, भालू, कुत्ता, लोमड़ व बिलाव ने गेंद खेलने के अपने करतब दिखाए। इसमें हाथी को प्रथम स्थान मिला। लंगूरों ने एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाते हुए पूरे जंगल के राउंड लगाए। उनकी इस कलाबाजी को कोई भी पशु-पक्षी चैलेंज नहीं कर पाया। हिम भालू भूरे खां ने बर्फ पर फिसलने के कई करतब दिखाकर पुरस्कार प्राप्त किया। चिड़िया, मोर, कबूतर, मैना, बगुला व पपीहा ने अपने नृत्य दिखा-दिखाकर सबका मन मोह लिया। उस समय तो निर्णायक सिंहराज के लिए भी यह निर्णय करना कठिन हो गया कि नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान किसे दिया जाए? वैसे यह प्रतियोगिता कबूतर ने जीती। मोर दूसरे स्थान पर रहा तथा पपीहे को तीसरा स्थान मिला। तब मुर्गा, बटेर, चिड़िया व कबूतर आदि ने कुश्ती के दांव-पेच दिखा कर पशु-पक्षियों का मनोरंजन किया और पुरस्कार प्राप्त किए। लोमड़ी, सियार, बिलाव, चील, कौआ व कोयल ने चालाकी तथा हाथ की सफाई के खेल दिखाए। मांकिंग बर्ड (ठग चिड़िया) ने पेड़ों के झुरमुट में छिपकर भिन्न-भिन्न प्रकार की आवाजें निकालते हुए अचानक मनुष्य जैसी बोली में चिल्लाना शुरू कर दिया, 'अरे ये पशु-पक्षी तो यहां खेल-कूद में मस्त हो रहे हैं। सिंहराज के घर में इन सबकी दावत के लिए जो मिठाइयां व खीर-पुए रखे हैं, चलो, हम ही उन्हें खा लें।' फिर वह 'खीर-पुए, खीर-पुए' और 'मिठाई-मिठाई' की धीमी-धीमी आवाज निकालने लगी।

ठग चिड़िया की इस शरारत को कोई भी नहीं समझ पाया। उसकी बात से सभी पशु-पक्षियों का मन डोल गया। वे सब खेल-कूद छोड़ कर सिंहराज के महल की ओर भागे। सिंहराज ने देखा मांकिंग बर्ड इधर-उधर फुदक-फुदक कर सभी मिठाइयों का स्वाद चखती हुई मीठे स्वरों में गा रही थी। उसे देखकर सिंहराज की भी हंसी छूट गई। तब सभी पशु-पक्षियों ने दीपक जलाए। कंदीलें सजाईं और खीर-पुए छककर खाए। उनके बच्चों ने खूब आतिशबाजी की।

मांकिंग बर्ड बड़ी चतुर थी। वह बार-बार चिल्ला रही थी, 'भई धोखा देने का मेरा रिकॉर्ड सबसे अच्छा रहा। इस प्रतियोगिता का पहला पुरस्कार तो मुझे ही मिलना चाहिए। है ना!'

-रामपाली भाटी

जादुई शरबत

-उन्नी

एक दिन जब हबीब जंगल से गुजर रहा था....
हे अल्लाह! वह कौन है? कहीं लुटेरा तो नहीं...
तुम कौन हो?
म...म....मैं तो एक राहगीर हूं....
यह जंगल एक दैत्य का है। यहां से गुजरना खतरे से खाली नहीं। भागो यहां से।
लेकिन हबीब....
यह आदमी दैत्य से क्यों नहीं डर रहा? दाल में कुछ काला जरूर है!
हबीब छिपकर देखने लगा।
वह कुछ पी रहा है...!

हा...हा....
हा...
अरे इसने तो दैत्य का रूप धारण कर लिया है!
लगता है इस जादुई शरबत में कुछ खास है!
बाद में
वह पेड़ के नीचे से क्या निकाल रहा है? ओह...ये तो आभूषण हैं। जरूर इसने राहगीरों से लूटे होंगे....
अरे...जादुई शरबत की दूसरी बोतल पीने के बाद तो यह वापस साधारण आदमी सा हो गया है!!
जब वह चला गया।
मैं ये दोनों बोतलें ले जाता हूं।
हबीब चलते-चलते एक गांव जा पहुंचा।
यह भीड़ कैसी है यहां...?

बुरी खबर है दोस्त! हमारी राजकुमारी को एक दैत्य ने बंदी बना लिया है।
राजकुमारी को उसने एक गुफा में बंद कर दिया है। अब उसे कैसे छुड़ाएं वहां से....?
वह दैत्य कहां है?
देखो यहां सो रहा है।
हबीब दैत्य के पास गया और...
जादुई शरबत उसके मुंह में उड़ेल दिया।
ग्ल....ग्ल....गड़ड़ड़.....!

अरे यह दैत्य तो बौना हो गया।
राजकुमारी को कैसे बचाएं? इस भारी चट्टान को कौन हटाएगा!
अब इसे पक्षी के पिंजरे में बंद कर दो।
हबीब ने वह जादुई शबरत पीया और दैत्याकार रूप ले लिया।
मैं हटाता हूं यह चट्टान....
अरे...!!
आ जाओ राजकुमारी....
तुम कितनी सुंदर हो! मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।
तुम तो दैत्य समान हो!!
हबीब ने फिर जादू वाला शरबत पीया और...
अब कैसा लग रहा हूं...
सुंदर... अब चलें...।

प्रकाश पंवार बिश्नोई
उम्र- 13 वर्ष
पता- धौरीमन्ना, बाड़मेर (राज.)
रुचि- क्रिकेट खेलना, पढ़ना।

देवेन्द्र कुमार
उम्र- 13 वर्ष
पता- जोबनेर (राज.)
रुचि- साइकलिंग, रीडिंग।

रौनक कुमार जैन
उम्र- 12 वर्ष
पता- धुलियान (प. बंगाल)
रुचि- खेलना, पढ़ना।

तन्यम जायसवाल
उम्र- 10 वर्ष
पता- निम्बाहेड़ा (राज.)
रुचि- साइकलिंग, खेलना।

चांदनी कुमारी
उम्र- 13 वर्ष
पता- साहेबगंज (बिहार)
रुचि- पढ़ना, टी.वी. देखना।

प्रतीक कुमार
उम्र- 13 वर्ष
पता- बछवाड़ा (बिहार)
रुचि- पढ़ना, खेलना, टी.वी. देखना।

रोशन कुमार जैन
उम्र- 13 वर्ष
पता- धुलियान (प. बंगाल)
रुचि- खेलना, पढ़ना।

आयुष कुमार जैन
उम्र- 11 वर्ष
पता- धुलियान (प. बंगाल)
रुचि- खेलना, पढ़ना।

मो. मेराज
उम्र- 12 वर्ष
पता- जन्दाहा (बिहार)
रुचि- टी.वी. देखना, पढ़ना।

दिलीप कुमार गौड़
उम्र- 13 वर्ष
पता- बहराइच (उ.प्र.)
रुचि- पढ़ना, कम्प्यूटर चलाना।

राकेश राव
उम्र- 14 वर्ष
पता- देवली, पाली (राज.)
रुचि- पढ़ना, पेंटिंग।

मदन लाल भाटिया
उम्र- 13 वर्ष
पता- बाड़मेर (राज.)
रुचि- कम्प्यूटर चलाना, पढ़ना।

कुलदीप शर्मा
उम्र- 13 वर्ष
पता- जयपुर (राज.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

लोकेन्द्र शर्मा
उम्र- 11 वर्ष
पता- जयपुर (राज.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

अमन यादव
उम्र- 12 वर्ष
पता- मीरपुर, जोनपुर (उ.प्र.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

सोहन पुरोहित
उम्र- 13 वर्ष
पता-धौरीमन्ना, बाड़मेर (राज.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

विजय कुमार तिवारी
उम्र- 12 वर्ष
पता- कुशीनगर (उ.प्र.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

महेन्द्र पारख
उम्र- 13 वर्ष
पता- हरसाणी (राज.)
रुचि- सिंगिंग, खेलना, पढ़ना।

आदित्य श्रीवास्तव
उम्र- 12 वर्ष
पता- निधरिया, बलिया (उ.प्र.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

अंकिता गुप्ता
उम्र- 12 वर्ष
पता- बाछरेन, भरतपुर (राज.)
रुचि- पेंटिंग, टी.वी. देखना।

सत्यम् कुमार मौर्य
उम्र- 11 वर्ष
पता- बभनौटी (उ.प्र.)
रुचि- पढ़ना, क्रिकेट खेलना।

दीपक राठौड़
उम्र- 12 वर्ष
पता- बाड़मेर (राज.)
रुचि- संगीत सुनना, पेंटिंग।

चन्द्रांशु बरनवाल
उम्र- 13 वर्ष
पता- चम्पारण, बेतिया (बिहार)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

श्रवण पुरोहित
उम्र- 10 वर्ष
पता-बाड़मेर (राज.)
रुचि- कम्प्यूटर चलाना, घूमना।

डोलराज
उम्र- 12 वर्ष
पता- प्लानिंग कॉलोनी, बहराइच (उ.प्र.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

आदित्य कुमार जैन
उम्र- 9 वर्ष
पता- धुलियान (प.बंगाल)
रुचि- खेलना, पढ़ना।

हर्षित गुप्ता
उम्र- 11 वर्ष
पता- झुंझुनूं (राज.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

भोमाराम सेवर
उम्र- 13 वर्ष
पता- बाड़मेर (राज.)
रुचि- सेवा करना, पढ़ना।

शुभम् शर्मा
उम्र- 11 वर्ष
पता- मानसरोवर, जयपुर (राज.)
रुचि- पढ़ना, खेलना।

मुकेश कुमार
उम्र- 13 वर्ष
पता- हाजिपुरवा, सिवान (बिहार)
रुचि- पढ़ना, क्रिकेट खेलना।

जय किशोर जोशी
उम्र- 13 वर्ष
पता- डूंगरपुर (राज.)
रुचि- पढ़ना, सेवा करना।

अजित कुमार
उम्र- 12 वर्ष
पता- नैनपुरा, सिवान (बिहार)
रुचि- सेवा करना, पढ़ना।

उल्लू नहीं है उल्लू

वाइल्ड लाइफ

बच्चो, यह सब जानते हैं कि लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू होता है। लेकिन फिर भी दीपावली को उल्लू को नहीं पूजा जाता। इसके अलावा आमतौर पर उल्लू के बारे में लोगों में गलत ही धारणा रहती है। प्राचीन युग की अनेक मूर्तियां, चित्र और मुद्राएं हमारे पास उपलब्ध हैं, पर किसी में भी लक्ष्मी जी को उल्लू पर बैठे हुए नहीं पाया गया। तो फिर लक्ष्मी-वाहन के रूप में उल्लू को कब मान्यता दी गई।

एक पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण देवताओं की लक्ष्मी नष्ट हो गई थी। लेकिन देवताओं ने अपने परिश्रम से समुद्र मंथन के बाद लक्ष्मी को वापस प्राप्त किया, और उसी समय भगवान विष्णु के साथ उनका विवाह कर दिया गया। विष्णु की पत्नी के रूप में लक्ष्मी जी का वाहन पहले गरुड़ को ही माना गया है। बाद में धन की देवी के रूप में लक्ष्मी जी का पूजन आरम्भ हुआ तो इसके लिए लक्ष्मी जी को अपने अलग वाहन की जरूरत हुई। ऐसा वाहन, जो कि गरुड़ के समान तेजतर्रार और शिकार करने में भी निपुण हो। ये सब गुण उल्लू में थे।

भले ही उल्लू को मूर्खता का प्रतीक माना जाता हो, पर वास्तव में ऐसा है नहीं। यूनान और यूरोप के कई देशों में तो इसे बुद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह बहुत चतुर शिकारी होता है, इस योग्यता के कारण ही कुछ शिकारी इसे पालते हैं। उचित प्रशिक्षण मिलने पर उल्लू अपने मालिक के लिए शिकार करता है और फिर उसे लाकर अपने मालिक को दे देता है।

सामान्यतः उल्लू अपना शिकार रात के अंधेरे में ही करता है। दिन के तेज प्रकाश में इसकी आंखें चौंधिया जाती हैं, लेकिन हल्के प्रकाश में यह बखूबी देख सकता है। शिकार करने से पहले उल्लू अपने गले से तेज और डरावनी आवाज निकालता है। जिससे घोंसलों में बैठे पक्षी डरकर फड़फड़ाने लगते हैं। इसकी सुनने की शक्ति भी बहुत तेज होती है। इसलिए हल्की सी सरसराहट और फड़फड़ाहट को आसानी से सुन लेता है। इसके बाद यह अपनी तेज दृष्टि से शिकार को देख लेता है। शिकार का फड़फड़ाना सुनते ही यह तेजी से उस पर झपटता है और तुरंत शिकार कर लेता है। उल्लू के पंख रेशम से कोमल होते हैं। इसलिए शिकार के पास पहुंचने पर भी इनकी आवाज उनके कानों तक नहीं पहुंच पाती। यही कारण है कि उल्लू के शिकार को बचने के लिए पहले से कोई चेतावनी नहीं मिल पाती और वह अचानक ही अपने आप को उल्लू के पंजों में पाता है।

उल्लू अपने शिकार की ज्यादा चीरफाड़ नहीं करता। अगर शिकार का आकार ज्यादा बड़ा नहीं है, तो वह उसे सीधा ही निगल जाता है। अपने किसी शिकार से युद्ध की नौबत आने पर उल्लू बड़े साहस और हिम्मत से काम लेता है और अंत तक मैदान नहीं छोड़ता। हां, दिन में प्रकाश के कारण लड़ाई-झगड़े से बचने की कोशिश करता है। इसीलिए दिन में कौए इसे चोंच मार-मार कर भगा देते हैं।

इनसे सीखो

उल्लू

दिन के समय दिखाई देने पर भी यह न दिखने का अभिनय करके अपना समय गुजारता है। इसकी तेज दृष्टि से शिकार छिप नहीं पाता। पंखों को इस चपलता से चलाता है कि पास से गुजरने पर भी पता नहीं चल पाता। स्थिर दृष्टि इसकी एक और विशेषता है। गर्दन को चारों ओर फेर सकना एक अद्भुत विशेषता है। रात में देखना और उड़कर शिकार करने की विशेषता से ये कई हानिकारक कीड़ों को मारता है, जो रात में ही निकलते हैं।

सीख सकते हैं- अपनी योग्यता को समय पर ही उपयोग करना। सोच में स्थिरता, सजगता और चपलता के साथ लक्ष्य के प्रति प्रयास।

क्योंकि रात के अंधेरे में इसका सामना करने के लिए उनके लिए असम्भव है। दिन के प्रकाश में तो इस पर छोटे कंकर भी फेंके जाते हैं, तो ये उन्हें भी सहन कर लेता है।

उल्लू मांसाहारी होता है। यह सभी प्रकार के कीड़े-मकौड़ों को तो चट करता ही है, मेढक, छिपकली, गिरगिट, छछूंदर, खरगोश के छोटे बच्चे तथा वृक्षों पर रहने वाले छोटे पक्षियों को भी यह बड़े चाव से खाता है। सांप से तो इसकी शत्रुता है। देखते ही यह उसकी ओर लपकता है और उदरस्थ कर लेता है। चूहा इसके लिए स्वादिष्ट भोजन होता है। इसीलिए उल्लू को किसानों का मित्र माना जाता है। चूहों की खोज में तो यह अनाजों के गोदामों के पास जाकर बैठ जाता है।

उल्लू की आकृति कुछ-कुछ चील से मिलती है। इसके पंजे नुकीले और तीखे होते हैं, जिनसे यह अपने शत्रु पर आक्रमण करता है। इसकी आंखें बड़ी-बड़ी और गोल होती है। यह चेहरे के सामने की ओर होती है, दायीं या बायीं तरफ नहीं। इसके कान भी काफी बड़े होते हैं, जो सुनने की क्षमता को प्रकट करते हैं। इसकी गर्दन बहुत छोटी पर, काफी मुलायम होती है। यह अपनी गर्दन को 360 डिग्री तक यानी पूरी तरह पीठ की तरफ घुमा सकता है। उल्लू की आंखें स्थिर होती हैं, जिसे वह उन्हें इधर-उधर नहीं घुमा सकता। इसे जिधर भी देखना होता है, यह अपनी पूरी गर्दन ही सहजता से घुमाकर देख लेता है। उल्लू अपना घोंसला अक्सर पथरीली दरारों, खंडहरों या वीरान में खड़े वृक्षों के कोटरों में बनाता है। कुछ विशेष प्रजाति के उल्लू अपना घोंसला नहीं बनाते। वे अन्य पक्षियों के खाली घोंसलों पर कब्जा कर लेते हैं।

मादा उल्लू नर की तुलना में बड़े आकार की होती है। मादा एक बार में पांच-छह अण्डे देती है। विश्व में उल्लू की 150 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें सबसे बड़ा उल्लू *'ग्रेट ग्रे बॉउल'* होता है। यह लगभग 76 सेंटीमीटर का होता है। यह अमरीका में पाया जाता है। विश्व का सबसे छोटा उल्लू भी अमरीका में पाया जाता है। लगभग 15 सेंटीमीटर के आकार वाले इस उल्लू का नाम 'इल्फ आउल' है। भारत में पाया जाने वाला उल्लू है 'ब्राउन आउल' या 'भूरा उल्लू'। यह आकार में छोटा लगभग 9 इंच होता है। इसकी पीठ पर सफेद धब्बे और पेट पर धारियां होती हैं। ये उल्लू शाम के धुंधलके में किसी वीरान जंगल या बगीचे में एक कतार में बैठे देखे जा सकते हैं। चितकबरिया प्रकार के उल्लू भी हमारे यहां काफी संख्या में पाए जाते हैं। ये अक्सर बस्ती में रहना पसंद करते हैं। उल्लू की कुछ किस्में बड़ी रोचक होती हैं। सिंगहे नाम के उल्लू के कान सींग की तरह खड़े रहते हैं। इन्हीं में एक और किस्म है- पहाड़ी सिंगहा। पहाड़ी सिंगहा की विशेषता यह है कि उसका अपना कोई निश्चित रंग नहीं होता। जिस रंग की धरती पर वह निवास करता है, वैसा ही उसका रंग भी हो जाता है। भूरा सिंगहा उल्लू हमेशा अपने जोड़े के साथ रहता है। 'मत्स्य-उल्लू' प्रकार का उल्लू दिन के समय नदी किनारे वृक्ष पर रहता है और मछलियों का शिकार करता है। इसकी आकृति भी देखने में मछलियों की तरह होती है। अफ्रीका में उल्लू की ऐसी भी प्रजाति पाई जाती है, जो दिन में शिकार करती है और रात में आराम। उल्लू के संबंध में हमारे देश में अनेक प्रकार के भ्रम हैं। जैसे कि यह मूर्खता का प्रतीक है। कुछ लोगों का विचार है कि उल्लू कभी-कभी मकान की छत पर आकर बैठ जाता है और आदमी की आवाज में पुकारता है। लेकिन उल्लू का इंसान की आवाज बोलना असंभव है। इसी प्रकार उल्लू को अपशकुनी भी मानना मात्र भ्रम ही है।

इस प्रकार लक्ष्मी-वाहन उल्लू श्रेष्ठ होता है। वह किसानों का मित्र है तथा हानिकारक जीव जन्तुओं को खाकर वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखता है। उल्लू में ऐसा कोई अवगुण नहीं, जो उसे हमारे लिए घृणा के लायक बनाए।

-प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

मिजोरम का राज्य पशु

हूलक गिब्बन

भारत के उत्तर पूर्व में,
गिब्बन पाया जाता।
ऊंचे और घने वृक्षों पर,

यह आवास बनाता।
घने मुलायम बालों वाली,
इसकी सुन्दर काया।
पूंछहीन होने के कारण,
गिब्बन कपि कहलाया।
शाकाहारी कपि यह अपना,
फल से काम चलाता।
और कभी मन होता तो यह,
कीट-पतंगे खाता।
नर मादा से मिलकर अपना,
जोड़ा एक बनाता।
जीवन साथी बन जीवन भर,
उसका साथ निभाता।
शत्रु तेंदुआ, अजगर इसके,
इनसे तो बच जाता।
मगर मानव के द्वारा यह,
हर दम मारा जाता।

-डॉ. परशुराम शुक्ल

ज्ञान प्रतियोगिता

परखो ज्ञान पाओ इनाम

1. धन की देवी माना जाता है?
   (अ) लक्ष्मी जी को
   (ब) सरस्वती जी को
   (स) दुर्गा जी को
2. भगवान श्रीराम रहते थे?
   (अ) अयोध्या में
   (ब) लंका में
   (स) किष्किंधा में
3. भगवान शिव की पत्नी मानी जाती हैं?
   (अ) पार्वती जी
   (ब) तारामती जी
   (स) रिद्धी-सिद्धी
4. सीताजी के पति का नाम है?
   (अ) श्री राम
   (ब) श्री कृष्ण
   (स) श्री गणेश
5. विद्या की देवी मानी जाती है?
   (अ) सरस्वती जी
   (ब) लक्ष्मी जी
   (स) पार्वती जी

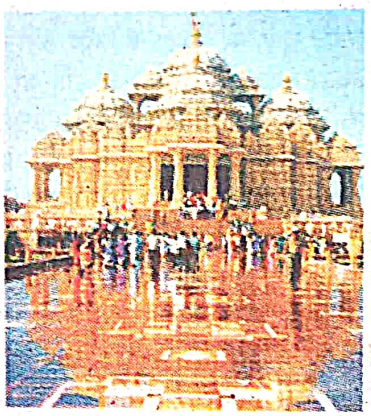

दिल्ली ☐ बंगलौर ☐

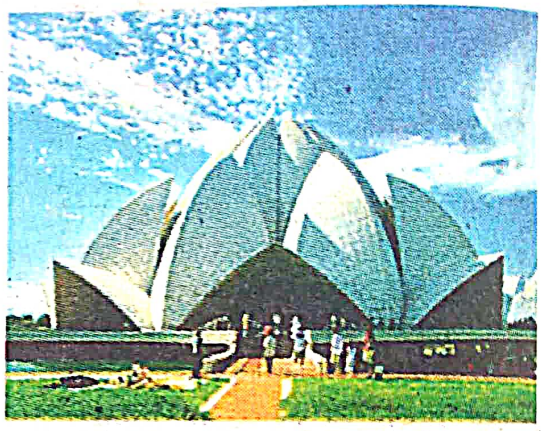

दिल्ली ☐ जयपुर ☐

मुंबई ☐ अमृतसर ☐

उदयपुर ☐ उड़ीसा ☐

ऊपर चार मंदिरों के चित्र दिए गए हैं। सही जगह अंकित करें।

ज्ञान प्रतियोगिता–217

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला..... राज्य.....

जीतिए आकर्षक पुरस्कार

सलोनी घड़ी (तीन)

पेन सेट (दो)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

1. अशि प्रकाश, चन्दौसी, मुरादाबाद (उ.प्र.)
2. कंवलजीत वर्मा, लखीसराय (बिहार)
3. विवेक कुमार, औरंगाबाद (बिहार)
4. वीरेन्द्र सिंह परिहार, अजमेर (राज.)
5. कुमारी चित्रा, कामरूप (असम)
6. सुभाष खिलेरी, मिठड़ा खुर्द-II, बाड़मेर (राज.)
7. ज्ञान प्रकाश सिंह, राजपुर, मिर्जापुर (उ.प्र.)
8. रविराज कुमार, नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण (बिहार)
9. अनुप्रवी गुप्ता, जयपुर (राज.)
10. मीकू राठी, विजयनगर, इन्दौर (म.प्र.)

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

सितम्बर- प्रथम 2008

सराहनीय प्रयास

1. सुधांशु कुमार, लालगंज, वैशाली (बिहार)
2. अग्रिम गुप्ता, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
3. गोसाईंदेव सारण, बायतु, बाड़मेर (राज.)
4. चिन्मय गोस्वामी, सीकर (राज.)
5. अभिषेक भट्ट, देहरादून (उत्तराखण्ड)
6. अर्पित आर्यन, हजारीबाग (झारखण्ड)
7. आकाश राज, कोटा (राज.)
8. हर्षित सोनी, अजमेर (राज.)
9. मोदब्बीर हुसैन, शाहपुर बरौनी, समस्तीपुर (बिहार)
10. सिमरन सिंह, अलीगंज (उ.प्र.)
11. हीना खुब्ले, दलानवाला, देहरादून (उत्तराखण्ड)
12. आसिफ अली, मुरादाबाद (उ.प्र.)
13. विनया त्रिवेदी, उदयपुर (राज.)
14. अर्पणा तृप्ति, कंकड़बाग, पटना (बिहार)
15. रविदास, पाली (राज.)
16. अनुभव बर्मन, वाराणसी (उ.प्र.)
17. हेमलता महावर, सवाई माधोपुर (राज.)
18. दीक्षादीप, गंगवारा, दरभंगा (बिहार)
19. ज्योति छाबड़ा, चास, बोकारो (झारखण्ड)
20. नरेन्द्र कुमार जांगिड़, बबाई, झुंझुनूं (राज.)

उत्तर

1. बाल गंगाधर तिलक
2. चीन
3. चौबीस
4. स्वतंत्रता दिवस
5. सावन
6. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
7. लक्ष्मी बाई
8. सरदार पटेल
9. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

ज्ञान प्रतियोगिता 213 का परिणाम

सलोनी घड़ी (तीन)

1. अंजना माली, सिंगौली, नीमच [redacted]
2. ऋषि शुक्ला, इलाहाबाद (उ.प्र.)
3. मास्टर रानू पाण्डेय, गढ़हरा, बेगूसराय (बिहार)

पेन (दो)

4. कृष्णपाल देवड़ा, बसन्तगढ़, सिरोही (राज.)
5. आकाश मल्होत्रा, प्रेमनगर, जबलपुर (म.प्र.)

जिन्दगी की पहचान

बच्चों ने कहा- जिन्दगी एक खिलौना है।
व्यापारियों ने कहा- जिन्दगी एक व्यापार है।
ज्योतिषियों ने कहा- जिन्दगी एक सौभाग्य है।
रोगियों ने कहा- जिन्दगी एक अभिशाप है।
बेकारों ने कहा- जिन्दगी एक सपना है।
किसानों ने कहा- जिन्दगी एक परिश्रम है।
विद्यार्थियों ने कहा- जिन्दगी एक परीक्षा है।
सैनिकों ने कहा- जिन्दगी एक सच्ची देशभक्ति है।
सामान्य आदमी ने कहा- जिन्दगी एक संघर्ष है।
पेड़-पौधों ने कहा- जिन्दगी परोपकार है।
कंजूसों ने कहा- जिन्दगी धन से भरा खजाना है।

-सौरभ सुनील, सिवान (बिहार)

फुलवारी

घरद्वारे आंगन चौबारे
खिली हुई है फुलवारी।
फूल महकते इसके सुंदर
महक रही है हर क्यारी।
रंग बिरंगी होती धरती
मन को हरदम भाती है।
सुदंर वातावरण बना है
बुलबुल गाना गाती है।

-अनमोल शाक्य
मैनपुरी (उ.प्र.)

इंद्र का आभार

कहानी

बहुत पुरानी बात है। एक बार पृथ्वी पर वर्षा नहीं हुई। बिना पानी के चारों ओर हाहाकार मच गया। लोग पानी के लिए तरसने लगे। छोटे जीव भी परेशान थे। एक मेढक ने जब यह सब देखा तो विचार किया कि क्यों न वर्षा के देवता इंद्र के पास जाया जाए। बस फिर क्या था। मेढक उछलता-कूदता चल पड़ा इंद्र देव से मिलने।

वह कुछ ही दूर पहुंचा था कि रास्ते में बिच्छू मिल गया। बोला, 'मेढक भैया कहां चल दिए?' मेढक ने पूरी बात बताई। बिच्छू भला कैसे पीछे रह सकता था। वह भी मेढक के साथ चल दिया। मेढक ओर बिच्छू कुछ ही दूर चले थे कि आगे आकर उन्हें मधुमक्खी, भेड़िया, मोर रीछ व रीछ भी मिले। पानी की तो सभी को जरूरत होती है। इसलिए सभी इस पुण्य के काम में मेढक के साथ चल दिए।

ऊंचे-ऊंचे पहाड़, गहरी खाइयां, जंगल पार करते हुए भूख-प्यास सहते, आखिर एक दिन वे सभी इंद्र लोक पहुंच गए। सभी साथियों को छिप जाने का कहकर मेढक इंद्र के महल के दरवाजे पर लगे घंटे बजाने लगा।

आवाज सुनते ही इंद्र देव का सेवक बाहर आकर बोला, 'ये घंटा किसने बजाया?' मेढक उछलकर बोला, 'मैं पृथ्वी लोक से आया हूं। जाओ इंद्र देव को कह दो कि मैं पानी के बारे में चर्चा करने आया हूं।' एक छोटे से प्राणी से ऐसी बातें सुन सेवक को हंसी आ गई। अंदर आकर उसने हंसते हुए जब इंद्र देव से यह बात कही तो वे भी मुस्करा उठे और बोले, 'जाओ नाग को बाहर भेज दो। कहना उसका आहार तैयार है।' नाग दरवाजे के पास पहुंचा। जैसे ही उसने मेढक को खाने की कोशिश की वैसे ही पीछे से मोर निकल पड़ा और एक ही झटके में नाग का काम खत्म कर दिया।

इंद्र को जब पता चला तो उन्होंने अपने कुत्तों को भेज दिया। पर मेढक के साथ आए भेड़िए और रीछ ने कुत्तों पर वार कर उन्हें मार दिया।

इंद्र चिंतित हुए। उन्होंने गुरु बृहस्पति से सलाह मांगी। बृहस्पति बोले, 'इंद्र देव! कोई दूर से किसी अच्छे काम के लिए तुम्हारे पास आया है, तो उससे मिलकर उसकी बात सुनो और मदद करो।'

आखिरकार मेढक को अंदर बुलवाया गया। इंद्र देवता ने मेढक की बात मान ली और अपने बादलों को बारिश के आदेश दे दिए।

मेढक खुशी से बोला, 'इंद्र देव! आपने हम पर जो उपकार किया है, उसका बदला मैं एक छोटा-सा जीव भला कैसे चुका पाऊंगा। पर एक बात जरूर है, जब भी आप जल बरसाएंगे, मैं आपको धन्यवाद जरूर दूंगा।' कहा जाता है कि तभी से जब भी पानी बरसता है तब मेढक टर्र-टर्र की भाषा में इंद्र देव का आभार प्रकट करता है।

-सुमित बाफना, जयपुर (राज.)

पेंटब्रश

सचिन कुमार भांभू,
गंगापोल (राज.)

बिट्टू कुमार
कमटकुआं (बिहार)

आशिमा माथुर
जयपुर (राज.)

जरा सा....

जरा सा ज्ञान मिला...
उपदेश की भाषा सीख ली।
जरा सा सम्मान मिला.....
पागल हो गए।
जरा सा अधिकार मिला.....
दुनिया को तबाह कर दिया।
जरा सा यश मिला.....
दुनिया पर हंसने लगे।

–बबली चौरसिया,
भलुअनी, देवरिया (उ.प्र.)

सेब

सेब सभी को भाता है
रोगी खाकर मस्त हो जाता है।
हर मौसम में यह मिल जाता
सेब सभी को खूब भाता।
रोगी को निरोग बनाता
विटामिन से ये है भरा।
सालों तक जो खाता है
वह शक्तिशाली बन जाता है।
स– से सेहत, ब– से बनाओ
यही इसका मतलब है।

–मो. राशिद, इमरांव,
बक्सर (बिहार)

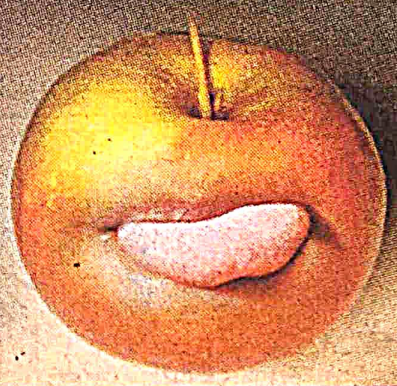

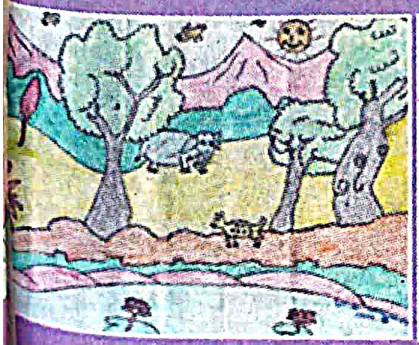

सत्यम कुमार मौर्य
बभनौटी (उ.प्र.)

फ्रैंक ब्रॉल्टर
लखनऊ (उ.प्र.)

लिटिल स्टार

श्रेया शर्मा

मूवी 'थोड़ा प्यार थोड़ा मैजिक' में अदिति की भूमिका निभाने वाली लिटिल स्टार का असली नाम है, श्रेया शर्मा। उसने सैफ अली खान और रानी मुखर्जी के साथ जीवंत अभिनय करके दर्शकों को खूब प्रभावित किया है। वह कहती है, 'बच्चों के लिए कम ही फिल्में बनती हैं। मैं बिग स्टार्स के साथ काम करके बहुत खुश हूं। रानी दीदी ने मेरी हौसला अफजाई की। आउटडोर शूटिंग में बहुत मजा आया।'

कुणाल कोहली प्रोडक्शन के बैनर तले उन्हीं द्वारा निर्देशित व यश राज फिल्म्स की इस प्रस्तुति में बेबी श्रेया शर्मा ने ऐसी अनाथ बच्ची के किरदार को निभाया है, जिसके पिता सड़क दुर्घटना में मर जाते हैं। यह उसकी पहली बड़ी रिलीज फिल्म है। सिल्वर स्क्रीन पर उसकी शुरुआत सफल रही है।

श्रेया शर्मा छोटी उम्र से धारावाहिकों में अभिनय करती आ रही है। गुलशन सचदेव के सीरियल 'कन्हैया' में उसने टाइटल रोल किया था। 'कसौटी', 'झूठ बोले कौआ काटे', 'तीन बहूरानियां' व 'बिल्लू' में उसने विविध किरदार निभाए हैं। शाहरुख खान से सम्बद्ध सीरियल 'क्या आप पांचवी पास से तेज हैं' में श्रेया ने दर्शकों से सराहना बटोरी है।

अब वह इतनी लोकप्रिय होती जा रही है कि एड-मेकर्स उसे एड-फिल्म्स में लेते जा रहे हैं। वह एशियन पेंट्स, निरमा सुपर, क्लिनिक प्लस, रेड लेबल टी, पेप्सोडेंट की रोल मॉडल बनकर आ रही है।

'थोड़ा प्यार थोड़ा मैजिक' के बाद दर्शक श्रेया शर्मा को अजय देवगन व भूमिका के साथ फिल्म 'बेनाम' में अभिनय करते देखेंगे। इसके संगीत निर्देशक हिमेश रेशमिया हैं। यह सिंघा मूवीज की प्रस्तुति है। डायरेक्टर अनीस बज़्मी हैं।

श्रेया शर्मा अभी 5 वीं कक्षा में पढ़ती है। वह पढ़ाई में बहुत होशियार है। स्कूल स्टाफ उससे बहुत खुश है। वह स्कूल का नाम रोशन कर रही है।

–राजू क़ादरी रियाज़

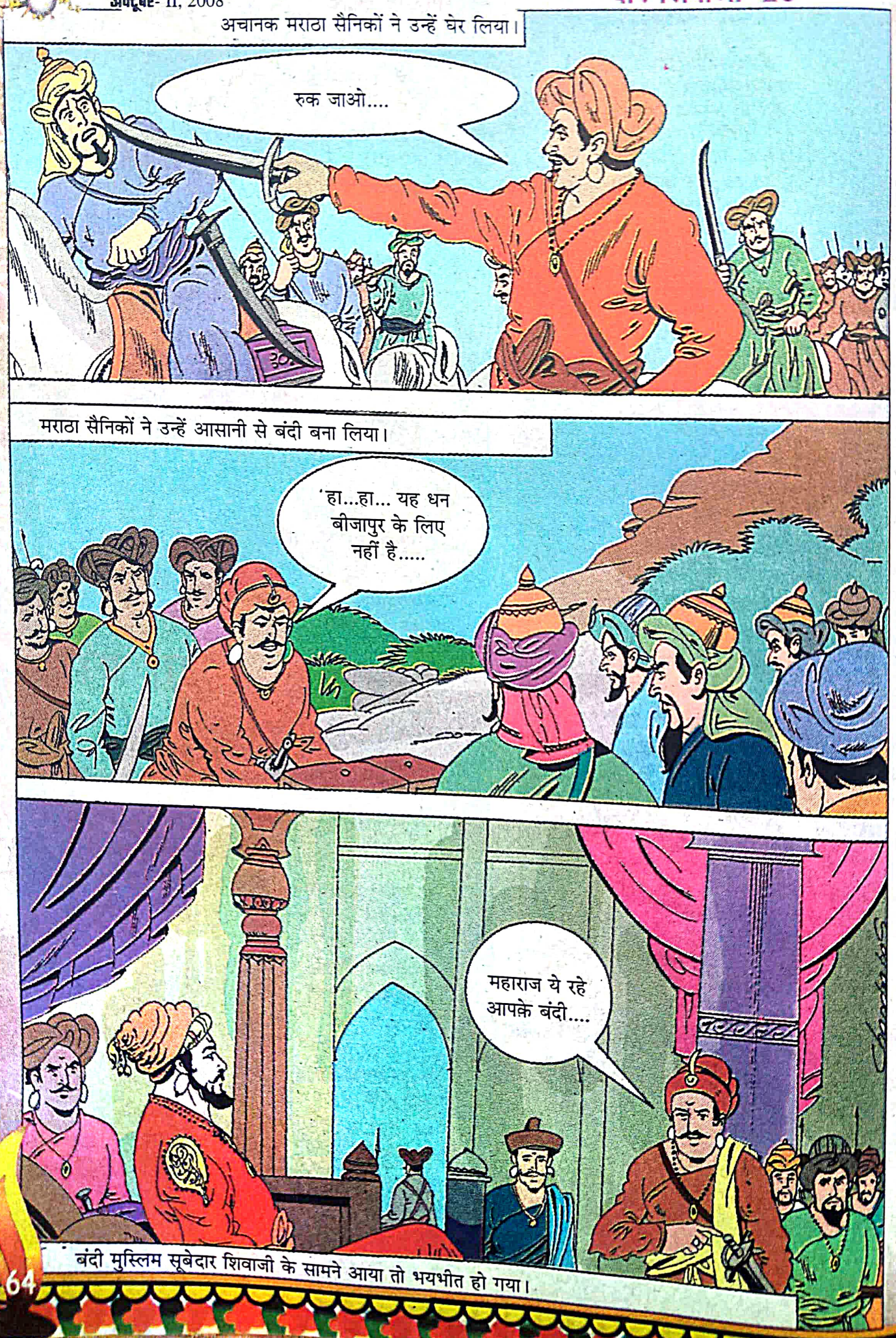
अचानक मराठा सैनिकों ने उन्हें घेर लिया।
रुक जाओ....
मराठा सैनिकों ने उन्हें आसानी से बंदी बना लिया।
'हा...हा... यह धन बीजापुर के लिए नहीं है.....
महाराज ये रहे आपके बंदी....
बंदी मुस्लिम सूबेदार शिवाजी के सामने आया तो भयभीत हो गया।

शांत शिवाजी अचानक बोले....
इन्हें मुक्त कर दो....
शिवाजी के दरबारी और सहयोगी चकित रह गए....
ये आप क्या कह रहे हैं महाराज!!
यह सूबेदार तो अपनी भूमिका निभा रहा है....
मुक्त हुआ मुस्लिम सूबेदार अब खुश था।
महाराज आप वाकई महान हैं, पर....
बोलो... बोलो...
(अगले अंक में जारी)

कैसा लगा

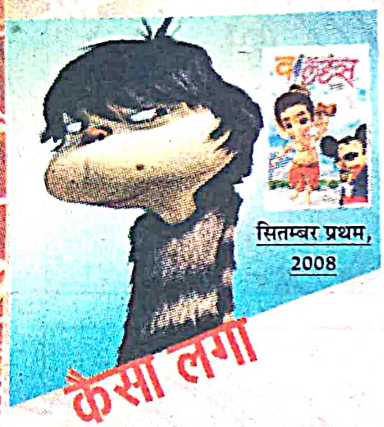

मैं बालहंस का नियमित पाठक हूं। इस अंक में *गुरु बिन ज्ञान कहां* अच्छा लगा। कहानियां, चित्रकथाएं, स्थायी कॉलम बहुत अच्छे लगे। मेरे परिवार की ओर से बालहंस टीम को ढेर सारी शुभकामनाएं।

-**हिमांशु शर्मा**, अजमेर (राज.)

इस अंक में सैर सपाटा के अंतर्गत केरल की जानकारी, बालहंस न्यूज, अंतरिक्ष प्रक्षेपण, नॉलेज बैंक, वाइल्ड लाइफ बहुत अच्छे लगे। यह अंक जानकारियों का खजाना था।

-**शिवमोहन यादव**, कृपालपुर (उ.प्र.)

मैं बालहंस की कई वर्षों से नियमित पाठिका हूं। इसमें प्रकाशित कहानियां, चित्रकथाएं, गुदगुदी, नॉलेज बैंक सहित सभी रचनाएं अच्छी लगती हैं। यह रोचक और ज्ञानवर्द्धक मैगजीन है।

-**आरती शर्मा**, भरतपुर (राज.)

यह अंक ज्ञानवर्द्धक-मनोरंजक लगा। कहानियां, गुदगुदी, बालहंस न्यूज, अकबर-बीरबल, वीर शिवाजी, मेरा बचपन अच्छे लगे।

-**सर्वेश कुमार**, वारिसलीगंज (बिहार)

बालहंस की महिमा कैसे बखाणुं, दो टूक बातां में गागर में सागर जाणुं। यह अंक बहुत पसंद आया। अकबर-बीरबल, कहानियां, क्रेजी किया रे, डॉट-टू-डॉट, वीर शिवाजी सभी कुछ अच्छा लगा। कम्प्यूटर से जुड़ी जानकारियां भी दें।

-**दिव्या सैनी**, नागौर (राज.)

अंक दर अंक बालहंस सर्वोत्कृष्टता को छूता जा रहा है। समय-समय पर विशेषांक प्रकाशित करना भी इस पत्रिका की अपनी विशेषता है। इसके अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण अवसरों की संदर्भ सामग्री को समेटना बालहंस को बखूबी आता है। यह अंक पूर्ववर्ती अंकों की भांति श्रेयस्कर व दिलचस्प रहा है, जिसे पढ़कर अपूर्व आनन्द मिला।

-**सुरेश बुंदेल**, टोंक (राज.)

इनके पत्र भी मिले-

-**मुदित सिंघल**, आबूरोड (राज.)
-**उज्ज्वल ओझा**, गोपालगंज (बिहार)
-**ओम प्रकाश, पारस जांगिड़**, बाड़मेर (राज.)
-**सद्दाम अफरीदी**, औरंगाबाद (बिहार)
-**आदित्य श्रीवास्तव**, बलिया (उ.प्र.)
-**श्रवण मेघवाल**, डोली, जोधपुर (राज.)
-**अनिल बिश्नोई**, जैसलमेर (राज.)
-**विश्वनाथ प्रसाद केशरी**, जमुई (बिहार)
-**उमेश चंद्र सिरसवारी**, चन्दौसी (उ.प्र.)
-**राजेन्द्र गोयल**, बाड़मेर (राज.)

वर्ग पहेली का उत्तर

■	■	चौ[1]	■	क[2]	र्ण	■
पा[3]	■	पा[4]	द	री	■	■
प[5]	रा[6]	या	■	ब[7]	गि[8]	या
■	ज	■	■	■	र	■
ह[9]	र्षि	त[10]	■	मु[11]	ह	र[12]
■	■	रा[13]	क्ष	स	■	ग
■	वा[14]	जू	■	का	■	■

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (300/-रुपए)..... वार्षिक (150/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (75/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।
फोनः **0141-3005825**

राशि इस पते पर भेजें-
बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
ई-5, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 053

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक प्रकाशक नीहार कोठारी द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रेस, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र / केसरगढ़,जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004 से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक: गुलाब कोठारी

बालहंस डाक पंजीयन संख्या -RJ/JPC/FN-080/2006-08 आर.एन.आई.नं. 46292/86
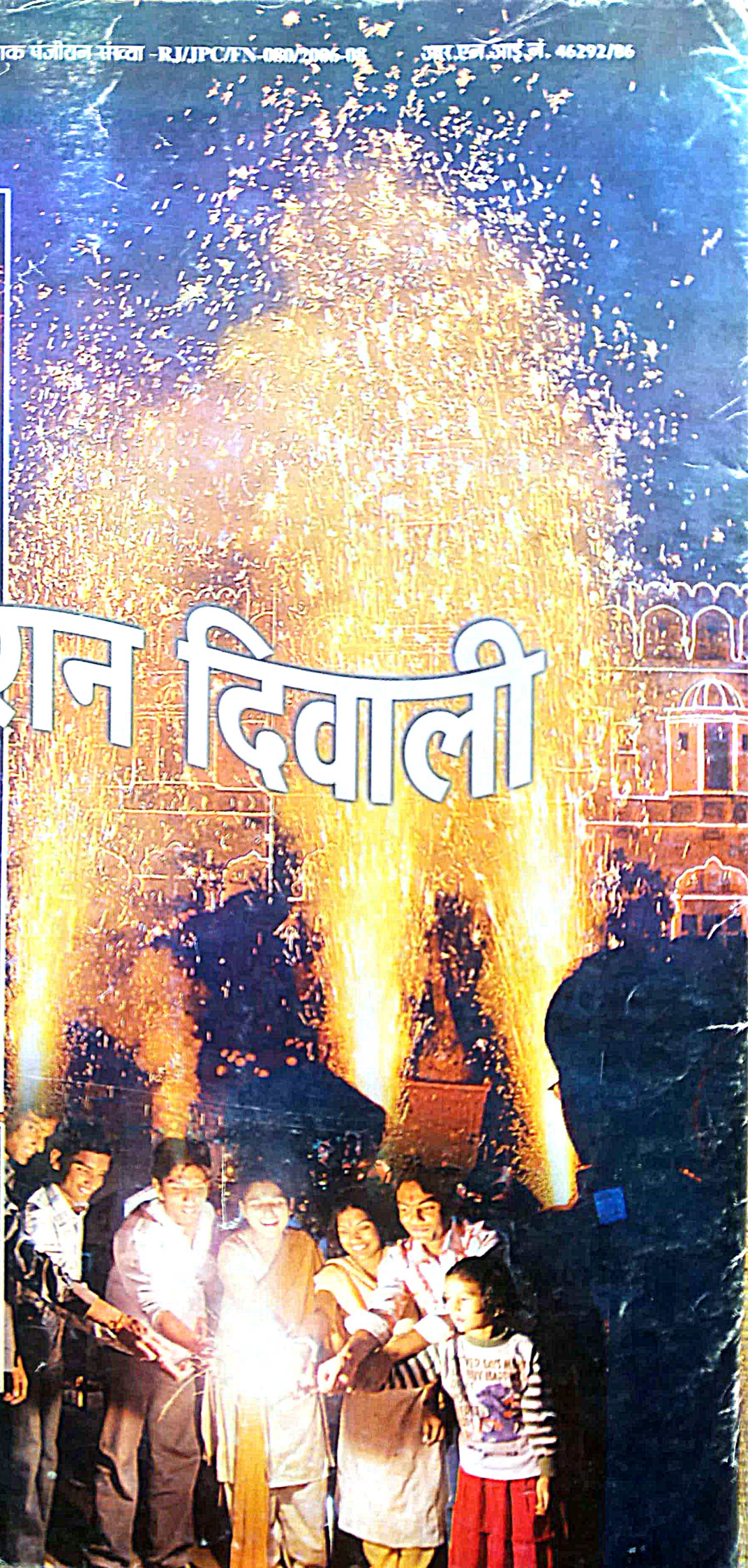
रोशन दिवाली